

# YOGVĀSISHTA

PUBLISHED BY

MR. JAIRĀJBHOY MANJIBHOY,

Chapters I & II

---

## योगवासिष्ठ

भाग १

मीस्टर जैराजभाई मनोजभाईये

३१ कोरवाड रोड, मुंबई, महाराष्ट्र  
सुभाषभाई, २१

कृतीपत्र प्रेस जापानाभां छपावो.

संवत् १९१६—सन १८६३.

---

REGISTERED UNDER ACT XX OF 1947

---

BOMBAY

PRINTED AT THE UNION PRESS

1863.

*The Right of Translation is reserved*



હાથના જુવાન વિદ્યાર્થીઓ વાંચી, તેમાંના ગુણુ દોષ સોધી તેપર ઘટતી ઘીલા કરે, અને આપણા લોકોના મનપર કોઈ કાળના ચુસ્ત ધ્યેષા પેહમોને દુર કરે; અને તે અંધ કર્તાઓ જે, સુવિચારના તથા ઉત્કૃષ્ટ છુદ્ધિના હોય, અને તેઓના વિચાર આ કાળના વિદ્વાન લોકોને ધણા નાદુરસ્ત ન લાગતા હોય, તો તેઓના નામ અમર રહે.

આ ધોમપારસિદ્ધ ગ્રંથ ૫૭૦ મ્હોટો છે, અને તેને વરિષ્ટકૃષ્ણવિ શંકરજી બાપામાં રચીને, એના શિષ્ય રામચન્દ્રજીને કહી રાંબળ જાવિયો, હતો. એ આખા ગ્રંથના રસોક બગીરા હજાર છે. એના છ પ્રકરણમાં વિભાગ કીધા છે, તે આ પ્રમાણે ૧ વૈરાગ્ય પ્રકરણ, ૨ બુબુક્ષ પ્રકરણ, ૩ ઉત્પત્તિ પ્રકરણ, ૪ સ્થિતિ પ્રકરણ, ૫ ઉપસમ પ્રકરણ, અને ૬ નિર્વાણ પ્રકરણ. એ પ્રકરણોનું હિન્દુસ્તાનીમાં બાપાન્તર કોણે કીધું તે કંઈ માધુમ પડ્યું નથી. આમાના પેહલાં અને બિન્ન પ્રકરણને મેં છપાવી પ્રસિદ્ધ કીધાં છે. અસલ એ બે પ્રકરણો બાજબોધ લિપીમાં હતાં; પણ હાલ તે લિપીમાં છપાવી પ્રસિદ્ધ કરવાથી, ધણા બરા એ લિપીના નબળાઈતા લોકોના ઉપયોગમાં નહીં આવે; એટલા માટે, એ પ્રકરણોની લિપી વતરોગે, બીજે તેમાં જરાપણ વધારો ઘટારો કીધા વગર, મેં તેને ગુજરાતી લિપીમાં પ્રસિદ્ધ કર્યાં છે. આ ગ્રંથ છપાવતી વખતે મ્હને કેટલીક કિમતી મદત મારા મિત્ર ડાક્ટર ધીરજીરામ રામપતરામ પાઠેથી મળી છે, તેને સાચું તેમનો મોહોટો ઉપકાર માનુ છું. મેવટે, એ ગ્રંથમાં મ્હારી તરફથી કંઈ દોષ રહેલા હોય તો સર્વ સન્નનોયે કૃપા કરી, તેઓને સુધારીને, વાચવો એવી મ્હારી તેઓને વિનંતી છે.

મુંબઈ તારીખ ૧ ]  
જુલાઈ મને ૧૮૯૩.)

જેરાળમાઈ મનજીભાઈ.

# अनुक्रमिका.

## वैराग्य प्रकरण.

सर्वाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
१	उपागम वर्णन	१
२	दीर्घपात्रा वर्णन	११
३	विशामिनागमन वर्णन	१६
४	विशामिनेरुण वर्णन	२२
५	दशयोजित वर्णन	२५
६	गमायगुण वर्णन	२८
७	गमिणु वगम वर्णन	३०
८	लक्ष्मी निरस्कार वर्णन	४१
९	भसाय मुष्म निषेध वर्णन	४४
१०	अलक्ष्मी दुरारा वर्णन	४७
११	चित्त दौगन्ध वर्णन	५०
१२	तृष्णा गार्डी वर्णन	५४
१३	द्वैत नैराश वर्णन	५९
१४	जाणाम्भ्या वर्णन	६८
१५	गुणा गार्डी वर्णन	७१
१६	श्री दुरारा वर्णन	७७
१७	नग अवस्थानिरूपण	८२
१८	ज्ञान वृत्तानिरूपण	१

सर्वांग	विषय	पृष्ठांक
१९	ब्राह्म विभास वर्णन .....	९०
२०	काल विभास वर्णन .....	९१
२१	प्राण विभास वर्णन .....	९२
२२	सर्व पदार्थाभाव वर्णन .....	९७
२३	व्यगद्विपर्यय वर्णन .....	१०२
२४	सर्वांत प्रतिपादन वर्णन .....	१०६
२५	पैराग प्रयोजन वर्णन .....	१०८
२६	अनन्य भाग दर्शन .....	१११
२७	द्वैत सभास वर्णन .....	११३
२८	त्रुति सभास वर्णन .....	११५

### भुमुदु प्रकरण.

१	शुद्ध निर्वाण वर्णन .....	११०
२	विश्वामित्रोपदेश वर्णन .....	१२२
३	असंख्य सृष्टापत्ति प्रतिपादन .....	१२५
४	पुरुषार्थोपक्रम वर्णन .....	१२८
५	पुरुषार्थ वर्णन .....	१३०
६	पुरुषार्थ वर्णन .....	१३४
७	पुरुषार्थ उपमा वर्णन .....	१३७
८	५०० पुरुषार्थ वर्णन .....	१४१
९	५०० पुरुषार्थ वर्णन .....	१४३
१०	वशिष्टोत्पत्ति तथा वशिष्टोपदेशा गमन वर्णन ..	१४७
११	वशिष्टोपदेश वर्णन .....	१५१

सर्वांग	विषय	पृष्ठांक
१२.	वशिष्टोपदेश उच्यते .....	१५८
१३	सुमतिरूपम् .....	१६२
१४	विचारनिरूपणम् .....	१७०
१५	संगोपनिरूपणम् .....	१७७
१६	साधसंगनिरूपणम् .....	१७९
१७	षट् प्रकरणेषु विवरणम् .....	१८३
१८	दृष्टान्त प्रमाणेषु वर्णनम् .....	१८८
१९	आत्म प्राप्ति वर्णनम् .....	१९७

# योगवासिष्ठ.

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

अथ श्री योगवाशिष्ठे वैराग प्रकरणलिप्यते.

मत् सित् आनंद रूप जे आत्मा हे तिनको नमस्कार  
हे. मो कैमा हे असते यह राय जासत हे, अइ अस  
जिये यह सर्व सीत होत हे, अइ अस जिये यह राय रियत  
हे, तिस सत्य आत्माको नमस्कार हे. साता, जेय, दृष्टा,  
दर्शन, दृश्य, कर्ता, करण, क्रिया, अमक सिद्ध होता हे, जेमा  
जे ज्ञान रूप आत्मा हे तिसको नमस्कार हे. अस आ  
नंद के समुद्र के कलसो मपूर्ण विध आनंदवान् हे; अइ  
अम आनंद करि सर्व अव अवते हे, तिस आनंद आ  
त्माको नमस्कार हे. जोई अके सुतिरुचन अगस्तका सिध  
होत जया, तिमके मनमें अके सराय उन्नति हुआ, तिसको  
निवृत्ति करनेके अर्थ अगस्त मुनिके आत्मको गभन किया.  
जय कर जिधि संसुक्त प्रनाम करि रियत जया; अगे नसना  
जावसो प्रम करने जगा.

सुतिरुचनोवाच. हे जगवन्! सर्व तत्त्व, सर्व साम्राजे  
जाता, अके मंशय मुनको हे, सो प्रम रूप करके निवृत्त को.  
जे मोक्षका कारण कर्म हे, के जान हे, के घेनो हे, पाते जे  
मोक्षका कारण होय मो कहे.

अगस्त्योवाच, हे श्रद्धाएव! केवल कर्म मोक्षकाकारेण नही, और केवल ज्ञानते नि मोक्ष प्राप्त नहि होता. दोनों करके मोक्षकी प्राप्ति होती है. कर्म करके अंतःकरण शुद्ध होता है. मोक्ष नहि होता. अरु अंतःकरण शुद्धि बिना, केवल ज्ञानते नि मुक्ति नहि होती. अर्थ यह जो शास्त्रका तात्पर्य ज्ञानका निश्चय, अंतःकरण शुद्धि हुअे जीवा ज्ञानकी स्थिति नहि होती. ताते दोनों कर मोक्षकी सिद्धि होती है. कर्म करके प्रथम अंतःकरण शुद्धि होती है. अहुरि ज्ञान उपजता है. तब मोक्षकी सिद्धि होती है. जैसे दोनों पांख करके पंखी आकाश मारमको मुजिनसो उडता है, तैसे कर्म अरु ज्ञान दोनों कर मोक्ष सिद्ध होता है. हे श्रद्धाएव! इस अर्थके अनुसार अेक पुरातन इतिहास है, सो तुं जपन कर.

अेक राजा नाम श्राद्धन अग्निषेपका पुत्र था. मो सुइके निहत्त बरष इर आर अेद अर अरु सहित अध्यायन इरत जवा. अध्यायन करके घरको आपत जया. और कर्मते गहित होय इर मूष गहा. अर्थ यह जो संराय प्राप्त होय कर्महिते गहित जया. तब पिताने देया जे यह कर्मते गहित होय इर स्थित जया है. अेमा देयके इस प्रकार कहत जया.

अग्निषेपोवाच. हे पुत्र! कर्मकी पाठना ज्यों नहि कर्ता. और तुं कर्मके अरुनेते सिद्धताके केमें प्राप्त होवेगा. असाकर तुं कर्मते गहित हुआहे, सो करन कहिहै.

श्राद्धोवाच. हे पिताशु! अेक संराय मुजको उपज हुआ है. जिस करके में कर्मते मूष गहाहो, मो जपन करो. मन्ते अेक हो कहै है, जे जपन जम उपजा रहे तब जम कर्मको करेगा. जे अग्नि होयार्थके कर्म हेयो इरताई



रहे. और और और कहा है, जो धन इरिक् मोक्ष होता नांही, और कर्म करेके मोक्ष होत नांही, और पुत्रादिके कर्म मोक्ष होत नांही, केवल त्याग मोक्ष होता है, धन दोनों विरि मुक्तो का उत्तम्य है, यह मंत्राय है मो वृम इया करे निवृत्त करो, जो इया उत्तम्य है.

अग्निहोत्राय. हे सुनिश्चन! अग्निहोत्र धारतने पिता जो कहा; तप निश्चका जयन शून अग्निहोत्र उहत जया.

अग्निहोत्राय. हे पुत्रा! अग्निहोत्र मुक्तो वृं जयन कर. जो पहिले कृष्ण है, निश्चको शून कर कृष्णि धर्म, आगे जो तेरी धर्मि होय सोई करनां. अग्निहोत्र नाम अक्षरा हती, सो जेती कछु अक्षरा दुती, निश्चरि उ तमयी. जो अग्निहोत्र हिमाचलके शिखर पर जेयी. जो हिमाचल पर्वत डेसा है, सो, जो जमना करेके जयन जो हृदये निश्चो; जो पाये. तहां देवता अग्निहोत्रे गन; अक्षरा के साथ हीडा करते है. और डेसा है. जहां ग गच्छका प्रवाह लहरी देत जया आवत है. जो गंगा डेसीके जो महा परिव जल है अक्षरा अग्निहोत्रे शिखरपर सुश्चि अक्षरा जेयी. निश्चो धर्मि इत अतिरिक्ते जया आ वत देया. जल निकट आया तप अक्षराके कहा. अहो सोभाय देवता! वृं देवगनमे अहो वृं कहाते आया, और यहां जयना, सो इया कर्म कहिदे.

देवतोवाच. हे सुभद्रो तेने पुछया है जो जयन कर. अग्निहोत्रे अग्निहोत्रे राक्षसिधा पाने जयने पुत्रको राज दे कर, जैराग सिधा, संपूरन विरपोंकी अग्निहोत्रे त्याग करिक्, अग्निहोत्रे भर्तमे जयन कर तप करन सागा, अग्निहोत्रे धर्मात्मा

था, तिसके साथ मेरा ओक डारण था सो कार्य करके मैं अप्प  
 छंद्रपास गया जतहों. तिसकामें दूतहों. संपूरन वृत्तांत  
 निवेदन करनेको मलाहों.

आभरोवाय. हे भगवन्! वृत्तांत जैनसा हे. मोडों  
 सो कहे. मेरेको तुं अति प्रिय हे, यह जंत कर पुछती हों.  
 ओर जे महा पुरुष हे तिनसों कोछि प्रसन्न करता हे, तज  
 लोकेगते रहित होकर उचर कहता हे, तागें तुं इहिदे.

देवदूतोवाय. हे भद्रो! जे वृत्तांत हे सो श्रुंत. विस्तार  
 करके मैं तुंको कहता हों. उह जे राजा गंधमादन पर्वतमें  
 तप करने लागा, सो अजा तप जिया. तज देवताके राजा  
 जे छंद्र हे, तिस मुजको जोषाय कर आसा करी जे, हे  
 दूता तुं गंधमादन पर्वतमें जा, ओर विमान, अप्सरा,  
 नाना प्रकारकी सामग्री, गंधर्व, षड्र, सिद्ध, दिनर, ताण,  
 मृदंग, आदि वाद्यज, संग ले जा. ओर गंधमादन पर्वत  
 केसा हे, जे नाना प्रकारकी लता वृक्ष करके पूरनहे, तहां  
 जवठे राजाको विमान पर लेझावके, छहां ल्याव. हे सुंदरी!  
 जज छंद्रने ऐसा कहा. तज मे विमान अरु सामग्री स-  
 हित तहां आया. अरु राजाको कहा हे राजन् तरे डारन  
 विमान ले आया हों, तापर जेठके तुं स्वर्गको गय, ओर  
 देवतान के लोग जोशु. जज में जेमें कहा तज मेरा जयन  
 श्रुंत कर राजा जोलत जया.

राजोवाय. हे देवदूत! प्रथम स्वर्गमें वृत्तांत तुं मुजको  
 कह. जे तेरे स्वर्गमें रोप कहा अरु श्रुत कहा हे, तिनको श्रुंतके  
 में हृदय में निभारों, पाउ जे मेरी छंछा होयेगी तो आजिगा.

देवदूतोवाय. हे राजन्! स्वर्गमें जे दिव्य लोगहे, सो

स्वर्ग जड़े पुन्यसों छुव पाता है. जे जड़े पु यवारे होत है  
 मो उत्तम सुख स्वर्गसों पाता है. जे मध्यम पुन्य वारे  
 है सो मध्यम सुख स्वर्गसों पाता है. अरु अनिट पुन्य  
 वारे है सो अनिट सुख स्वर्गसों पाता है. यह तो गुन  
 स्वर्गमें है सो तोकों कहा है. ओर स्वर्गके जे तोर है सो  
 गुन है राजनू। जो आपनो ब्रह्मि जेठे द्रिष्ट आवते है,  
 अरु उत्तम सुख भुजते है तिनको देण्डे तापकी उपची  
 होती है, को जे उनकी उदृष्टता सही नही जती है.  
 अरु जे जोध आपने समान सुख भुजते है तिनको दे  
 ण्डे कोच उपगत है. जे जेरे समान ओ जेठे है अरु  
 जे आपनो नीयें जेठे है, जे अनिट पु यवारे, तिनको देण्डे  
 आपको अभिमान उपगत है. जे में धनते अटहों ओर  
 अरु ओरभी होत है जे जण उसके पुन्य छीन होते है,  
 तम निसि ज्ञानमें धसतों मृत्यु लोकमें गिराव देते है अरु  
 छीनभी रहन दते नही. हे राजन! धहि जे तोर कहे मो  
 स्वर्गमें है. जो तेनें पुछा मो तेनें गुन अरु तोर कहा  
 है जेठो जण धस प्रकार गणको तेनें कहा तम मोको  
 राजनें कहा, हे देवूता धसि स्वर्गके जेग हम नाही. अरु  
 हमको धर जाणि नही है. हम उय तप करेगे तप करेके  
 धस देहकोणी, लाग देगे. जेसें सर्प अपनी त्वचाको पु  
 रातन जनीके लाग करता है, तेनें हमणी लाग करेगे.  
 हे देवूता गुम गुमारे विमानको गहाते सापातो, तहा से  
 जन्मो हमारे तो नमस्कार है. हे देवी जण हम प्रकार  
 राजनें सुणो दा, तम विमान अप्सरा आदि सजको  
 सेके स्वर्गनें गया, अरु सपूरन वर्तमान धंदको कहा. तम

इंद्र प्रसन्न हुआ और सुंदर पानी डरके, मुन्कों कहत  
 गया. हे दूता तू पहुरि बहा राज है तहां ज. वह संसा-  
 रने उपरांत हुआ है. इसको अप्य आत्मा पदकी धर्या  
 हुआ है. इसको साथ लेके वाष्मीक इसने आत्म तत्वका  
 आत्मा करी लया है. तिसके पास ले लय जेरा संदेशा  
 केहेता. जे, हे, महाकृपी! इस राजको तत्वबोधका उपदेशा  
 करना. जे यह बोधका अधिकारी है. कहे तै, जे इसको  
 भर्गकीनी धर्या नहीं. और अवरकीनी वांछा नहीं. ताते  
 तुम धनको तत्वबोधका उपदेश करो. जे तत्वबोधको पाप  
 करे संसार दुःखते मुक्त होवे. हे सुभद्रो! अप्य इस  
 प्रकार देव राजने मुन्कों कहा, तप में अथा. जहां राज-  
 या, लभ करीके जेने कहा, जे हे राजना! संसार समुद्रते  
 मोक्ष होनेके निमित्त वाष्मीकके पास अथ. वाष्मीक तुन्को  
 उपदेश करेगा. तप तिसको साथ ले कर, मैं वाष्मीकके स्थान  
 पर आय प्राप्त गया. तिस स्थानमें गजको भेजाया.  
 और इंद्रका संदेशा दिया. जे उहां पृतांत गया मो मुन.  
 जग उहां अये; अरु प्रनाम कर जेके, तप वाष्मीकने कहा  
 हे राजन! कुराज है?

रामोवाच. हे जगन्ना! परम तत्वत, और वेदांत  
 लनने वारेमें अह में अप्य कृपारथ हुआ. तुमारे दर्शन  
 करे, अप्य मुन्को कुराज हुआ है. और कछु पुजता हों.  
 कृपा करे उत्तर केहेना, जे संसार अंधनते मुक्ति होय.

वाष्मीकोवाच. हे गजना! महाराजापण्य ओषध तुन्को  
 कहता हों. मो अवन करे तिमका तात्पर्य हृदिये धारण  
 का मल कर. जप तात्पर्य हृदिये धरेगा, तप अवन-मुक्ति

होव कर पीयरैगा. हे राजन्! परिष्टु अरु गमयंद्र  
 उका सवाद हे. तिसमें सज्य कथा मोक्षका मोर्क उपाय कहा  
 हे. तिसको श्रुतों जेसै गमयंद्र उ अपने स्वभाव जिये स्थित  
 हुअे, अरु उव-मुक्त होवें भियरे हे, तेमे पुनी भियरेगा.  
 शण्णेवाय. हे भगवन्! रामयंद्र उ वन था, अरु के-  
 साया, अरु केसे होकर भियरया हे, सो कथा कउं कही.

वाइभीडोवाय. हे गजन्! शापके जसने, हउि जे निधु  
 तिनने उव धउं मनुष्यका देह धरौ, मो अद्वैत ज्ञानकर  
 संपन्न हे, तो भी कहुक अग्यानको अगीकार करे, मनुष्यका  
 शरीर धरया या.

शण्णेवाय. हे भगवन्! चितानंद रूप जे हरी हे, ति-  
 नको शापदिस का'न हुआ? अरु किसने दिया? मो कही.

वाइभीडोवाय हे राजन्! अेक कायमें सनत्कुमार जे  
 निधुस हे ओ अहोपुरीमें जेउे ये, अरु त्रिशोकापती जे  
 निधु भगवान, मो वैकुण्ठे उतरके अहोपुरीमें आअे. तज  
 अहो सहीत सर्व सभा उउके जडी हुई. अरु पूजन  
 किया. अरु सनत्कुमारने पूजन किया नहीं. तिसको देख  
 कर निधु भगवान जोषत जया हे सनत्कुमार! तुजको  
 निष्कामताका अजिमान हे. तजें तु काम कउं अनतार  
 पावेगा, अरु स्वामी कार्यक तेरा नाम होवेगा. जज निधु  
 भगवानने अेसा कहा, तज मन्तकुमार जेला हे निधु?  
 सर्वमताका अजिमान तुजको हे. तेरी सर्वमता जेर्क काल  
 निवृत्त होवेगी, अरु अज्ञानी होवेगा. हे गजन्! अेक  
 तो धई साध हुआ; औरपी श्रुत. अेक कायमें जूयुकी  
 अज्ञानत रहीपी; तिसके विज्ञेगक पहरूपी तपावमान

हुआया। तिसको देण्डे भिषकुण्ड हसे, तब भृशु आह-  
नने साप दिया। हे भिषकुण्डा मेरेताड देण्डे तैने हांसी करी  
हे। सो मेरी नांछ नुंभी स्त्रीके विजोग इर आतुर होवेगा।

अइ अेक दिवस देवरागा आहानने नरसिंह जगवानको  
साप दिया। सो सुन.—अेक दिन नरसींह जगवान गंगाके  
तीरपर भेवे, तांहां देवरागा आहानकी स्त्रीपी। तिसको  
देण्डे, नरसींहकु जवानक रूप देण्डे हसे। तिनको दे-  
ण्डे कपीकी लुगाई जव पाव प्राण छोडदीने, तब देवरागांने  
साप दिया। जे तुमने मेरी स्त्रीका विजोग किया तांने  
तुमभी स्त्रीका विजोग पाओगे। हे राजन्! संतकुमार,  
अइ देवरागां के साप करके विषकुण्ड जगवानने मनुष्यका रा-  
शीर धर्या। सो राजन् दरारथके धरमे प्रगटे। हे राजन्!  
अे जे शरीर धर्या हे, अइ आगे जे पचांत हुआ हे  
सो सावधान होव धवन कर। दिव्य जे हे देवलोक, अइ  
जू जे हे पृथ्वी लोक, अइ पाताल लोक अेसी जिनोकीको  
प्रकारता हे। अइ अंतर माहिर आतम तत्वकरी पूरन  
हे। अेसा अनुभवत्मक मेरा आतमा हे। तिसस्वर्गा-  
त्माको नभस्कार हे। हे राजन्! धहरास्त्र जे आरंज  
किया हे, तिराका भिषय क्या हे? अइ प्रयोगन क्या हे?  
अइ मबंध क्या हे? अइ अधिकारी कौन हे? सो अवन  
कर। सत, मित, आनंद, रूप अमित्य म्निमात्र आत्माको  
जनावता हे, सो विषये हे। अइ परमानंद आत्माकी  
प्राप्ती, अइ अनात्म अभिमान दुःखकी निवृत्ति, धरि प्र-  
योगन धरिमे हे। अइ अक्षयिणी मोक्ष उपाय इर आत्मपद  
प्रतिपादन हे, सो मबंध हे। अइ लसको यह निश्चय हे,

जेमे अद्वैत अथ अनात्म देहका साथी हुआहो, मो किसी प्रकार छुर्गे ऐसा ग्यान वान हे,—अरु मुमुक्षु हे, ऐसा जे निवृत्ति आत्मा हे मो छहा अधिकारी हे छसि, शास्त्रका मे छु उपाय हे. पगु देसा ही मोक्ष उपाय परमान दही प्राणी कउनहारा हे. जे पुरुष छसिको विचारै गौ ग्यानवान होवे. अगुरी जन्ममृत संसारमें न आवे. हे राजन्! यह महा रामायणु जे हे मो पावन हे. अवन मात्रों सन पापका नारा कर्ता हे. छम जिये रामकथा हे सो प्रथममें अपने आग्द्वान् शीष्यको अनन कगछि हे. अेक सजे आग्द्वान् वित्तों अेकात्र करे गेरे पाम आया या. तिसकों में उपेरा किया या. तिसकों अवन करेके पय नरूपी रामुद्रों गार रूपी रत्न मो अनन करेके हूँ विपे धरके अेक सजे सुमेरु पगवत पर गरा तहा पितामह जे खला सो मेहाया. अरु आग्द्वान्ने लयक प्रनाम किया. अरु पारा बेडा. अरु ब्रह्माछुओं यह क्या सुनाछि. तय अद्वान्ने प्रमन होन कर आग्द्वान्को कला. हे पुता कजुपर भागी में तुम पर प्रसन हुआ हों. हे राजन्! जय छस प्रभर ब्रह्माछुने कला, तय परम उत्तर छसका आराप हे, ऐसा जे आग्द्वान् मो उहन जया हे जूत जविष्यके छसगि जय तुम प्रमन हुआ हा, तय यह जर हेहु जे मपुछुं छन ससार हु जने मुक्त होही अरु परम पदों पावही सो उपाय कहे.

अजोचय, हे पुता तु अपने सुइ वा मीकपास न मन कर. अगुरी जे तिमने, आत्मजोध महाराभावन अ निवृत्ति शास्त्रका आरण किया हे, तिसकों सुन कर, छय महा

मोक्ष संसार समुद्रतें तरेंगे. केशा शास्त्र है? महा रामा-  
यन, जे संसार समुद्र तरनेको पूछ छै; अरु परम पावन छै.

वाल्मीकीवाच. हे राजन्! ज्य छसि प्रकार कहे, तज  
आप परमेष्ठी अज्ञा सो भारद्वाजको साथ ले करे मेरे  
आश्रममें आये. तज मेने जसे प्रकारसों छसिका पूजन  
किया. सो अज्ञाछ कैसे है? सरव जूतके हितमें प्राप्ती छै  
छसकी, सो मुजको कहत जथा.

अज्ञोवाच. हे मुनीमें अष्ट वाल्मीकी यह जे रामके  
सुभाषका कथनका आरंभ तुमी किया छै तिस उद्दमका त्याग  
नहीं करना. छसिजो आदीतें अंत पर्यंत समाप्त करना. केशा  
है यह मोक्ष उपाय, जे संसार रूपी समुद्रके पार करनेको  
ब्रह्मण छै. छसि कर सरव छव फृतार्थ होवेंगे.

वाल्मीकीवाच. हे राजन्! छसि प्रकार अज्ञाछ मुजको  
कहीके अंतर्धान हो गये. जसे समुद्रतें आपर्च अरु अक  
मुहूर्त पर्यंत उडके बहुरी सीत हो जये तसे अज्ञाछ अं-  
तर्धान हो गये. तज में भारद्वाज को कहे. हे पुत्र! अ-  
ज्ञाछने क्या कहे?

भारद्वाजोवाच. हे भगवन्! तुमको अज्ञाछने असा  
कहे, जे हे मुनि अष्ट! तुमने रामके सुभाषका कथनका उ-  
द्दम किया छै तिसका त्याग नहीं करना. अंत पर्यंत स-  
माप्ती करना. कहेने जे यह संसार समुद्रके पार करनेको  
यह कथा ब्रह्मण छै. छसि कर अनेक छव फृतार्थ होवेंगे  
अरु संसार संकटते मुक्त होवेंगे.

वाल्मीकीवाच. हे राजन्! ज्य छसि प्रकार अज्ञाछने  
मुजको कहे, तज अज्ञाछकी आम्बके अनुसार मेने



अथ क्रिया. अरु आरक्षणको उखा. हे पुत्र वशिष्ठशुद्धे  
 उपदेशो पापकर एव प्रकार गमश्च निराक होई जिये  
 हे, तेमै तुमी भीयर. तज उन प्रश्न क्रिया.

आग्निहोत्राय हे भगवन्! जिस प्रकार रामयद्रश्च  
 एव-मुक्त होऊ जिये हे, सो आदीसो कर्म करके मु  
 लको छोडो.

वाहमीहोत्राय. हे आग्निहोत्राय रामयद्र, लज्जन, अरु  
 त, रात्रुप्र, भीता, कौराक्ष्या, मुनिवा, दशरथ, ये आडो  
 अष्टमत्री, अष्टयुष्ण, आदिनेकर एव-मुक्त होय जिये हे,  
 तिनके नाम मुन.—गमश्च लेके दमरथ पर्वत आगतो ये कृ  
 तारथ हुम्मे हे. अतिरोध, पामपोषणन जये हे और  
 कृतभारी १, रातवर्धन २, शुक्लाम ३, विभीषण ४, छिद्रश्च  
 त ५, हनुमान ६, वशिष्ठ ७ वामदेव ८, ये अष्टमत्रीमो  
 नि राके होय येष्टा करत जये हे. अरु गता अद्वैत निर  
 हुम्मे हे. धनो कलायित् रवर्षने दैत जान नही पुर्षाहे.  
 अनामय पद विरि स्थितिमें तृप्त रहे हे जे केवण वि  
 भाव, शुद्धपद, पामपावन, ताडो प्रात्य हुम्मे हे  
 धृति श्री योगवाशिष्ठ वैराग प्रकृष्टो कथागम वसुंन नाम  
 प्रथमः सर्गः

आग्निहोत्राय. हे भगवन्! एव-मुक्तकी स्थिति के  
 सी हे? अरु गमश्च केमै एव-मुक्त हुम्मे हे? सो आ  
 दीने लेऊ अत पर्वत गज छोडो

वाहमीहोत्राय. हे पुत्र! यह जगत, जे आसता हे,  
 मो पाम्मविक कछु नही उत्पत्ति जया अविचार करके

भासता है, विचार विषयों निवृत्ति हो जाता है, जैसे  
 आकारमें नीलता भासती है सो धम करके है, जल वि-  
 चार करके देखिये तब नीलता प्रतीति दूर हो जाती है,  
 तैसे अविचार करके जगत भासता है, अरु विचारते  
 हीन हो जाता है, हे शिष्य, जलजल सृष्टिका अत्यंत  
 अभाव नहीं होता; तब जल परम पदकी प्राप्ति नहीं  
 होती, जल दृश्यका अत्यंत अभाव होय जवने, तब पाछे  
 शुद्ध विद्याकारा आत्मसत्ता भासेगी, कोई धसि दृश्यको म-  
 हाप्रलयमें उदासीत अभाव कहते हैं, परंतु में तुजको तीनो-  
 धि काशका अभाव कहता हों, सो सरास्वत्तर धिसरास्वमें  
 अहा संपुञ्ज आसीते बिकर अत्यंतक अवन करे; अरु तीनको  
 धार, तब तीसकी श्रान्ति निवृत्ति होय जवने, अरु अन्धा  
 कृत् पदकी प्राप्ति होवे, हे शिष्य! संसार धम मात्र सिद्ध  
 है, धसिओं धम मात्र जलन कर पिरभरन करनीं, सो मु-  
 क्ति है, अरु धसिओं अंधनका करिन भासना है, भासना  
 करके अशुद्ध डीरता है, जल वासनाको क्षय हो जवने, तब  
 परम पदकी प्राप्ति होवे, जो वासनामें डरेता है, तिसका  
 नाम मन है, जैसे जल सरदीकी दृढ जडतापावके अरु हो-  
 ता है, पाछे सूर्यके तापते अहुरी गनकर जल होता है,  
 तब केवण शुद्ध जल होय गहना है, तैसे आत्मा रूपी  
 जल है, तिस जिये संसारकी सत्यता रूपी जडता भीत-  
 लना है, तिस करके मनरूपी अग्निका भूतका हुम्मा है,  
 जल सानरूपी सूर्य उदय होवेगा, तब संसारकी सत्यतारूपी  
 जडता, भीतलता, निवृत्त हो जवेगी, जल संसारकी मत्यता  
 अरुवासना निवृत्त हुध, तब मन नष्ट हो जवेगा, जल

मन नष्ट हुआ, तब परम इत्यान हुआ। ताँतें धिसडों पं  
 धनका कारण वासना है। अइ वासनाके क्षय हुयेतें युक्ति  
 है। मो वासना हो प्रकारकी है। अक शुद्ध अइ दुसरी  
 अशुद्ध। सो अपने वाग्विक स्वरूपके अस्तानतें अनात्म  
 ने देहादि, तिनमें अहंकार करना, मो जग्य अनात्ममें  
 आत्म अजिमान हुआ, तब नानाप्रकारकी वासना उपजता  
 है। तिस करके धडी वनडी नार्क अक जमता है। हे  
 साधु! यह ने पय जूतका शरीर तू ने देपता है मो  
 मम वासना रूप है। वासना सो अक है। जैसे मनके  
 धागे के आश्रयमें अड होते है, ओर जग्य धागा तू पयाँ।  
 तब मनका न्याय न्याय होय पडता है, अइ छहता नाहीं  
 है। तेसे वासना के क्षय हुये पयजूतका शरीर नहीं रह  
 ता। ताँतें सग अनरथका कारण वासना है अइ ने शुद्ध  
 वासना है तिनमें जग्यका अत्यत अमान निक्षय होता  
 है। हे साधु! अग्यान्का ने निक्षय है, सो वासना को  
 अहुँकी जन्मका कारण हो जाता है। अइ ग्यानीकी वासना  
 है, मो अहुँकी जन्मका कारण नहीं होता है। तेमें अक  
 कर्म्या पीज होता है; दुसरा दग्ध पीज होता है। तिसमें  
 ने कर्म्या है मो अहुँकी उगतता है अइ ने दग्ध हुआ  
 है सो अहुँकी नहीं उगतता। तेसे अग्यानीकी वासना है  
 सो रसमहीत है, सो जन्मका कारण है। अइ तानीकी  
 वासना है सो ग्य रहीत है, सो जन्मका कारण नहीं। ता  
 नीकी अेडा साधानिक युन करके अडी होवी है। ओर  
 इसी युन साथ मिलकर अपनेमें अेडा नहीं देपता। आ  
 ता है। पीता है। सेता है। देता है। जोपता है। अ

धता है. विचार करता है. परंतु अंतर राधा अद्वैत  
 निश्चैटाओं धरता है. कदाचीत् द्वैत भावना तिसको पुरती  
 नाहीं है. अपने स्वभाव विषे स्थित है. ताते नियुन  
 अरु अरूप है. ताकी चेष्टा जनमका कारण नहीं है. जैसे  
 कुंभारका अक है, सो जलजग उसको इरे अदावे, तजलजग  
 वह क्षीरता है; ओर जल इरे अदावना छोड दिया, तज  
 स्थीयमानगतीमें उतरत उतरत क्षीरके स्थिर रहे जता है.  
 तेसे जलजग अहंकार सहित वासना होती है तजलजग ज-  
 नम पावता है. जल अहंकारते रहित हुआ तज जलुरी  
 जनम नहीं पावता. हे साधु! यह जे अस्तानरूपी  
 वासना है तिसको नारा करनेका उपाय अेक अक्ष विद्या  
 अेष्ट है. अक्ष विद्या मोक्ष उपायक. राख है. जल छसिते  
 ओर राखमें गीरेगा तज इक्ष पर्यंतहू अख्यात पदको न  
 पावेगा. अरु जे अक्ष विद्याको आश्रय करेगो सो सुप्-  
 नसो आत्म पदको प्राप्त होवेगा. अहे भारद्वाज! यह मोक्ष  
 उपाय रोमज अरु वशिष्ठजका संवादसो विचारना जेअ्य  
 है. जोधका परम कागन है. ता ते आद्यंत पर्यंतमोक्ष  
 उपाय अवन कर. जेमें रामज जव-मुक्त होय जियरे  
 हेगो सुन.—अेक दिनां रामज जिव्या पदके अध्ययन रा-  
 खाने अपने गृहमें आये. अरु अपूरन दिन जियार क-  
 रत ज्यतीव कर दिया. जलुरी मनमें तीर्थ, ढाकुरदारका  
 अंजक्ष धर पिता दशरथके पास आया. पिता सो मिले  
 जंत अपूरन प्रज्जको सुप्नमें राजलाया; अरु सज प्रज्ज ती-  
 सके निकट गहे; सुप्न पाई तिस दशरथका अवन श्री रघु-  
 नाथजने गृहन दिया. जेमें मुंजर कमलको हंस गृहन करे

तेमें पिताका बलन गृह्ण किया, जेमें कमजडे तरे रोमल  
 तगियां होतिए, तिन तगिया सहित कमजडे हुंस पडडता हें,  
 तेसे दरारथशुभ्री अंगुरीनगे रामशु गृह्ण किया, अर  
 जोसे जे, हे पिता ! जेग यित तीर्थ अर हाकुरद्वारेके द  
 रांनके छाने, ताणे तुम आम्हा कगे तो में तीर्थका अउ  
 हाकुरद्वाराके दरौन कउ आउ, में तुमारा पुत्र हू, तुमारे  
 पायना कनी जेग्य हे, ओग आगे में कपी कल्या नही  
 यह प्राग्धना अमन करी हे, ता ते तुम आम्हा देहु; जे  
 में नही, यह अमन जेरा ईगना नाही कहे ते जे  
 जेसा निजोकीमें जेउ नाहीहे, शुराका मनोरथ छिस धरते  
 सिद्ध हुआ नही हे, मजका मनारथ सिद्ध हुआ हे,  
 ताणे मुजगे कृपा कउ आम्हा देहु.

बाहरीकोवाच, हे बाग्द्वारज ! धन प्रकार जण राम  
 कल्या, तज पशिडशु पास जेउये, तिननेली दसुग्धमे  
 कल्या, हे गजन्ना रामशुमे आम्हा देहु, जो तीरथ कउ  
 आवे, जे धनका यित छिडा हे, राजकुमार हे, छिसमे  
 साथ सेना दीजे, धन दी रे, मजो दीजे, आसन दीजे,  
 जे यह दरौन कउ आवे, हे बाग्द्वारज ! जण जेसे जि  
 यारे जिया, तज शुभ मुहुग्ध देणकउ रामशुके आम्हा  
 दीनी, जण अयने लागे, तज पिता अर माताके अरन  
 लागे, अर सजके उठ लगार्ध इदन कने लागे, तिनके,  
 मियकउ आगे असे, अर लजमन आदी जे बाध हे  
 ओग मंत्री ये, तिनके साथ लकर, अर पशिठ आदी जे  
 आसन विधीके लनने पागे ये, अर जहुत वन, जहुत  
 सेना तिनके साथ ले असे ओग दान पुन्य करके जण

गृहके बाह्यर नीकसे, तब जहाँके जे लोग ये अर खिपां थी तिन सभने रामछके उपर दुख अर दुलकी भाजाकी ज-रणा करी. सो जराभा जररु जराभती हे ऐसी, दीभती हे, अर रामछकी जे भूति हे सो हृदयमें धर लीनी. इस प्रकार रामछ जहाँसो असे; तहाँ आत्मन अर निर्ध-नको दान हते हते तीर्थ जे गंगा, जमुना, सरस्वती आदि हके हे, इसमें स्नान विधी संयुक्त कर पृथ्वीके आरौ डौन उत्तर, दखन, पूर्व, पच्छिमके दान कियो. अर आरौ ओर समुद्रके स्नान किये. अर सुमेर पर्वत परगये. हिमालीय पर्वतपर गये. अर राणीग्राम, जद्रिकेदार आदि गंगामें स्नान किये. अर दरान किये. जैसे सब तीर्थ स्नान, दान, तप, ध्यान, विधि संयुक्त यात्रा करत जये. जेसी जेसी जहाँ निधी थी तेसी तेसी तहाँ करी. अक वर्ष में संपूर्ण यात्रा करके रामछ जहुरी अपने धरमें आवे. धृतिशीयोगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरले तीर्थयात्रा वर्णन नाम द्वितीयः सर्गः २.

वाल्मीकीवाच. हे भारद्वाज जण रामछ यात्रा करके अपनी अयोध्यामें आवत जये, तब नगरके वासि लोग पुरुष ओर स्त्री दुलकी जराभा करत जये, अर जे जे शब्द सुणते उचारन लागे, अर प्रेम हास्य करन लागे. ओर जेसे इंद्रका पुत्र अपने स्वर्ग में आवत हे, तेसे रामचंद्रछ अपने धरमें आवे. पहिले गण दरारथको प्रनाम कर, फिर परिष्टछके प्रनाम कर, फिर सब राजा हे लोग हे जथा जोग भिन्न, फिर अंत.पुरमें आवत जये. तहाँ जौ-

शिक्षा आदि नो माता थी छिन्को जया जोग नमरकार किं.  
 और नो बाई आवत कुटुम्ब या तिन समनो मिने हे  
 बाग्द्वार धर्म प्रकाश गमछे आपनका उत्साह राधदिन  
 पर्वत होता रहा, वा समयमें कोडि मिने आपने कोडि कछु  
 लेने आपने तिनको दानपुन्य कृत जाने अगत उत्साह हुआ  
 बाट आदि खुति करन लागे तदनतर रामछका आच  
 रन हुआ गो मुन. प्रात कानमें छोडे स्नान मन्वादिके स  
 लमें कृते अपुरि भोजन कृते अपुरि बाई अष्टुको  
 मिन अपने दीर्घकी कथा कृते देवदारे हे हरानकी वार्ता  
 कृते धरि प्रकारसो उत्साह कर दि। राते। पीतावतथे  
 अके दिन प्रात कानमें छोडे पिताछ दगधडा देजे सो लेसे  
 धरिडा तेरहे तेसा तेरवान् देप्या, अइ वशिटाळिकी  
 सभा पेडीथी तहा वशिटाळके साथ कथा वाचा रामछ क  
 गत हते, तहा अदिना गगत हराम्य अत जया हेगामछ  
 वृम शिकर जेनने जययो गो ता समयमें गमछकी  
 अवस्था वर १६ में थोडे महिना कुमती थी तज राज  
 कुमार रामछके साथ लग्न अइ मनुष्य बाछ थे अगत  
 नहानेडा गयाया. फिर तिनके साथ नान सधादिक नित्य  
 कर्म कृते, भोजन कृते शिकर जेनने गते तहा नो छ  
 पडे हु अ लहागे वनवज देजे तिनको भारते अइ अ  
 वा लोकमे प्रसन करे, रस प्रकार दिनको गीजर जेन  
 रानी। जागते निरा। आपने धर्म आवते असें क  
 रत केतेक दिन जाते तामें रामछ अपने अत पुरमें आर्ध  
 सजको लाग करे अकालमें अितन करत जैडी रहते हे  
 बारद्वार जेवी कछु राजकुमारकी अष्टा सो सजको राम

छने त्याग कर दीनीथी. जेते कछु रस संपुष्ट छंद्रिषोंके विषय-  
 हे छनिकों त्यागके शरीरते दुर्बल जेसे हो सुअपकी कांठी घट गध  
 पीत परन होय गये. जेमें कमलशुभके पीत जग्न होय जाता हे  
 तेसे रामछका सुअ पीरा होय गया. अइ सुजे कमलपर अंबरे  
 जेहेतेहे तेमें शुजे सुअ कमलपर नेत्र रूपी अंबरे भासन  
 लागे, सो हु शोभा होवन लागी. अइ छच्छा निवृत्त होय  
 गध. जेसे शरदाक्षमें ताल निर्मल होता हे; तेसे छच्छा रूपी  
 मजनते रहित चित्त रूपी तालहु निर्मल होता हे. तेसे  
 जामला निवृत्त होता तिन चित्तें शरीर निर्मल होय गया.  
 अइ जहां जेते तहां चित्त मपुष्ट जेके रहि जाये. ओ  
 नाही. अइ जेते तज हाथें विष्णुक धरके जेते. जण  
 रहसुजे मंत्री जहुन इहली. जे हे प्रभो यह स्नान सं-  
 ध्याका समय हुआ हे सो अण उठो, तण उठ कर स्नाना  
 छि करहि. अइ हृदयमें न जियारही. जेती कछु आने  
 पीने, जोखने, अजने, पहिरनेकी डीवा हे, सो सण जिरस  
 होय गध हे. जेसे रामअंद्रछ जये, तण लजमन अइ  
 रात्रुअहु रामछको सराय संपुष्ट जेअडे निय, प्रकार हो जेते.  
 तण दरारय यह जागता सुनके रामछ पास आय जेते.  
 अइ जेजे तण महा कृश जेसा होय गया हे. छसि चित्त  
 उके आतुर हुआ. जे हाथ हाथ छनिकी ज्वा अणस्था  
 दुर्ध हे! छसि सोके जिये गमछको जोदमें जाये. अइ  
 पूछन लागी, डोमल सुंदर राअ इके जोले. जे हे पुन  
 पुमजो ज्वा दुःख प्राप्त जवा हे, छस कर पुम जोडवान  
 हुजे हो. तण गमछने इहा जे हे पिता! हमकों तो  
 दुःख डोड नही हे. जेमें इहेके सुप हो गहा. जण जिते



दिवस छमे प्रकाश जितनी जना. तप गजनी शोकवान  
हुआ. अरु मज शिवानी शोकवान अरु. अरु गज,  
मनी, मिले जिया अरु लागे जे पुत्रका डिमी डारे वि  
वाह हुना. अरु पहनी निया अिया. जे का हुआ हे,  
जे मेरे पुत्र शोकवान होष गहेने हे. तप परिशुद्धी  
पुत्र जे हे मुनीधर! मेरे पुत्र शोकमें का गहेने हे,  
तप परिशुद्धी हे. हे राजन्! महा पुरुषको जे शोष  
होता हे, गो शमी अपप कारन क नही होता. अरु  
मोहनी अपप कारन कर नही होता. अरु गोडनी अ-  
पप कारन कर नही होता. जेमे, पृथी, जप, तेज, वायु,  
आकाश, जे महा जूत रे, सो अपप कारनमें पिडा  
पान नही होने. जप जगतकी उत्पति प्रथम होता हे तप  
विधारवान होने हे. तेमे महापुरुष अपप कारनमें पिडा  
गहन नही होवे. जेमे हे गजन्! तप शोक करे जेस  
नही. अरु गमछ जे गोडवान हुआ हे, मेनी केसे  
अथके निमित्त होषा. पाठे छसिके सुप मिनगा पुम  
गोक म कगे.

वान्भीकोन च हे जागृदाज! जेसे परिशुद्ध अरु  
गज दरारथ निया करे जे, तिमशालमें विधामित्र अ  
पने मतेके अर्थ आवत जये. गज दरारथके गृहमें आप  
के परिषाणे कहत जये; जे गज दरारथके कहो. गापीका  
पुत्र विधामित्र पाहीर अउ हे. तप छिनने ओर अउ  
परिषाणे जप कहा. हे राजन्! जेक अउ तपमी दरारथ  
आप अउ हे, तीन हमने कहा जे राज दरारथके पास  
जप कहो, जे विधामित्र आप हे. सो शुनके गज दरार

रथके पास गये. अरु इहो जे विश्वामित्र, गाधीका पुत्र  
 बाहीर जडा हे. अरु सपुरन मंडोखर कर मूल्य जे  
 राज दरारथ राजन सहीत अपने सिंहासन पर भेडा हे.  
 अरु जडे तेज कर संपन हे. तिसकों इहो, जे विश्व-  
 मित्रने हमकों इहो हे जे दरारथके पास जय कहे जे,  
 विश्वामित्र बाहीर जडा हे. हे भारद्वाज जय इस प्रकार  
 जडे पौरियाने राजनों इहो तज राज शुनकर सुभरनके  
 मिहारनते हिस जडा हुआ. अरु अरथों कर अथा.  
 अरु ओर अशिष्ट, ओर दुसरी ओर वामदेव, अरु  
 सुभरकी नाथ मंडोखर, रति करत अजे. तज जहांते  
 विश्वामित्र दृष्टी आया तज तहांते प्रनाम करने लागे.  
 जहां पृथ्वीपर शीरा राजका लागे तांहां पृथ्वीनी हीरा  
 मोतीकी सुंदर होय जये. इस प्रकार शीरा नभापत नभा-  
 पत राज विश्वामित्रके आगे अथा. अरु जडी जटा शिर  
 परते कथ पउ परी हे, ऐसे विश्वामित्र अग्नीकी नाथ  
 प्रकाशित हे. अरु शरीर सुभरनकी नाथ प्रकाशता हे.  
 अरु हृदयमें शांति, कोमल शवभाव, जननेमें आवे ऐसे  
 अरु महा तेजवान, सुंदर कति, अरु शांति रूप, अरु  
 हाथमें वांसकी लकड़ी, अरु महा धैर्यवान ऐसे विश्वामित्र-  
 के प्रनाम करत राजे दरारथ अरन उपर जय गिरया.  
 ऐसे सूर्य सदाशिवके अरन पर जय गिरे तेसे भरतके नं-  
 वाय कर इहो, अरे जडे जाग्य हुअे जे तुभारा दर्शन  
 हुआ हे. हमारे उपर तुम जडा अनुग्रह किया हे.  
 हमहुं जडा आनंद प्राप्त हुआ हे. जे अनादि, अनंत हे,  
 आदि, मध्य, अंतते रहित अविनाशी हे. ऐसा जे

अत्रिंम आनंद है, सो तुमारे दर्शन कर मुझको प्राण  
 हुआ दृष्टिमें आवता है. हे भगवन्! आज मेरे पडे  
 भाग्य हुआ है। जे मे धर्मात्मके गिननेमें आशिया. अहेते  
 जे तुम मेरे कुराव निमित्त आवे हो. हे भगवन्!  
 तुमारा आवना हमारा लक्षमें नही था. अर तुमने पडा  
 अनुग्रह दिया है. जैसे सूर्य कोर्क कार्य करनेको पृथ्वी पर  
 आवे, तैसे तुम मुझको दृष्टिमें आवते हो. अर सप्तते  
 दृष्ट दृष्टिमें आवते हो. अहेते जे तुममें हो गुन है.  
 अकेतो क्षत्रियका स्वभाव तुममें है, अर दूसरा अंजन-  
 का सुभावणी तुममें पासता है. अर शुभ गुन कर  
 संपूरन हो. हे सुनीधर! तुम क्षत्रियमें ते आसन जिये हो.  
 असी कोर्की सामर्थ्य नही है. अर तुमारा शरीर  
 प्रकार कर दीपता है. अर अस भाग्य तुम आया  
 हो, अर अस भाग्य तुम दृष्टी करत आवे हो. तहाते  
 अमृत दृष्टी करत आवे हो, असा दृष्टी आवता है. हे  
 सुनीधर! तुम आवे सो तुमारे दर्शन कर मुझको पडा  
 भाग्य हुआ है. हे भारद्वाज! इस प्रकार राज्ज दरारथ  
 विद्यामित्रको जोल्यो. अर वशिष्ठजी आव कर विद्यामित्रको  
 को लभावके मिते. और जे भडगेश्वर राज्ज ये सो अहुत  
 प्रताप कर इस प्रकार सग मिते. तप्य विद्यामित्रको राज्ज  
 दरारथ घरमें ले आया. जहा राज्ज सिधासन था, तहा  
 आन कर भेडाया. अर वशिष्ठ वामदेवको भेडाये. और  
 राज्ज दरारथने विद्यामित्रका पूजन दिया. अर अर्ध पा-  
 दार्थन करे प्रदक्षना करी. अहुरी वशिष्ठजीने विद्यामि-  
 त्रका पूजन दिया. अर विद्यामित्र वशिष्ठजीका पूजन दिया.

जैसे अत्यन्त पूजन हुआ. इस प्रकार पूजन उन्हें सत्य अपने अपने आसन पर यथायोग्य जेठे. तब राज दरारथ जेठे. हे भगवन्! हमारे जेठे भाग्य हे जेठे तुमारा दर्शन हुआ. जैसे कुछ तपकों अभूत प्राप्ति होवे. अरु जन्मांधेकों नेत्र प्राप्ति होवे, सो आनंद पावे. जैसे निर्धनकों अितामष्टि प्राप्त होवे, अरु आनंदकों पावे. अरु जैसे किसीका जांचव सुवा होय, सो विमान पर अदृश हुआ आकाराने आवे, इसकु जेसा आनंद प्रापन होवे तेमें तुमारे दर्शन कर, में आनंदकों प्राप्त हुआ हो. हे सुनीपर, तुमारा आवना इस अर्थ हुआ है, सो कृपा कर कहे. अरु जे तुमारा अर्थ है सो पूरन हुआ जनो. कहेंते जे ऐसा पदारथ कुछ नांही, जे तुमकों दैयना कहीत है. सत्य कुछ मेरे विद्यमान है. जे तुमारा अर्थ है, सो निश्चय कर जनने योग्य होय रहा है. जे कुछ तुम आग्या करोगे सोमें देखगा.

धृतिश्री योगवासिष्ठे चैराग्य प्रकृत्यु विश्वामित्रा गमन  
 अर्ननं ताम तृतीयः सर्गः ३.

वाइभीकोवाच. हे भारद्वाज! जन्म इस प्रकार राज दरारथने कहा तब, सुनिमें साईल जे विश्वामित्र, सो अनृत प्रसेन भये. अरु रोम जेठे हो आवे. जैसे पून मासिकि अंद्रमाकों दैयके धीर सागर प्रसेन होता है, तेसे प्रसेन हो कर कहत भवा. हे राजसाईल! तुम धन्य हो! ऐसा ज्यो न होवे, जे तुमारेमें दो सुन अष्ट है. अकतो रघुवर्षी हो. दूसरा वसिष्ठ तुमारा अरु है. ताकी

आश्रममें अक्षते हो, तानें हे गजन्! त्ने इधु भेग प्र  
 योजन हे, मो तुमारे विद्यमान प्रगठ हुता हो, अपन  
 कुगे दरागत वसडा भेने आश्रम क्रीपा हे; सो वल  
 वसडे करेने लागता हो, तल गजन्स, पत्र अइ दूजन  
 सो वसडे तोर आगे हे, बहा बहा में वलप इ वस  
 करेता हो, तहा तहां आय कर अपनित त्ने इधि अइ  
 मास, अइ अस्थि मो आगे हे, मो स्थान वन करेने  
 योग्य नही रहता, ओर जदुरीमें ओर डोर करेने लागता  
 दुःतहाभी उमी प्रका अपनित कवतते हे, तिमडे नारा करेने  
 हे निमित्त में तुमारे पाम आवाहो कदासीत अमें रहे  
 त्ने तुमी ममर्थ हे, तो हे गजन्! में वसडा आश्रम क्रीपा  
 हे, वीमडा अग छभाहे, त्ने विसत्रोंमें साप देख, तो वह  
 जन्म हो वलपे, पत्रु साप कोप पिता होत नाहो, अइ  
 कोप क्रिय तें वस निभूल हो वता हे, अइ त्ने में गुप  
 इ गहो हो तो वह सज्जम अपनित जस्तु आ वता हे  
 ता तें में तुमारी गजन् आया हो, भेग कारण कुगे  
 हे गजन्! तेग त्ने रामेशु पुत्र हे, मो कमल नैन अउ  
 पक्ष मयुज हे, अग्य वह त्ने पापड दूसरी शिपा  
 महिप गडे हे, तिमडे भेरे साय देहु, त्ने गज्जभेडा  
 भागे, तल भेग वन मरुल होप, ओर तुमारे असा  
 गौड कुना नहीं त्ने भेरा पुत्र जानक हे, वह तो पडे  
 छडे समान शू भीरु हे, धनडे समीप वह गज्जस इह  
 गन सडेगे, त्नेमें सिह डे सन्मुख भूभडे जस्सा हड नहीं  
 इ राउता, तेगे तेगे पुत्रडे सन्मुख गज्जम न इह राडेगे  
 तानें भेरे साय उनडू तुम देहु त्ने तुमागणी धर्म गडे

अरु नरसणी रहे. मेरा कारणणी होवे. एसिमें संदेह  
 नहीं करनां. हे राजन्! ऐसा पदारथ त्रिलोकीमें कोठ  
 नाही जे रामछुका दिया कछु न होवे. छसीते में तेरे  
 पुत्रको ले जनत हो. यह मेरे करसौं हांप्या रहेगा; अरु  
 छसकों कोछ नीधन मे होने न देखीगा. अरु जे तेरे पुत्र  
 अस्तु हे सो में जनता हुं; ओर परिदृष्ट हु जनते हे.  
 ओर जे ग्यानवान त्रिदास दसा होवेगा, सोनी छसकों  
 जनत होयगा. ओर कोछकी समर्थता नहीं है. जे छसकों  
 जन सकै, ताते पुम छसकों मेरे साथ देहु, जे मेरे का-  
 रणकी सिद्धि होछ. हे राजन्! जे समे कर कारन होता  
 हे, सो थोरे करनी बहुत सिद्धि पावताहे. जैसे दुतिनाके  
 अंद्रभाके देण्डे अेक तंगुका दान दिया होय, सोनी बहुत  
 हे; थोछे वस्त्रका दान दियेतेपी तेसा कारण सिद्धि नहीं  
 होता. तेसे समे कर थोडा कारणनी बहुत सिद्धिकों देता हे.  
 अरु समे जिना बहुत कारणनी थोरे दुखकों देता हे. ता  
 ते पुम मेरे साथ अप्प रामछुके दीने. पर, दूप्पन, अे  
 अडे दैत्य हे. सो आप कर मेरा यस्त अंडन करते हे.  
 अप्प रामछु आवेंगे तप्य वह भाज्य जप्ये. रामछुके  
 आवेंगे अडे होय न सकेंगे. छसके तेज कर छह सप्य अ-  
 सप हो जप्येगे. जैसे सुरजके तेज करके तारागनका प्र-  
 कास छीप्य जनता हे, तेसे रामछु के दसान कर वह स्थित  
 न रहेगे. जैसे गरुडके आवेंगे सरप नाहीं डहर सकै, तेसे  
 रामछुके आवेंगे राखस न डहर सकेंगे. देण कर भाज्य  
 जप्येगे. ताते पुम मेरे साथ देहु. जे मेरा कारण होवे;  
 अरु पुमारा धरमनी रहे. रामछुके निमित्त संदेह मत

करना वह राष्ट्रसकी समर्थता नहीं न्ते रामछके निकट  
आने. अरु मेभी रामछकी रक्षा करंगो.

वाङ्मयीकेवाच. हे व्याख्याता! त्वय विद्यामित्रने अमे  
उहा तम राजन द्दारेय सुनकर सुप रहा, अरु गिर पड्या.  
अके मूहूर्त्त पर्यंत पर्या गंहा.

धृतिश्रीयोगरागिटे पेशाग प्रकरसे निस्थानियेच्छा धर्मन  
नाम अतूथे भर्गः ४.

वाङ्मयीकेवाच. हे व्याख्याता! अके सुहृत्त पाउ राजन  
हो, अरु महा वीर जेमे हो गये. अरु महा मोहत्रो प्राप  
होष गये. जेमे ते रहित हो कर जेना.

राज्येवाच. हे मुनीश्वर! तुम कसा उहा? रामछ  
अप्य तो कुमाउ हे. राष्ट्रविद्या, अस्त्रविद्याभी सीजे नाही  
हे. अगतो कूलकी सल्ला पर रायन करने वारे हे.  
वह शूद्रको कसा जाने. अगत पुत्रमे शिष्यनके पाम जेकने  
वाग हे. राजकुमाउ भायक डे साथ जेतने वाग हे. अरु  
कदाभीत गजुभी देणीहु नाहीहे. अक्रुतीको अदापडे कदा  
भीत बुद्धी नही दिया. अरु कमनके नाव छसीके  
हाथ हे. अरु कोमनछराका शरीर हे. वह गच्छके  
माय बुद्ध केसे करेगा. उहु पथ्यका अरु कमनकी बुद्ध  
हुआ हे। रामछका वपु अमन समान कोमन हे.  
अरु वह महा कू पथरकी नाव हे. वीरके साथ बुद्ध  
केमे होवेगा. हे मुनीश्वर! मे नव महम्म वग्पका हुआ  
हो. अगत दशभा सहस्र लग्या हे. वृष हुआ हो.  
मह वृद्धावस्थामे, मेरे घर पुत्र हुवे हे. सो यागिठे महा

नाम लु कमलनेत्र, कुछ पोंडरा परपका हुआ है. अरु  
 मुञ्जों बहुत प्रिय है. अरु मेरा प्राण है. राम लु जिन  
 में अेक हीन भी रही नहीं सकता. जे तुम हीनों  
 ले लज्जोगे, तो मेरा प्राण नीकस लज्जगा. में मृतक हो ल-  
 ळंगा. हे मुनीश्वर! केवल मेरा ही ऐसा रनेह भी नाहीं  
 है. उमरा बाई जे लज्जमन, वरत शत्रु अरु इसकी  
 माता जे है, सो सज्जी के प्राण राम लु है. जे तुम राम-  
 लुओं ले लज्जोगे, तो हम सज्जी मर लंयगे. विजोग  
 करे जे हमकों मारने आवे हो तो ले लज्जा. हे मुनीश्वर!  
 मेरे चित्तमें राम ही पुत्र रखा है. तिसकों में तुमारे साथ  
 देवे दृष्ट. में इसकों दृष्टत दृष्टत प्रसन्न होताहों. जैसे  
 पूर्णमासीके चंद्रमाकों दृष्टकर धीरे समुद्र प्रसन्न होता है;  
 अरु चंद्रमाकों दृष्ट कर चंद्रके प्रसन्न होता है. अरु मेघ  
 कुंडलों दृष्टकर पैसेवा प्रसन्न होताहै, तैसे राम लुओं दृष्ट-  
 कर में प्रसन्न होता हो. तज्ज राम लुके विजोग कर मेरा  
 लज्जना देसा होयगा. हे मुनीश्वर! मेरेकों राम लु जेसी प्रिय  
 स्त्रीभी नहीं, अरु धनभी ऐसा प्रिय नहीं. अरु 'राज्यभी  
 जेगा प्रिय नहीं. अवर पदारथभी मुञ्जों को ही रामके समान  
 नाहीं है. ऐसा राम लु प्यारा है. हे मुनीश्वर! तुमारे लज्जन  
 शुनके जडा शोककों प्राण हुआ हों; मेरे 'जडे अजाग्य  
 आवे हैं, जे तुमारा आवना इस निमित्त हुआ है.  
 तुमारे लज्जन शुनकर जैसे कमलके उपर पथरकी परजा  
 होय जेसी लज्जा मेरेकों होतहै. अरु पथरकी परजाते  
 जेमें कमल नष्ट हो लते हैं, तैसे तुमारे लज्जनने मेरी न-  
 ष्टता हो लज्जगी. जैसे जडा मेघ बह आवे, तामें जडा



पवन अने, तम मेधका अभाव होय व्हा. तेमै तुमां  
 नयनते मेरी अडी प्रमत्तता अभाव होय व्हाते. तेमै  
 नमन कृतूरी मळगी नयेड, आसाडेमे गूड व्हाती रे तेमै  
 तुमांरे नयन शुन मेरे हरेडी प्रमत्तता व्हा व्हाती रे  
 हे मुनीश्वर ! गमछडो देन मे समर्थ नाही हें. ते तुम  
 इहोतो अडे अक्षोणी मेना मेरी हे, मो अडे शु-णीडी हे,  
 छसने राखविद्या, अत्रविद्या, मरीविद्या, सण आवणी हे  
 ओर सपै पुढने अणु हे तिनडे साथ मे तुमांरे नग अ  
 लता हें. वपड मे उनो भाइगा. अडे दशित घोडा  
 अथ, पाहे, अमी अणुगिनी मेना मे साथ रे व्हायो. अडे  
 ते तिनडे पनडे अडन हारे रे तिसो नाग डो अ  
 अडे साथ मे पुढन कड राडुगा. वन नमिन पन वन  
 हाग कुमेडा भाई, अडे नियसडा पुन, गवन होय  
 तो उसाय पुढ अनेडु मे समर्थ नाही. हे मुनीश्वर !  
 आगे नेमे अडा पगडम था, तेसा तिनोडीने डोडो  
 नाही था. ते मेरे तिनडे आनेमे आवे, तो वडे मा  
 देतो. अण मेरी व्हाअथा दुई हे, अडे देह मळगी  
 आवे प्राण हुआ हे. छस अण गवन साथ पुढ अने  
 डो मे समर्थ नाही. हे मुनीश्वर ! नेर अडे अभाव्य हे  
 ते तुमांरा आनता धर्म निमित्त हुआ हे. अण नेग  
 वेसा पगडम नाही. मे गवनओ इपता हो अवन मे  
 नहीं इपता उदादि देना अण गवनते इपते हे अडे  
 गडम मन उमडे अस अने हे. अण तिसीडी राडी  
 हे ते रातडे साथ पुढ डो अम गनमे वह व्हा सु  
 णी हे. हे मुनीश्वर ! वण मेरी मभयताभी नाही ग्ही

तो राजकुमार रामछ डेमें समर्थ होयेंगे. अरु उस रामछकें लेन छ तूम आवे हो, सो रोगी होय रखा हे. छमकें बिता ऐसी आय लगी हे, उसकर वह महा दुर्लभ हो गया हे. अरु अंतःपुरमें अंतर्गमें भेक रह्या हे. जाना पीना धत्यादिक बने राजकुमारकी सेवा हे सो गय छमकें पीसग गध हे, अरु में नहीं बनता बने छसकें उवा दुःख प्राप्त हुआ हे. जैसे कमल सुण्ड पीत पवन होय बन्या हे, तेसा छसका सुण होय गया हे. छसकें बुद्ध करनेकी समर्थता नही. अरु अपने रथानते पालिरकी पृथ्वीहु नहीं देखी हे, सो बुद्ध केते करेंगे! हे मुनीश्वर! वह बुद्ध करनेके समर्थ नहीं हे. अरु हमारे प्राप्त वही हे. बने छमका निस्लेग होयेगा तो हमारा छवना नही होयेगा. जैसे बल बिना मन्थी छवती नही हे. तेसे हम रामछ पीना डेसे छरेंगे. अरु बने मन्थके बुद्ध निमित्त कहे तो हम तुम्हारे साथ यज्ञ, अरु रामछ बुद्ध करनेके योग्य नहीं.

धृतीश्री योगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकृत्यै दशरथोदित पुन-  
नंनाम पंचमः सर्गः : ५

वाल्मीकीवाच. हे नारदाजना वण छस प्रकार राज्ज दशरथ कहा, तण महावीर जैसे मोह सहित अधीर्य जान पयन सुनकर, कोपसो विश्वामित्र कहत जया.

विश्वामित्रोवाच. हे राजता तुं अपने धरमका सु-  
मिरन कर. वह प्रतिज्ञा तेनें करी हे. जे तेरा होयेगासो पूरन करेगा. अरु पूरन हुआ बनतना ऐसा वृमने कहा

है, अथवा तु अपने धर्मको लागता है और वो तु सिद्ध हुआ भूगोली नहीं जानता है तो जान, परन्तु आगे रघु परामें ऐसा डोर् नहीं हुआ। जेमें अद्रभाके मडनमें शीतना होती है, अन्नि नीकसना नहीं है तेमें तु मागे कुल निरे ऐसा कतमीन नहीं हुआ अरु वो तु करता है तो कर हम कि कतमीने कहेने वो गुणे गृहने गुनेक बनवा है परन्तु वह तुमके जेगन या अरु तुम बनने गेहो मान इने रहो अरु वो कहु हेवेगा सो हम समझ लेवगे अरु वो अपने परमको तु लागता है, तो लाग दे.

वाइभीडोवाय है जागद्वाना इस प्रकार जण सपूर्ण कोचवान होकर जिधामिन जोना तम इसके कोनकर पर्यास कोट पानी उपने लागी अरु उद्रात्कि देवताणी अपको जा पर हुवे वो पे का हुवा तम वशिष्ठ मोले

वशिष्ठोवाय है रामे। छदिनाकुडे कुनमें सण परमार्थ हुआ है और तु अपने धर्मको लागता है जेके रि दुमान तौ कहा है, वो तुमाग अरथ होवेगा मो में पू रन करेगा, अथ तु ज्यो जानता है रामछुके इसके साथ है, अरु यही तेरे पुनरी रक्षा इगे जेसें सारपने अ मृतरी रक्षा मरुड करता है तेमें तेरे पुनरी रक्षा वह इगेगा अरु वह ऐसा पुरा है सो अनन क इसके समान अन किमीका नहीं साक्षात जनकी भूती है अरु धर्मा ला है, साक्षात धरमकी भूती है अरु जेमे जेतसीको हु नाहो है अरु तपकी आनी है अरु धर्मो समान जेगे अर्थीमान नाहो है अरु इसके समान कोर् सुग्गा

नाही है. अरु अख राख विद्यामें इसी जेसा कोषि नाहीं  
 है. डाहे ते जे दक्ष प्रजपतीकी दोष पुत्री थी. अेक नै,  
 अरु अेक सुभगा. सो ये कपीकों दीनी है. अरु नै, थी,  
 तीसकों दैत्यके मारने निमित्त पांचसो पुत्रको प्रगट कीये.  
 अरु सुभगाकेभी पांचसो पुत्र जयेये सोऽ सप्त दैत्यके  
 नारा निमित्त उत्पत्ती कीयेये. सो स्त्रीकां इसिके विद्यमान  
 मूर्ती धरके स्थित दुर्ध है. ताँ धरकों जतने श्रेष्ठ समर्थ  
 नहीं है. असका साथी विश्वामित्र होये, सो विश्वोडीमें का-  
 हुमो उडे नाहीं. ताते इसिके साथ तुं अपना पुत्र दे. अ-  
 उ सराय मती कर. किसीकी सामरथ नहीं जे इसिके होत  
 ते पुत्रको कछु श्रेष्ठ कही सके. धर्मकी दृष्टिके देखने ते दुःखका  
 अभाव हो जाता है. जैसे मूर्तिके उदयने अंधकारका अभाव हो  
 जाता है तेमें. हे राजन! इसिके साथ ते पुत्रको जेद  
 उहा होत. तुं धर्मिके कृपका है. अरु इसरथ तेरा नाम  
 है. सो तुं जेसे जय अपने धरममें स्थित न रहे तो  
 ओर अपने धरमकी पालना कैसे होयगी. जे कछु अेष्ट  
 पुरुष अेष्टा करते हैं. तीनके अनुसार ओर जय करते है.  
 जे तुम मरजे अपने पयनकी पालना न करेगे, तज  
 ओरमों कहा जनेगी? अरु तुमारे कुलमें अेमा उज्यहु  
 नहीं हुवा, ताँ अपने धरमके त्पागना योग्य नाहीं,  
 अरु जे तुं उनके जय कर रोकवान होये, तोभी ना मती  
 करे. ओर मूर्ची धारी काज आय कर स्थित होये तोभी  
 विश्वामित्रके विद्यमान तेरे पुत्रको कछु होये नाहीं. तुं  
 रोक मती कर. अपने पुत्रके इसिके साथ दे. अरु जे  
 न देगा, तो दो प्रकारका तेरा धन नष्ट होवेगा. अेक धन यह

हे जे रूप जावगी, तात, उगवे होवगे, तीनडा जे पुन्य  
 हे, सो नष्ट हो जवगे. अर तप, व्रत, पत्र, धान, राना-  
 दिका जे पुन्य हे, अर क्रिया हे तिरा सणडा रूप नष्ट हो  
 जवगे, जे तेग गृह निरर्थ होय जवगे. तातें मोह  
 अर गोकडों त्यागा अर अपने धरमडा मुमग्न कर. रा-  
 मछु धरिंकि साय दे हे. तेरे सण डारण मुद्रय होवगे.  
 हे राजन ! धरि प्रकार जण तेरे करना या, तप प्रथमही  
 जिया कर डेहेना या. जे जिया जिया काम धरनेडा प-  
 रिनाम दुःख होता हे. तातें धरिंकि साय तेरे पुजडे देहु.

वाङ्मनीडोषाय, हे जागृदाण ! जण धरि प्रकार पशि-  
 छु कहा, तप राजन दसरथ धरिपान होकर, जणने जे  
 अष्ट जल्य या. वाडे जुवाप कर डहत जया. हे महा  
 जाडु ! रामछुके ये आओ. तप धरिंके माय जे या  
 कर अंतर जाहीर आवने जवने वाग या. अर जलने  
 गहीत या, मो गजनी आग्या लेकर रामछुके निकट गया.  
 अक मुरत पाछे पीज आया. अर डहत जया हे देव  
 रामछु तो जडी जितामें जेडें हे. मे रामछुके वाज्वार  
 डहा जे जण अजिये, तप वह डहत हे जे अने हे. जैसे  
 डकी डही गुप हो गेहे. हे जागृदाण ! धरि प्रकार जण  
 गजने अवन डिया, तप डहा. रामछुके मची अर रड-  
 लुअे मग जुवाओ. तप सणगे जुवाप निकट ल्याये. तप  
 गज आदरगें जेमथ मुद्र नवन जुनी भौ डहत जया.  
 हे रामछुके पारि ? रामछुकी डहा दसा हे. ओ अेरी  
 दसा क्यो कर डुडि हे. सो सण कम उडें डहो.

अंतीडोषाय, हे देव ! हम डहा डहे. जेते हम डडु

द्रष्टृ आपते हैं जो सज्ज आकार और प्राण देवने मात्र हम है. और सज्ज हम मृतकहें. कहे तो जे हमारा स्वामी रामछु जडी श्रिताडों प्राप्त हुआ है. हे राजन! छुस दीनके रघुनाथछु वीरथ कर आपि हैं वीस दीनके श्रिताडों प्राप्त जये है. जज्ज उत्तम जोजन हम जे जते है, और पान करनेका पदारथ, और पेहरनेका पदारथ, और देवनेका पदारथ, कछु जे जते है, सो सुज्जदार्थ पदारथ रस सहीत, सो देवके किसी प्रकार प्रसन्न होते हमने नहीं देखा है. ऐसी श्रिताडे विषे वह लीन है, जे देवताभी नहीं. और जे देवता है तो क्रोध करता है. और सुज्जदार्थ पदारथका निराहर करताहै. और अंतःपुरमें छनकी माता, नाना प्रकारके हीरे और मनीके जूपन देती है, तो उनकोंभी डार देता है. नाहितो किसी निर्धनका देता है. प्रसन्न किसी पदारथसे होते नहीं है. सुंदर स्त्रिया जडी विद्यमान होतियां है, नाना प्रकारके जूपनहुं सहित महा मोह करने हरिया निकट होई करी लीला करनियां है, कटाक्षहुं सहित प्रसन्न करने निमित्त तोभी विपन्न बनत है. उनकी हर देवताभी नहीं. जेसो पपैया अवर जलकों देवताभी नहीं. जज्ज अंतपुर — हु विषे निकसता है. तज्ज उनकों देवी करी क्रोधवान होता है. हे राजन! अवर कछु उसकों जला नहीं लगता. किसी जडी श्रिता जिये मज्ज है. और तृपहो करी जोजन नहीं करता, क्षयात्न रहता है. न कछु पहरने, आने, पीनेकी छिन्ना रपता है. न गजकी छच्छा है, न किसी छद्रियहुंके सुज्जकी छच्छा है. महा उन्नत डीनार्थ जैका रहता है, और

नम्य कोई मुग्धदर्श पदारथ प्रकाशित ले जाते हैं तब,  
 क्रोध करता है। हम नहीं जानते जो इस विधा उसको जर्घ  
 है। ओह डोहरीमें पद्मानन इग्ने अर हाथमें मुग्ध धरी  
 मेड रहते हैं। अर जो डोह डोहा मंत्री आपडे पुडता है,  
 तब तांशें उहना है, जो तुम उसको मंपना मानते हो  
 सोई आपदा है। उसको आपदा जानते हो सो आपदा  
 नहीं है। अर नावा प्रकाशके मंगारके पदारथ, जो म्म-  
 नीय डर जानते हो, सो मग डूडे है। काहीमें मग डूने है,  
 पे मग मृग नृगाडके ननवतू है; तिनके मतर जानी मू-  
 र्ख जो हरन सो डोगते हैं, अर दुग्ध पावते हैं। हे म-  
 न्तु! उदाशिव जोतते है तो ऐमें जोवनने न, ओह उधु  
 इनके डो मुग्धदर्श नहीं जासन है। अर जो हम हासीकी  
 पारता इग्ने हैं, तो वह सुगत नाही है। उग पदारथको  
 ओही नंपुण्ड जेने से तसि पदारथके अर पदार्थी डेते हैं। अर  
 दिन दिनमें दुर्बल जैसे हो जाते हैं, अर अतःपुग्में  
 स्थितीके पास मेडता है; अर वह नावा प्रकाशकी येष्टा  
 गमछमें प्रगन इग्ने निमित्त देखावती हो धनदोबी देपके  
 प्रमंत नाही होत। अर जेमें मेधकी छुटने पर्वत सदा  
 यमान न ही होते है, तेमें आप सलायमान नहीं होते है,  
 अर जो जोवनना है तो जैसे डेहेना है, न गज मत्य है,  
 न जोग मत्य है, न जगन मत्य है, न मित्र मत्य है;  
 मिथ्या पदारथके निमित्त मूग्ध परे नतन इग्ने है। उनमें  
 मतर जानते हैं अर मुग्धदायक जानते हैं, सो अधनडा का  
 रन है, ओह उहा इहिये, जो डोह डोहके पास गज  
 अथवा पंडित जाये तिनको देपड उहता है, - वह पशु है

आराधी शशीकर बाघे हुये है. है राजन् ! जे कुछ  
 जोग्य पदारथ है तिनके देखकर उमका चित्त प्रसंग नहीं  
 होता. अरु देखके क्रोधवान होता है. जेमें पैसेया मार-  
 वाडमें आवे, अरु मेघकी छुंदहु देखता नहीं है अरु अघ-  
 वान होता है, तेसो रामछ विषयहुंनो अघवान होता है.  
 है राजन् ! धनकरके हरअवान नहीं होता, ताँनो हम जनते  
 है जे धनकों परमपद पावनेकी छिछा है. परंतु कदा-  
 मित भुजते सुन्या नाही है. अरु त्यागका अन्निमानभी  
 कदामित् सुन्या नहीं है. क्यहु गाता है, अरु जोलता है  
 तज्ज जैसे कहता है:—हाय हाय ! मैं अनाथ ! मेरे आगे  
 प्रम संसार ममुद्रमें क्यों कुजते हो. यह संसार परम  
 अनर्थका कारण है. धरिमें सुज्ज कदामित् हु नहीं है.  
 धरिते छुटनेका उपाय उहो. है राजन् ! जैसेभी कदामित  
 हम सुनते है. अरु किसी साथ जोलता नहीं है. न ह-  
 सता है, न मंत्रकि साथ, न अपने अंतःपुरनकी स्त्रीयोके  
 साथ के माताके साथ जोलता है. कोउ परम चिंतामें भजन  
 है. अरु किसी पदारथ करे आश्चर्यवान नहीं होता. जे  
 कोउ उहे जे आकारामें जाय लागे है, तिसमें कुछ कृषि है  
 तिसकों मेरे आया है; तीसकों सुनकरभी आश्चर्यवान नहीं  
 होता सज्ज जम मान देखता है. न कोउ पदार्थते उसकों  
 हरअ होता है, न कोउ पदार्थ ते उसकों रोक होता है,  
 किसी अडी चिंतामें भजन है. जो कोउ चिंता निवारनेमें  
 हम समर्थ नहीं देखते है. यह तो चिंताके समुद्रमें भजन है.  
 है राजन् ! यह चिंता हमको लग रही है; जे रामछकों  
 न पावनेकी छिछा है, न पहीरनेकी छिछा है, न जोलनेकी,



न देखनेकी छवि गली है, न डोड़ करनेकी छवि गली है।  
 ताते भूतक न हो जाये ऐसी यिता है। अरु नो डोड़ क.  
 हन है नो वृ सकवर्षा गल है, तेगे नो आवणन होहु,  
 अरु नो मुण्डों गहो। तन तीगडे जयन सुंन को  
 जोयता है। हे गलन्! केवल गमछके ऐसी यिता नहीं  
 लज्जन अरु रामुप्रकोपी ऐसी यिता लाम गली है। गमछे  
 देणकर नो डोड़ इनरी यिता हू कुनहार होये तो आगे;  
 न ही तो नडी खीना मछी डूनी रहेगे। जिमी पदाग्र्यकी  
 छवि इनके नाही गहन है, हे गलन्! अण कहा कलता  
 है! तेग पुत्र अण अवीन होय गला हें। अरे, उपरेना  
 ओदी मेडा है। ताते मोर्छ उपाय कंगे, अरुकर उसकी यिता  
 निहच होये।

**विधानिबोधाय।** हे साधु! नो गमछ अमे है, तो  
 हमारे पास रिशुमान लाओ, हम उसका हू न निहचि  
 कंगे। हे गल दशाया वृ नडा धन्य है! नो असका  
 पुत्र विनक अरु पैरागडों प्राध जया। हे गलन्! हम तरे पु-  
 ननों परम पदकी प्राधि कंगे। अपनी सन हू अ इनके मि-  
 ट लअंगे। हम परिष्ठादि नो मेडे हें, सो अके बुद्धित कर  
 उपदेश कंगे। तिमड इनको आनम पदकी प्राती होयेगी। तन  
 यह दशा तेरे पुत्रकी होयेगी नो फथर अरु मुणरनडों  
 समान ननेगे। अरु नो कछु तुमागे छरीकी प्रकृतीका  
 आचरण है, सो कंगे। अरु हृदयमें प्रेमते उदागी होयेगे,  
 ताते हे गलना उमकर तुमारा कुल हृत्कृत्य होयेगा। ताते रा  
 मछडों श्रीप्र जोलाह।

**वाहमीबोधाय।** हे आग्दाला ऐसे मुनीद्रके जयन सुन

उर राज दरारथ मंत्री अरनो करेडों इहत जयाः जे रामछु अर लछमन अर रात्रुप्रडों ले आओ जेसें हरनीडों हरन ले आवत हे तेसें ले आओ. जण राज दरारथने जेसा इहा, तय मंत्री अर नोकर रामछुके पास जयडे इहाः तय रामछु आवेसो आवत आवत राज दरारथ, अर वरिष्ठछु, अर विश्वामित्रके देजे, सो तीनोंके पर नमर होय रहे हेः अर जडे मंडलेश्वर जेडे हे. तिनने-हु गमछुडों देजे. जे रागीरने कुरा होय रहे हे. जेसें महोदयछु स्वामी इचिंकेडों आवत देजे, तेसें रामछुडों आवत राज दरारथ देपत हे. तहां रामछु आय कर राज दरारथछुके अरनपे मस्तक लगाय नमरकार दिया. ईर तेसें वरिष्ठछुडों अर विश्वामित्रके नमरकार दिया. पहुरी मनामें जे आह्वण जडे जडे जेठेये, तिनकेहु नमरकार दिये. अर जे जडे जडे मंडलेश्वर जेठेये तिनने उठकर रामछुडों प्रनाम दिया. इ राज दरारथने रामछुके गौदमें जेकसा, अर देपकर मस्तक झुंप्पा. अर पहुरा प्रेम पुलकी होय रामछुके इहा जयाः— हे पुत्र! केवण विरडता कर परम पदकी प्राप्ति नाहीं होवी हे. अर वरिष्ठछु अर हे, तिन-ध उपदेशकी सुडवी कर परम पदकी प्राप्ति होवगी.

वरिष्ठोवाच. हे रामछु ! तुम धन्य हो ! अर जडे सुर मे हो. जे विषय डूपी रात्रु तुमने छुंते हे. जे विषय अ-छुत हे, अर दुष्ट हे ताडों तुमने छुने, ताते तुम धन्यहो

विश्वामित्रोवाच. हे कमलनयन राम ! अपने अंत-रकी अपजनाहे. तिनने त्याग करके. जे इछु तुमारा आरा य होय सो प्रगट कर इहो. हे रामछु ! यह जे तुमको मोह प्राप्त

हुआ है, सो डेमें, अरु किस डारन हुआ है, अरु केताक है, सो कहो। अरु जे अण कछु गुमकों पोजित होय सो कहो, हम गुमकों तिसी पदमें प्राय डूंगे। अरामें हुअ बसित होये नही, अरु आगराजों युवा डही नाहीं सकत है, तेसैं गुमकों पीअ कदाचि न होवेगी। हे रामछ गुमा डे सपुरन हुअ नागडर देवगे। गुम सराय मत करो; जे कछु गुमारा वृथात होय सो हमकों कहो।

वाइभीडोवाय. हे आरहान! जण जैसे विधामितने कहा, सो तुनको रामछ अहुत प्रमन अपे, अरु सोककों त्याग दिया। जैसे जेपकों देवके मोर प्रमन होताहै, तेसैं विधामितके जयन गुन रामछ प्रमन हुअे। अरु अपने हृदयमें निर्या किया, जे अण मुअे वह पदनी प्राति होवेगी।

धृतिश्री योग वारिडे पैदाअ प्रकरले रामायरन अनन  
नाम पठः सर्वैः ६



वाइभीडोवाय. हे आरहान! जैसे मुनीथके जयनको रामछ गुनके अहुत प्रमन होयके जोने।

श्रीरामोवाय. हे जगवन्! जे वृथात हैसो, गुमारे विद्यमान हम डूके कहा हों - वह राज्ज दरारके धरमें जे में उपनि पाया हों, अहुरी कम करके जग हुआ हों उपनि पाया हों, अरु आगेनेह परकर खल्लवर्षादि वृत्त पाया हो, तापाडे अके दिन पडके में धरमें आया। तण भरे हृदयमें जात आय रही जे तीर्याठन डूगे अरु देवद्वारमें जपके देवनके दर्शन डूगे; तण में पिताकी आग्या से कर

गया, अरु गंगाआदि संपूरन तीर्थमें स्नान किया; अरु शानिग्राम अरु केदार आदि ढाकुरेके विधि संपुक्त दरान किया; अरु जना करके छेलां आया. किरे बिसाह हुआ, तब मेरेमें विचार आया, जे प्रातःकाळ उठे स्नान संध्यादिक कर्म करना, जहुरी भोजन करना जैसे छसि प्रकारसो केतिके दिन ज्यतीत जये, तब मेरे हृदयमें विचार उभज हुआ. सो विचार मेरे हृदयमें ज्ये ले गया. जैसे नदीके तट पर तृन लता होत हे तिसेको नदीका प्रवाह ज्ये ले जता हे, तैसे मेरे हृदयमें जे कुछ जगतकी आस्था रूप तृन लता थी सो विचार रूपी प्रवाह ले गया. तब में जगत जया जे राज करके जया हे, अरु जोगते जया हे, अरु जगत जया ही सज्ज जम मात्र हे. छसिकी पासना मूरज रजते हे. यह थावर जंगम रूपी नेता कुछ जगत हे, सो सज्ज मिथ्या हे. हे मुनीश्वर! जेते कुछ पदारथ हे, सो मनसो करेते हे. सो मनजी जगमात्र हे. अनहोता मन दुष्पदाछि हुआ हे. मन जे पदारथ सत्य जगत करे होरता हे, अरु सुज्ज दायक जगतता हे, सो मृग तृष्णाके जगवत् हे. जैसे मृग तृष्णाके देखकर मृग होरते हे, अरु हे नही; सो मृग होरत होरत थकरे पड जता हे; तो हु जल तिसेको प्राप्त नहीं होता, तैसे मूरज जव पदारथको सुष्पदाछि जगत करे जोगनेका जगतन करता हे; अरु शांति-के नही पावता हे. तैसे हे मुनीश्वर! छंद्रिषके जोग मृग तृष्णावत् हे. जगतका भारथा हुआ, जगतम भरनेको पावत हे. जगतते जगमांतरको पावता हे. जोग अरु जगत सज्ज जम मात्र हे. तिन विधि जे आस्था करते हे,

सो महा भूषण है, ऐसा में विचार करते जनता है, जो  
 सण आगमापाई है, अर्थ यह जो आने लु है, अर्  
 जते लु है, ताँ उस पदायका नारा न होय, सो पदा-  
 रथ पावने सोय है, इसी कारणों में जोगका ताग दिया  
 है, हे मुनीधरा जैसे जो कुछ अपरा रूप पदारथ जा  
 सते है, सो सण आपदा है, धनमें अगु सुख नाही  
 है, नय धनका निजोग होता है, तय इन्ही नाज मनमें  
 सुभता है, नय धनको जोग प्राय टोता है, तय राग  
 होकर नखता है, अर् नय नही प्राप्त होता तय तृष्णा  
 कर नखता है, ताँ जोग दुःख रूप है, जैसे पायकी  
 शिवामें छिद्र नही होता, तेमें जोग रूपी दुःखकी शिवामें  
 रंयकी सुखरूपी छिद्र नही होता है, हे मुनीधरा निष-  
 यकी तृष्णामें जटुत क्षयमों नखता गया हो, जैसे हरा  
 वृद्धके छिद्रमें रंयक अग्नि प चा होय, तय धुवा टोप योग  
 धोरा नखता रहता है तेमें जोगरूपी अग्नि करते मन  
 नखता रहेता है यह निषयमें सुख कउ लु नाही, अर्  
 दुःख जटुत है, धनकी धरिता इन्ही मोर्द सुभता है,  
 जैसे आर्धके उपर नून अउ पात होता है तिस कर आर्ध  
 आरुहादित होय जाती है, तिसके हेणके हून पूर पता  
 है, अर् दुःख पावता है, तेमें सुख जोगके सुखरूप  
 जनके जोगनेकी धरिता करता है; नय जोगता है तय  
 नयमें नयमातर रूप आर्धमें नय पते है, अर् दुःख  
 पावते है, हे मुनीधरा जोग रूपी सो है, सो अग्यान  
 रूपी रावमें लूने लगता है; सो आत्म रूपी धन है,  
 तिमोर्दों से नखता है, तिसके निजोगते महाधीन रहता है,

अरु इस जोगके निमित्त यह जतन करता है, सो दुःख  
 रूप है. शांतिके प्राप्त नहीं होता. अरु इस शरीरका  
 अभिमान करके यह जतन करता है, सो जोगते शरीर क्षण  
 भंग होता है. अरु आसार है. इसके सदा जोगकी  
 धृष्टा रहती है, सो मूर्ख अरु बड है. धर्मका जोलना  
 बलनाभी ऐसा है. जैसे शुके वाराके छिद्रमें पवन जता  
 है. अरु पवनके वेग कर राष्ट्र होता है; तैसे यह मनुष्य-  
 की वाचना है. जैसे थड्या हुआ मनुष्य मारवारके मारगकी  
 धृष्टा नहीं करता, तैसे दुःख जनकर में जोगकी धृष्टा  
 नहीं करत हों. अरु यह जो लक्ष्मी है सो परम अनर्थ  
 करी है. जण लग धरकी प्राप्ति नहीं होती, तण लग  
 तिसके पावनेका जतन होता है. अरु अनर्थ करके प्राप्ति  
 होती है. अरु जण प्राप्ति दुर्घ, तण सण गुनका नारा  
 कर देती है. शीघ्रता, संतोष, धरम, उदारता, कामधता,  
 वैराग, विचार, द्यारिक गुनका नारा करती है. जण ऐसा  
 गुनका नारा हुआ, तण सुख कहाँ होय. परम आप-  
 दा प्राप्त होती है. परम दुःखका कारन जनकर में धरका  
 त्याग जिया है. हे मुनीधर! धरमें गुन तण लग है, जण  
 लग लक्ष्मी नहीं प्राप्त भर्छ. जण लक्ष्मीकी प्राप्ति भर्छ,  
 तण सण गुन नारा हो जता है. जैसे वसंत ऋतुकी  
 मंजरी हरियावस, तण लग रहती है, जण लग जेठ आ-  
 पाठ नहीं आया; जण जेठ आया, तण मंजरी-  
 नर जती है. तैसे जण लक्ष्मीकी प्राप्ति भर्छ तण सण  
 गुण गुन नर जते है. अरु मधुर वचन तण लगी  
 जोलता है, जण लग लक्ष्मीकी प्राप्ति नहीं है. जण ल-

क्षीणी प्रति, अथ, तय कामनाका अभाव होय कोरे हो  
 जाता है. तेमें जत पतय तय लग रहता है जय लग  
 क्षीणताका अन्तग नही होय जय क्षीणताका सन्तग  
 होता है, तय गडा होकर कोरे दुःखदायक होय जाता  
 है तेमें यह उच लक्ष्मीसो कर बड होय जाता है है  
 अनीधग जे उधु मयल है सो आपका मूत है; अहो  
 जे जय लक्ष्मीकी प्राप्ति होनी है तय जे सुपुत्रो जोग-  
 ता है, अरु जय तिसका अभाव होता है तय तृष्णा करके  
 जाता है. जन्मो जन्मातरो पावता है. लक्ष्मीकी उन्मा  
 है सोई मूला है यह तो जय जग है यार्न जेय उप  
 जाता है, अरु नाराभी होता है जेमें जतों तय उप  
 जोते है, अरु मिा जोते है; अरु जिगुयी रिर नही  
 होवी है, तेमें जे महु मिय नही रहे अरु पुरपमें  
 शुभ शुभ तय लग है जय लग तृष्णाका पररा नाहो  
 दिया. जय तृष्णा जत तय शुभ शुका अभाव होय  
 जाता है जेमें जूमें मधुगता तय लग है जय लग  
 उनका सर्पने रार्ग नही दिया, जय सर्पने र्परों दिया तय  
 दूध है, सो मिा रूप हो जाता है

धृतीक्षीरोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरेण रामेणु वैराग्य वर्णन  
 नाम सप्तम. सर्ग. ७.

श्रीगणेशाय. है अनीधग लक्ष्मी दे जने मानही सु  
 दर है, अरु जय धृती प्राप्ति दुर्न, तय सधुनका नारा  
 कर देती है. जेमें जिाकी लता देपने मान सुदर है. अरु  
 परा जियेने मार करती है, तेमें लक्ष्मीकी प्राप्ति दुजे,  
 आत्मपत्ते मूतक होता है. अरु महावीर होय जाता है.

जैसे किसीके घरमें मितामनी छपी रही. ताकूं जोकर  
 बचे नहीं, तबलग दरद्री रहता है, तेसैं अज्ञान कर जान  
 बिना महाविन जेसा हो रहता है. आत्मानंदको पाछि नही  
 सकता. आत्मानंदको पापनेका जे भारम है, तिसके नारा  
 करनहारी लक्ष्मी है. धसिकी प्राप्तिने श्रव महा अंध होय  
 जाता है. हे मुनीधर, जण दीपक प्रणवलिप होता है,  
 तम इसका जडा प्रकारा दृष्ट आवता है; जण दीपक जुळ जाता  
 है, तण प्रकाराका अभाव होय जाता है, अरु कानरकी सम-  
 क्षता रही जाती है. जे पारंवार प्यासना उपजती थी,  
 सो रहती है; तेमें जण धंस लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है, तण  
 जडे जोग उनको भुगवाती है; अरु तृष्णा रूप कानरकी-  
 सते उपजता रहता है. जण लक्ष्मीका अभाव होता है;  
 तण पासना तृष्णाकी समक्षता छांड जाती है. तिस वा-  
 सता तृष्णा दुर्गे अनेक बन्सुको पायता है. शांतिके कल-  
 चित नही प्राप्त होता. हे मुनीधर! जण श्रसको लक्ष्मीकी  
 प्राप्ति होती है, तण शांतिके उपजवन हारे उनका नारा क-  
 रती है. जैसे जणजगी पवन नही चलता, तणजगी  
 मेघ रहता है, जण पवन सधा के मेघका अभाव हो  
 जाता है, तेसैं लक्ष्मीकी प्राप्ति हुअे उनका अभाव होता  
 है, अरु गरवकी उत्पत्ति होती है. हे मुनीधर! जे  
 सूभा होछके अपने सुपते अपनी जडाछि न कहे, सो दु-  
 र्बल है. अरु समरथ होय कोछकी अवग्धा न कहे, सणमें  
 रामछदि रामि सो दुर्बल है. तेसैं लक्ष्मीवान होकर शुभ  
 अनु सकंत होय सोणी दुर्बल है. हे मुनीधर! तृष्णा  
 रूपी जे सर्प है, तिसको जडावनेका स्थान लक्ष्मी रूपी दूध



है, मो पीपल पवनरूपी जोगडा आहार इन इरासित  
 अरावत नाही. अर महा मोहरूप उभरत हसी है,  
 तिमको हिरनेडा स्थान परंतकी अरती रूपी लक्ष्मी है. अर  
 अररूप को सूर्यरूपी उभरत है, तिराती लक्ष्मी गवी है।  
 अर जोगरूपी चंद्ररूपी उभरत है तिनका लक्ष्मी बदना  
 है. अर पैगारूप को उभरती है, तिसके नारा उरनेहार  
 लक्ष्मी गडा है. अर सागरूपी को अरमा है तिनका  
 आरजा न उरनेहार लक्ष्मी राहु है अर मोह रूपी  
 को उरुक है तिसकी पह गवा है. अर दुष रूपी  
 को गिराग्री है तिसको लक्ष्मी आरारा है अर तृष्ण  
 रूपी को लरा है, तिनको अदानन हारी लक्ष्मी मेध है.  
 अर तृष्ण रूप को तंग है तिनको लक्ष्मी समुद्र है.  
 अर जोगरूपी पिगाय है तिनका लक्ष्मी स्थान है अर  
 तृष्णरूपी जोगी लक्ष्मी उभरती है. अर अररूप  
 अरका पह लक्ष्मी वा है. है मुनीधर दे गने मान पह  
 मुद्र लक्ष्मी है. अर दुष का उरत है जे गे अरगकी  
 भाग देपने मान सुहा होवी है अर परश किले नारा  
 करेवी है, तेगी पह लक्ष्मी. अर तिरारूपी मेध न नारा  
 करेनेमें लक्ष्मी प्राप्त है. है मुनीधर पहन तिरार देपना  
 है. इसमें सुख उरुहु नाही. अर मनोरूपी मेधका  
 नारा उरनेहार पह रागदान है. अर इस मनुष्यमें अर  
 तपनगी दृष्ट आवे, जण लगी लक्ष्मीकी प्राप्ति नहीं जण.  
 जण लक्ष्मीकी प्राप्ति जण, तण गुण अर नारा पावते है,  
 है मुनीधर लक्ष्मी ऐसी दुषरापक जन क उरकी धरज  
 जेने लाग दीनी है. पह जोग तिरारूपी है. जेसे नि-

गुरी प्रगट होय छीप जती हे. तेसें पह लक्ष्मीहु प्रगट होय छिप जती हे. जेसे जल हे सो छीम हे, तेसें लक्ष्मी-की जती हे, सो मूरुप जडके आमुपने हे. धरुओ छलरूप जलकर भेने त्याग किया हे.

धृतिश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे लक्ष्मी तिरस्कार  
वर्णनं नाम अष्टमः सर्गः ८.

रामोपाय. हे मुनीधरा जे पाउं देखकर प्रसंग होता हे, मा जेसें पाउं उपर जलकी अंड न रहती हे, तेमें लक्ष्मी छीन अंग हे. जेसें जलके तरंग होयके नारा पा-वता हे, तेसें लक्ष्मी होयके नारा पामती हे. हे मुनीधरा पवनको रोडना उडिन हे, सोभी डोड रोडता हे; अरु आ-काराका मूरुन करना अति उडिन हे, सोभी डोड मूरुन कर अरे; अरु वीजणीको रोडना अति उडिन हे, सोभी डोड रोडें हे, पंगु लक्ष्मी पायके डोड स्थिर होये सो मांही. जेसें सराजके सिंगसो डोड मार नही सकता; अरु आ-रथीके उपर जेसें मोती नही डहरता हे; जेसें तरंगकी गांड नही परत हे; तेमें लक्ष्मीहु स्थिर नही रहत हे. लक्ष्मी वीजणीका अमडा जेसी हे, सो होतीहु हे, अरु भीटनी जती हे, तेसें लक्ष्मी पायके आपके अमर हुआ आहे, सो महा मूरुप जलतना; अरु लक्ष्मीको पायकर जे जो-गकी वांग करत हे सो महा आपदाके पाव हे, तिनको उपनेने भरना अष्ट हे. उपनेकी आशा मूर्ध करते हे, सो अपने नाराके निमित्त करते हे; अरु जे ग्यानवान पु-रुष हे, उनकी परम पदने स्थिति हे, अरु तिसार तृष

पाये है, विनका छवना सुभके निमित्त है. तिनके छवनेने  
 औरका कामकी सिद्ध हो जाता है. तिनका छवना वि-  
 तामनिही नाहं भेष्ट है. अरु छवनाके सदा भोगकी छ-  
 र्जा रहती है. और आत्मपदमें विभुषण है. तिनका छवना  
 किमी सुभके निमित्त नहीं है, वह मनुष्य नहीं, गहंभ है,  
 अरु जेमें वृद्ध, पंथी, पशुका छवना है, तेमें तिसकाभी  
 छवना है. हे मुनीवर! जे पुरुष सास्त्र पढ़या है, अरु  
 पापने जेग पद नहीं पाया, तग सास्त्र हमको नारूप है.  
 जेमें औरका भाग होता है, तेमें पदनेकाभी भाग है. अरु  
 पदके नित्याग अग्या करता है. और निमदा आरको नहीं  
 मूलन करता; तो यह नित्याग अग्याहु नार है. हे मुनी  
 वर! मन जे है सो आत्मगुरु है. सो मनमें जे राति  
 न आछ, ताँ मनहु छिन्नो भाग है. अरु जे मनुष्य रा-  
 शीके पाया है, हमका अभिमान नहीं त्यागत है, तो  
 यह राशीके भाग है तो यह राशीके छवना  
 तगही भेष्ट है, जग आत्मपदमें पाये, अन्यथा छसका  
 छवना ध्वंसे है. और आत्मपदकी प्राप्ति अभ्यास कर टोवी  
 है. जेमें बल पृथी ते अंते ते निकगता है, तेमें अभ्यास  
 कर आत्मपदकी प्राप्ति होती है. अरु जे आत्मपदमें वि-  
 भुषण होय, आशाकी क्षमीमें इसे है, सो सगाममें नरकत  
 रहते हैं. हे मुनीवर! संभारके तग अनेक आपसों,  
 उत्पन्न होय नष्ट होय जते हैं, तेमें यह लक्ष्मीहु जनभग  
 है, छसको पाछे जे अभिमान करत है सो मूर्ख है.  
 जेमें निष्ठी सुवाके पदनेके निरे परी रहती है, तेमें  
 लक्ष्मी छनो नरकमें जारनेके निरे, धरमें परी रहती है.

जैसे अंगणमें लज्जा नहीं उड़ता, तैसे लक्ष्मी बली जाती है। जैसी जिनकांग लक्ष्मी अर्थात् शरीरों पापकर जे भोगकी वृष्णा करत है, सो महा मूरख है, सो मृत्युके मुजमें परे हुअे छवनेकी आशा करत है। जैसे सफेके मुजमें मैदुके पकटना है, सो मरच्छत्रो जावनेकी धम्मा करत है, याने सो महा मूरख है; तेमें यह पुरुष मृत्युके मुजमें परेहुआ भोगकी वांछा करता है, सो महा मूरख है, अर्थात् श्रुवा अवरया नदीका प्रवाहकी नांछ बली जाती है, जलुगी वृदावरया प्राप्त होती है, तामें महादुःख प्रगट होत है, अर्थात् शरीर जर्जर होय जात है; फिर मरता है, धके जिनहु मृत्यु धनको बिसारत नहीं है, सदाई देणत रहता है, जैसे महा कामी पुरुषको सुंदर स्त्री मिलती है, तज्ज देसको देणनेका त्याग नहीं करता, तैसे मृत्यु मनुष्यको देणे बिना नहीं रहता है, हे मुनीवर! मूरख पुरुषको छवना दुःखके निमित्त है, जैसे वृद्ध मनुष्यको छवना दुःखका कारण है, तैसे आम्हानीका छवना दुःखका कारण है, इसको जलुत छवनेतें मरना अष्ट है, जे पुरुषने मनुष्य शरीर पापकर आत्मपद पावनेका जतन नहीं किया, तिनने आपेई आपका नारा किया है, सो आत्म हत्यारा है, हे मुनीवर! यह माया जलुत सुंदर जासती है, अर्थात् आम्हरे नाराई पावती है, जैसे वृद्धों अंदरतें पुना पाप जात है अर्थात् जाहीरतें जलुत सुंदर दिखता है, तेमें यह पुरुष जाहीरतें सुंदर दृष्ट आवता है, अर्थात् अजने धनको वृष्णा पाप जाती है, जे पदारथों सत्त अर्थात् सुखरूप जातकर सुखके निमित्त आम्हरे करत

है, सो मुष्पी नहीं होता है, जैसे नदीमें राफेका पकडो पाउ इतना आहै, सो पार नाहीं उतगता है, वह मूरजता करे कुनेधगा, तेमें जे संसाके पदाथके सुपरूप बन कर आशय करता है, सो मुष्प नहीं पावता. संसार स मुद्रमैध रूप बनता है, हे मुनीश्वर! यह संसार इंद्र धनुसी नाई है, जेमें इंद्र धनुषा बहुत गंडा दृष्टिमें आवता है, अरु गिने अरु मिदी कछु नहीं होती है. तेमें यह संसार अम मात्र है. हमनें गुपकी उरजा र अपनी व्यर्थ है. इस प्रकार जगतके में अस्त रूप बनकर निर्गमना होनेकी उरजा करी है.

धृती श्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे ससार सुष्प निषेध पार्जन नाम त्रयमः सर्गः

श्रीशमोवाच. हे मुनीश्वर! यह जे अस्कार उद्व ह्रवा सो अस्तानने महा दुष्ट है. अरु पही प्रथम रातु है. इसने भेदकें जार प्राप्त किया है, अरु भिया है. जेते कछु दुःख है, निनकी आनी अहंकार है. जन्म लग अहंकार है, तमपगी पीडाकी उत्पत्तिका अभाव उदाचित् नहीं होता है. हे मुनीश्वर! जे कछु में अहंकारसों ज बन किया, अरु पुन्य किया है, अरु जे लिसा दिया है. जे कछु किया है, सो सज व्यर्थ है. इसजर परमाथकी सिद्धि कछु नहीं है. जैसे राजमें आहुती धरी व्यर्थ हो जाती है तेमे जनत हों. अरु जेते कछु दुःख है ति नडा पील अहंकार है. इसका नाश होवे तज उखान होवे. ताते पुन इसका उपाय मुजके उहो. शुशकर आ

अंकार निश्च होवे, हे मुनीश्वर! जे वस्तु मलय हे, तिसाका त्याग  
 करनेमें दुःख होता हे, अरु जे वस्तु नारायण अरु तम करके  
 द्विपती हे, तिमके त्याग करनेते आनंद हे, अरु शांतिरूप जे  
 संद्रमा हे तिमके आच्छादन करनेका अंकार रूपी राहू  
 हे. जन्म राहु संद्रमाका ग्रहन करता हे, तन्म इसाकी शी-  
 तलता अरु प्रकारा दपं जाती हे, तेसें जन्म अंकार उप-  
 नता हे, तन्म समता दप जाती हे. जन्म अंकार रूपी  
 मेघ गरुडके परपता हे, तन्म तृष्णा रूपी डोटिक लता  
 पड जाती हे, सो उद्यमित् घटत नांही. जन्म अंकारका  
 नारा होवे, तन्म तृष्णाका अभाव होवे. जेसें जन्म लग  
 मेघ हे तन्मलग जिगुगी हे. जन्म निविकरूपी पवन असे,  
 तन्म अंकाररूपी मेघका अभाव होवें जिगुगी नारा  
 पावती हे. जेसें जन्म लगी तेज अरु आनी हे, तन्म लगी  
 दीपका प्रकारा हे; जन्म तेज आवीका नारा होता हे, तन्म  
 दीपका प्रकाराणी नारा पावता हे. तेसें जन्म अंकारका  
 नारा होवे तन्म तृष्णाकाणी नारा होता हे. हे मुनीश्वर!  
 परम दुःखका कारन अंकार हे. जन्म अंकारका नारा  
 होवे, तन्म दुःखकाणी नारा होय जन्म. हे मुनीश्वर! यह  
 जे में रामहें, गो नही, अरु छत्राणी कछु नहीं. कहे-  
 ते जे में नहीं तो छत्रा किसहुं होवे. अरु छत्रा होर्  
 तो मही दोर् जे अंकारके रहित पदकी प्राप्ति होवे. जेसें  
 जनींद्रके अंकारका उत्थान नही हुआ, तेसा में होठ,  
 ऐसी मुञ्जे छत्रा हे. हे मुनीश्वर! जेसें उभयके गडा  
 नारा करता हे, तेसें अंकार जानका नारा करता हे. जेसें  
 पाराधी जलसो पछीके अंधन करता हे, तिसाकर पंछी दीन

हो जाते हैं, तबमें अहंकाररूपी पाराधीन तृष्णारूपी बल  
 उरके अर्के बंधन दिया है, जिसके महा दिन हो गया है,  
 तबमें सुखी अंतके इनके सुखरूप बलके अंगके आता  
 है, फिर सुखके दिने बलमें बंध जाता है; तीसरा बंधन  
 कर दिन हो जाता है, तबमें वह पुरुष विषय भोगकी छंटा  
 किये तृष्णारूपी बलमें बंध होय महा दिन हो जाता है,  
 ताते है मुनीश्वर! सुखके मोर्छे उपाय उहो, अस कर  
 अहंकारका नारा होवे, जल अहंकारका नारा होवेगा तब में  
 परम सुखी होवेगा, तबमें वध्यायन पर्यन्ते आश्रयते  
 उभय हस्ती परे गरजते हैं, तबमें अहंकाररूपी जे वध्या-  
 यन पर्यन्त है, तिसके आश्रयते मनरूपी हस्ती नाना प्रकारके  
 संकष्य विकल्परूपी राज्ज करते है, ताते मोर्छे उपाय उहो  
 असकर अहंकारका नारा होवे, जो अहंकार अकल्पानका  
 मूल है, तबमें मेघका नारा करनहार शरत्काल है; तबमें  
 वैरागका नारा करनहारा अहंकार है, मोहादिक विकार-  
 रूप जे राषं है, तिनके रहनेका अहंकाररूपी बिल है;  
 अर अहंकार कामी पुरुषकी नाछ है, तबमें कामी पुरुष  
 कामके सुगतता है, अर कुलकी भाषा गेमें उरके प्रभन  
 होता है, तबमें तृष्णारूपी तागा है; अर मनुष्यरूपी कुलके  
 मनका है, सो तृष्णारूपी तागेके साथ पगेवे है, सो  
 अहंकाररूपी कामी पुरुष गेमें उरता है अर प्रभन होता है,  
 है मुनीश्वर! आत्मारूपी सुरज है, तिसका आवरण कन-  
 हार मेघरूपी अहंकार है, जल आनरूपी सूर्य उदयका काल  
 आवे, तब अहंकाररूपी पादरका नारा हो जाता है,  
 अर तृष्णारूपी पारकाभी नारा होवे, है मुनीश्वर!

यह निश्चय कर, मैं दृष्ट्या है, जे जहां अहंकार है, तहां सभ आपदा . आप प्राप्त होती है. जेसँ समुद्रमें सभ नदी आपके प्राप्त होती है, तेसँ अहंकारमें सभ आपदाकी प्राप्ती है. तानें सोई उपाय कहे असकर अहंकारका नाश होये.

धृतीश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे अहंकार कुराशा  
 वलुर्न नाम दशमः सर्गः १०

श्रीशमोवाच. हे मुनीश्वर! यह जे भोग मित है, सो काम क्रोध, लोभ, मोह तृष्णादिक दुःखकर बल्यी भाव हो गया है. अर महा पुरुषके जे मुन वैराग्य, विचार, धैर्य, संतोष, तिनकी ओर नही जाता. सर्वथा विषयकी गिरदमें उडता है. जेमें मोरका पंख पवनके लागे डहरता नही, तेसँ यह मित सर्वथा भटकत किरता है, अर धसिकों लाभ कुछ प्राप्त नही होता. जेमें आन द्वार द्वारमें भटकत किरता है, तेसँ यह मित पदारथके पावने निमित्त भटकत किरता है, ओर प्राप्त कुछ नही होता. अर जे कुछ प्राप्त होता है तिमकरी तृप्त नही होता. अंतर तृष्णा रहई आवत है. जेसँ पिछरेमें बज बरिमें, तामों वह पूर्ण नही होता, ओं जे छिद्रते बल निकस जाता है; अर पिछरा शून्यका शून्य रहेता है. तेसँ मितकों भोग पदारथ प्राप्त होता है, तामों संग्रह नही होता है. सदा तृष्णाई रहत है. हे मुनीश्वर! यह मितरूपी महा मोहका समुद्र है, तिसमें तृष्णारूपी तरंग उडतेई रहते हैं; सो क्वाचित् स्थिर नही होता. जेसँ समुद्रमें तिच्छन भेगकर तरंग होता है, सो तइके जृच्छकों लागता है,



अरु जलमें लहे जते हे, तेमें चित्तूपी समुद्रमें  
 विरल लहेई जते हे, वासनारूपी तंगडे भेगनो भेग जे  
 अत्यन्त रजभाव था, सो अजायमान हो गया हे. सो छसि  
 चित्तभों में महा दीन हुआ हो. जैसे जलमें पयां पथी  
 दीन हो जाता हे, तैसे चित्त धीन, अरु नामनारूपी  
 जलमें लधा हुआ में दीन हो गया हु. जेमें मृगके समू  
 हने जूली मृगी अकेली जेवत होती हे तेमें में आत्म  
 पदते जूझा हुआ चित्तमें जेवत हुआहो. हे मुनीश्वर,  
 यह चित्त सदा झोझवान रहता हे, क चित्त स्थिर नहीं  
 होता. जेमें क्षीर समुद्र महराजन करके झोझवान हुआ था,  
 तेमें यह चित्त सन्धुप निरुपकर जेद पानत हे. जेमें पिंजरेमें  
 आया सिंह पिंजरेमें झिरता हे, तेमें वासनामें आवाचिच स्थिर  
 नहीं होता. हे मुनीश्वर! छसि चित्तने भेरेजो हुने हु अर्थां हो.  
 जैसे जाली पवनभों सुझा तृन हुने हु जल परता हे, तैसे  
 चित्तूपी पवनने सुझको आत्मानद ते हु अर्थां हे. जैसे  
 सुके तृनको अगल जरायत हे, तेमें भोगे चित्त जतरता हे.  
 जैसे जमीते धूम निकसते हे, तैसे चित्तूपी जमीते  
 तृष्णारूपी धूम निकसता हे, तिसङ्ग में पञ्च हु ज पा  
 यत हो. यह चित्त हस नहीं जनता हे. जैसे राजहस  
 दूध अरु लस भिनेको गिन गिन जतरता हे, तिमकी नाथ में  
 आत्मामें अग्यान करके झेकसा हो गया हो. तिमको गिन  
 नहीं करी राकता हो. जण आत्मप. पापनेका जतन  
 भरत हो तय अग्यान प्राप्त करने नहीं देता. जेमें नदीका  
 प्रवाह समुद्रमें जाता हे, तिसको पहार सूधे खपने नहीं  
 देता हे, अरु समुद्रकी ओर जाने नहीं देता हे. तैसे मु

अज्ञो विच आत्माकी ओरते रोकता है. सो परम शत्रु है. है मुनीश्वर ! ताते सोई उपाय कहो, असकर विचरूपी शत्रुका नारा होये. यह तृण्यु मिरा जोलन करती रहती है; जैसे मृतक शरीरको स्नान अरु धाननी जोलन करते है, तेमें आत्माके स्नान विन में मृतक समान हों. जैसे बालक अपनी परछाँहीको बैताल मानकर बपको पावता है, सो ब्रह्म विचार करके समरथ होता है, तथ बैतालका ब्रह्म पावता नही. तेमें विचरूपी बैतालने मिरा स्पर्श दिया है. तिसकर में बपको पावता हों. तात तुम सोई उपाय कहो; असते विचरूपी बैताल नष्ट होय जये. है मुनीश्वर ! अभ्यास करके मिथा बैताल विचमें दृढ हो रह्या है, तिसके नारा करनेको में समर्थ नही हो सकता हो. अग्रनमें जेठना सोपी में सुगम जनता हों, ओर अलडे जडे पर्वतके उपर जना, सोपी में सुगम मानता हों. अरु जडे जलूका चूरन करता यह-पी में सुगम मानता हो. परंतु विचका अतना महा कडीन है जेसा में जनता हों. विच सदाई अलापमान सुभाववारा है. जैसे धंभके साथ बांध्या हुआ जानर उदासित स्थिर होय नहीं जेठता, तेसे विच वासनाके मारे स्थिर उदासित् नही होता है. है मुनीश्वर ! जडा समुद्रका पान कर जना सुगम है, अरु अजिडा बरछन करनेकी सुगम है, ओर सुमेरुका उन्नधन करना सोपी सुगम है; परंतु विचको अतना महा कडन है; जे सदा अणुरूप है. जैसे समुद्र अपना द्रवसुभावका उदासित् नही त्याग करता, अरु महा द्रवीयुग रहता है, तिसकर

नाना प्रकारके तरंग होने से, तेमें चित्तभी अथवा स्वभावको  
 कभी न त्यागता है. नाना प्रकारकी वासना उपजती रहती  
 है, और भावकी नाश अथवा है, महा विषयकी शिखा  
 पता है. इतु पचासकी प्राप्ती होती है, पञ्च अक्षरों  
 महा संयम रहता है, जेमें सुन्दरके उदय हुआ दिन होता  
 है, और अस्त हुआते नारा पावता है, तेमें चित्तके उदय  
 हुआ निरोधीकी उत्पत्ती है, और चित्तके क्षीन हुआते क्षीन  
 हो जाती है. हे मुनीश्वर! कोटि समुद्रमें जल गभीर है,  
 तिसमें अडे सर्प रहेते हैं, सो जल कोटि समुद्रमें प्रवेश  
 करे, तब वह सर्प उनको काटता है, तिनको जित अट जाता  
 है, तिसका अडा हुआ पावता है. सो दृष्टात शुनीपि.  
 चित्तभी समुद्र है; और वासनाभी जल है, तिसमें  
 क्षीण भी मय है. जल उन उनके निम्न जाता है, तब  
 जोगभी सर्प उनको काटता है, तब तृणाभी जित  
 पसता है, तिसमें मरते हैं. हे मुनीश्वर! जे भागको  
 मुष्णभी जनका चित्त होता है, सो जोग हुआ  
 रूप है. जेमें तृणसो आर्ष आरुद्रित होय जाती है  
 तिसको देवका मूष्ण मृग आनेको चोरता है, तब आर्ष  
 में गिर पता है, और हुआ पावता है. तेमें चित्तभी  
 मृग जोगका सुष्ण जनकर जोगनेको लगता है, तब  
 तृणाभी आर्षमें गिर पता है, और जन्मातर हुआको  
 पुगता है. हे मुनीश्वर! वह चित्त कण्डु अडा गभीर  
 हो जाता, और जल जोगको देवता है, तब तिनकी  
 और लगी गिर पता है, जेमें गीष पत्नी आकाशम  
 अट किरता है, सो जल पृथीपर मामको देवता है, तब

तहाँ तें आप पृथ्वीपर जेड़ता है, अइ भांसकों जेता है, तेसैं यह चित्त कम्पी निराखा उडता है, ज्येण विषय देखे, तज्य आराडित पाव विषयमें गिर जता है; अइ यह चित्त वासनारूपी सज्जमें सोबा रहता है; अइ आत्म पदमें जगता नहीं. इस चित्तकी जलमें में पकराया हो; सो केसी जल है, तामें वासनारूपी सूत्र है, अइ संगारकी सत्यतारूपी अंधी है, अइ जोगरूपी तिसमें सुन है; इसकों देखके में इरया हो. कणहु पातालमें, कणहु आकारामें वासनारूपी जेवरीकर धडी जंनकी नाध जख्या हों. ता ते है मुनीश्वर। तुम सोध उपाय कहो, इसकर चित्तरूपी शत्रुकों छुतो. अज्य सुनकों किसी जोगकी उच्छा नहीं. अइ जगतकी लक्ष्मी सुनको विरस जासती है. जेसैं अंद्रमा पादरकी धरिछा नाहीं करता, अइ अतृभासिमें आच्छादित होय जता है. तातें में जोगकी धरिछा नहीं करता, और जगतकी लक्ष्मीकों में नहीं आहाता, अइ भैरा चित्त है सो परम शत्रु है. है मुनीश्वर। महा पुरय जे छतनेका जतन करते है, सो ज्ये चित्तको छुते, तज्य परम पदकों पावे; तातें सुनकों सोध उपाय कहो, जिस कर मनकों छुतौ. सज्य दुःख इसके आश्रयतें रहने है. जेसैं पर्वतपर मन है सो पर्वतके आश्रयतें रहता है.

धृतीश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे चित्त दोषात्प्रवर्णन नाम अष्टादशः सर्गः ११.

श्रीशमोवाय. हे अक्षरन्। जैतन्यरूपी आकारामें जे तृष्णा रूपी शत्री आछ है, तामें काम, क्रोध, लोण, मोहादिक

पुषड जियरते हे. जण सानरूप सूर्य उदय होवे, तम  
 तृष्णारूपी गनडा अमान होय वदये, जण गत्र नष्ट जाई,  
 तम मोहादिक उदुंभी नष्ट हो वतते हे. जण मूर्खता उ  
 दय होता हे, तम परकृ विंशु होय पिगरे वतता हे; तेम  
 संतोषरूपी रसकों तृष्णारूपी उभयता मुकानती हे. जहुरी  
 तृष्णा डेमी हे; जेमे रूय जनमे पिगायनी अपने परि  
 वार महित दिग्त गहती हे, अर प्रमन होवी हे सो  
 वन अर पिशाच डेसा हे, आत्मपदमे रूय जे मित  
 ओ जमानक रूय जन हे, तिममे तृष्णारूपी पिगायनी  
 हे. अर मोहादिक उमका परिचार हे, जिनडो साथ सेक  
 दिवती हे. हे मुनीश्वर मितरूपी पर्यत हे; तिसके  
 आशने तृष्णारूपी नदीका प्रनाह अचता हे. अर नाना  
 प्रकारके सकलरूपी तंगडों पगाने हे. जेसे मेधकों देणकर  
 मोर प्रमन होता हे, तेमे तृष्णारूपी मां जे गडुपी  
 नेधकों देणके प्रमन होता हे, तात परम हु अका मूल  
 तृष्णा हे. जण मे किसी मनोपदि युनडा आशय कता  
 हो, तम तृष्णा तिमने नाग ड देती हे. जेमे सुंर  
 साग्गीको युहा तोगी डगता हे जेमे मनोपदि युनको  
 तृष्णा नारा कती हे. हे मुनीश्वर ! साने उदृष्ट पदमे  
 निगलयेका मे वतन कता हो. तम तृष्णा जिरानने  
 नही देनी. जेसे जलमे इसा हुआ पजी आकारामे  
 उदयेका वतन कता हे, परतु उड नही सकता हे, तेसे  
 मे अनात्मप. मे आत्मप.के प्रम नही हो सकता. श्री,  
 पुत्र, अर कुटुण, तिसने जल पिछाड हे, तामे इसा  
 हो ओ निकस नहीं सकता. सो आशारूपी क्षत्रीमे जध्या

हुआ, ऊपहो उरधको जता हों; ऊपहु अधःपात होता हों; सो घटी यवधी नाँउ भरी गती है. जैसे छंद्रका धनुष्य मेधमें होता है, सो जडा अरु जहोत रंगसों जस्था है, परंतु मध्यमें रून्य है, तैसे तृष्णा मलिन अंतःकरणमें होती है, सो जडी है, अरु अुनरूपी रंगमें रंगी है. देपठे भाव सुंदर है. परंतु इसमें कारण सिद्धि कष्टु नहीं होती. है सुनीधर! तृष्णारूपी मेध है; तिसमें दुःखरूपी अंध निकसते हैं. अरु तृष्णारूपी काशी नागनी है; उसका स्पर्श तो कोमल है, परंतु जिअकर पूरन है; तिसके असेमें मृतके हो जता है. अरु तृष्णारूपी जादुर है, सो आत्मरूपी मूरखके आगे आवरण करता है. ज्ञान ग्यानरूपी पवन नीकसे तज तृष्णारूपी जादुरका नाश होवे; अरु आत्मपदका साक्षात्कार होवे. अरु ग्यानरूपी कमलको संकोच करनहारी तृष्णारूपी निशा है; अरु तृष्णारूपी महा जमानक कागी रात्र है, इसकर जडे धीरजवानभी जयभीन होते है. अरु नेनवारेकोणी अंध कर डारती है; ज्ञान यह आवती है, तज वैराग अरु अभ्यासरूपी नेत्रको अंध कर डारती है; अर्थ यह जो सत्य असत्यको विचारमें नहीं देती. है सुनीधर! तृष्णारूप अकनी है, सो संनोपादिक पुत्रको मार डारती है. अरु तृष्णारूपी इंद्रा है. निरामे मोहरूपी उन्मत्त हस्ती गरजते है. अरु तृष्णारूपी समुद्र है, तिसमें आपदारूपी नदी आप प्रवेश करती है. तानें सोई उपाय मुजको कहे, इसकर तृष्णारूपी दुःखमें छटो. है सुनीधर! अजीसोभी ऐसा दुःख नहीं होता. अरु इंद्रके पत्नकरनी ऐसा दुःख नहीं होता,

ऐसा दुःख तृष्णाकृत होता है, जो तृष्णाके प्रहारसो  
 धार्यि जडे दुःखको पानता है, अरु तृष्णारूपी दीपक  
 पयां जगता है; तिसमें संतोषादि पन्गिये जर जतै है,  
 जेसो जलमें मरछी रहती है, सो जलमें डूबी, रतीआली  
 वेसेजो देण भास जनकर वह सुखमें लेती है; ताते उसका  
 अर्थ सिही कुछ नहीं होता; तेमें तृष्णाकी जे कुछ प  
 दारथ देणती है, तिसके पाम उडती है, अरु तृप्ति  
 किमी इरी नहीं होती, अरु तृष्णारूपी अक पानती  
 है, सो कणहु कुछ उड जाती है, अरु स्थिर कणहु  
 नहीं होती; तेमें तृष्णाकी कणहु किमी पदार्थको, कणहु  
 इसीको गृहन कृती है, परंतु स्थिर कणहु नहीं होती,  
 अरु तृष्णारूपी वानर है, सो कणहु इसी अरुधपर, कणहु  
 इसीके उपर जता है, स्थिर कणहु नहीं होता है, जे  
 पदार्थ नहीं प्राप्त होता, तिसके निमित्त जतन कृता है,  
 तेमें तृष्णाहु नाना प्रकारके पदार्थका गृहन कृती है,  
 अरु जोगका तृन कदाचित नहीं होती, जेमे धृनकी  
 आहुतीका अजी तृती नहीं पावे तेमें जे पदार्थ प्राप्ती  
 योग्य नहीं है, तिसके ओगकी तृष्णा होवती है, गातीको  
 नहीं पानती है, जे सुनीशर। तृष्णारूपी उन्मत्त नहीं है,  
 तिममें जे अहावा प्ररुप, ताको कहाका नहा ले जाती है  
 कणहु तो पहारकी जागुमें से जव; कणहु निरामे से जव,  
 परंतु धनको से हिरती है, तेमें तृष्णारूपी नहीं है, सो  
 सुत्रको से हिरती है, अरु तृष्णारूपी नहीं है, धर्ममें  
 वासनारूपी अनेक तंग उडते है, कदाचित भिडते नहीं  
 है, अरु तृष्णारूपी नरती है, अरु जगतरूपी अजाडा

तिसने लगाया है. तिसको शिर जिया कर दैयती है, अरु भूरुप जो प्रमंन होते है. जैसे मूर्खके उदय हुये सूर्यभूषी कमल जिलके जिया आता है, तैसे भूरुप तृष्णाको दैयकर प्रसन होते हैं. तृष्णाभूषी वृद्ध स्त्री है; जे पुरुष छसका लाग करता है, तज पाके पाके लगी किरती है, कजहु छसका लाग नहीं करती. अरु तृष्णाभूषी जोर है, तिस साथ छवभूषी पशु जाये हुये है—तिसकर जमते किरते है. अरु तृष्णा दुष्टनी है; जज सुज युनको दैये, तज तिनको मार डारती है. तिसके संजोगते में दीन हो जाता हो. जैसे पपैया भिधको दैयकर प्रसन होता है, अरु छुंठ अहन करन लगता है; ओर भिधको जज पवन से जाता है, तज पपैया दीन हो जाता है. तैसे तृष्णा शुज युनका नारा करती है; तज में दीन हो जाता हो. हे मुनीश्वरी तृष्णाने मुक्के दूरने दूर आख्या है. जैसे मूके तृनको पवन दूरते दूर डारता है, तैसे तृष्णाभूषी पवनने मुक्के दूरते दूर आख्या है. आत्म पदने दूर पख्या हो. हे मुनीश्वरी जैसे जोरा कमलके उपर जाता है; कजहु नीचे पेठना है. कजहु आसपास किरता है; अरु स्थिर नही होना; तैसे तृष्णाभूषी जंजरा संसारभूषी कमलके नीचे उपर किरता है. कदाचित् छहरता नहीं है. जैसे मोतीका जाम होता है, तिसने अनेक मोती निकसने है, तैसे तृष्णाभूषी जासने जगतभूषी अनेक मोती निकसने है, तिसकर जोबीका मन पूरन नहीं होता है. तैसे तृष्णाभूषी मन पूरन नहीं होता. दुःखभूषी रतनका तृष्णाभूषी छुप्या है. तैसे अनेक दुःख रहेने है. ताते मोर्छ उपाय कहे,



उसकर तृष्णा निवृत्त होवे, यह तृष्णा वैरागसों निवृत्ति  
 पावी है, और किसी उपाय कर निवृत्ति नहीं होवी है,  
 जैसे अंधकारका नारा प्रकाराकर होता है, और किसी उपाय  
 कर नहीं होता; तेमें तृष्णाका नारा और उपायसों नहीं  
 है, अरु तृष्णारूपी हल है, सो अुनरूपी पृथीके ओर उगता  
 है; अरु तृष्णारूपी सता है, सो अुनरूपी गसके पीवी है,  
 अरु तृष्णारूपी धू है, सो अंतःकरनरूपी बलमें उछनके  
 मधीन करती है, हे सुनीधर! तृष्णारूपी ननी है, सो  
 परमा कालमें बदवी है, फिर धरत बदवी है, तेमें बल  
 धृष्ट जोगरूपी बल प्राप्त होता है, तब हाँकर बदवी है,  
 बल जोगरूपी बल धरत बदता है, तब रूपके छीन हो  
 जाती है, हे सुनीधर! धंस तृष्णानें मुक्तको छीन डिया है,  
 जेमें मुझे तृप्तको पवन उगता है, तेमें मुक्तको उगवी है;  
 ताते सोष्ट तृप्त उपाय कहे, जिसकर तृष्णाका नाश होवे,  
 अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवे, अरु दुःख नष्ट होवे, अरु  
 आनंद होवे.

धृतीश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे तृष्णार गारुडी प-  
 लुंनं नाम द्वादशः सर्गः १२.

श्रीशोभाय. हे सुनीधर! यह जो अभंगणरूप रा-  
 शीर बलतमें उत्पत्ति पाया है, सो बडा अलाम्बररूप है,  
 सदा विकल्पान भास, मल्ल कर पूगन है; सदा अप-  
 वित्र है, धनकरके में कुछ अर्थ मिद्धि होना नहीं देखता,  
 ताते तिन विकाररूप शरीरकी धृष्टा में नहीं गपता, यह  
 शरीर अस्त है, न तल्ल है, यह योगि बड है न अतन्व

है, जैसे अग्नि के संयोग कर लोहा अभिषत होता है; सो ज्ञाता भी है; परंतु आप नहीं ज्ञाता, तेमें यह देह न जड है, न चैतन्य है, जड धंसि कारनतें नहीं, जे धंसतें कारजनी होता है, अरु चैतन्य धंसि कारनतें नहीं, जे धंसकों आपतें ज्ञान कछु नहीं होता; तातें मध्यम जावमें है, कहें चैतन्य आत्मा धंसमें व्याप रहा है; सो लोह अमीकी नांछि ज्ञानत हौं, अरु आपतें तो अपवित्ररूप अरिध, मांस, रधिर, मूत्र, विष्टा करी पूरन, अरु विकारवान, ऐसी जे देह है सो दुःखका स्थान है, अरु धंसके पारतें हर्षवान होवी है, अरु अनिष्टके पापें रोडवान होती है; तातें ऐसे शरीरकी सुत्रकों धंसि नहीं, यह अज्ञान कर उपजता है, हे सुनीधर, ऐसे अमंगलरूपी शरीरमें जे अहंपन कुरता है; सो दुःखका कारन है, यह मसारमें स्थित होकर नाना प्रकारके राख करता है, अरु नाना प्रकारकी तृष्णी कल्प नहीं धरता है, अरु अहंकाररूपी मिथ्याज्ञा देहमें रहा हुआ, अहं, अहं, करता है; सुप कदाचित नहीं रहता है, हे सुनीधर! जे किसीके निमित्त राख होवे सो सुंदर है; अन्यथा राख व्यर्थ है, जैसे जबके निमित्त दोलका राख सुंदर होता है; तेमें अहंकारके रहित जे पद है, सो शोभनीक है; और, राख व्यर्थ है, अरु शरीररूपी नौका, जोगरूपी जलतीमें पड़ी है, धंसकों पार होना कठिन है, जल जैरागरूप जल पदे अरु प्रवाह होवे; अरु अज्वासरूपी पतवासीका जल होवे; तज संसारके पाररूपी किनारेपे पहुंचे, अरु शरीररूपी जेज है; अरु संसाररूपी समुद्र और तृष्णारूपी

बलमें पर्या है, अरु षड प्रताह है. अरु जोगरूपी  
 तिसमें मगर है; मो गरीररूपी जेडाके पार लगने नही  
 देता. अरु शरीररूपी जेडाके साथ जोगरूपी नायु लगे,  
 अरु अम्बासरूपी पतवारिका जय लगे, तब शरीररूपी  
 जेडा पारके पावे. हे मुनीश्वर! एत पुरधने जेमे जेडेके  
 उपाय कर आपके गंगा समुद्रमें पावे दिया है, सो सुभी  
 जये है. अरु एतने नही दिया, मो परम आपके  
 प्राप्त होता है, मो धंस जेडे कर उठे कुयेछगे. जेमे जे  
 डामे छिद्र होवे; अरु वानेने बल प्रयोग कर आवे, तब  
 यह दुग जाता है. अरु तिसमें जो मरुछ है सो पाछ  
 जाता है; मो छहा शरीररूपी जेडा तृष्णारूपी छिद्र  
 है; तिस कडे छहा मसार समुद्रमें दुग जाता है. अरु  
 जोगरूपी मगर धसिने जाता है. अरु यह आश्चर्य है  
 जे जेडा अपने निकट नही जासता है. अरु मनुष्य सो  
 मूर्खता करके आपके जेडा मानता है, अरु तृष्णारूपी  
 छिद्र कडे दुग पावत है अरु शरीररूपी वृक्ष है,  
 तामे बुल्लरूपी गाया है. अरु अगुरी धसिने पत है,  
 अरु बंधा धमका यल है; अरु वासना धसिनी बड है,  
 अरु सुषु ६ य धसिने दुग है, अरु तृष्णारूपी धुंता  
 है; मो शरीररूपी वृक्षके जात रहता है. बल धसके  
 सेन कुल लगे है, तब नाराडा ममय पाता है, कंगन  
 जे मृत्युके निकटवर्ति होता है. पहुरी शरीररूपी धसके  
 दास है; अरु गिटे धसका गुछा है. अरु तत कुल है;  
 बंधा स्थल है, अरु कर्म बगड पड जाता है. जेमे  
 वृक्षने बल निकसता है; सो विक्रम है. तेमे बल शरीरके

द्वार निकलता रहता है, अरु तृष्णाद्वेषी निपतें पुरन  
 सरपनी रहती है. अरु जे कामनाके लिये इस धृष्टका  
 आश्रय लेता है; तब तृष्णाद्वेषी सरपनी तिसके उभरी  
 है; तिस निपतों वह मरी जाती है. हे मुनीवर! जैसा  
 जे अभंगणद्वेषी शरीर धृष्ट है, तिनकी धृष्टता मुझे  
 नहीं है. यह पशु दुःखका शत्रु है. जन्मलग यह  
 पुत्र्य अपने परिवारमें लक्ष्मी हुआ है, तब लगी मुक्ति  
 नहीं होती; जब परिवारका त्याग करे तब मुक्ति होवे.  
 देह, धर्म, मन, बुद्धि, धर्मका परिवार है; धर्ममें जे  
 अहंभाव है, वाका त्याग करे तब मुक्ति होवे, अन्यथा  
 मुक्ति नहीं होती. हे मुनीवर! जे भेट पुरुष है, सो  
 पवित्र स्थानमें रहने है; अपवित्रमें नहीं रहते. सो अ-  
 पवित्र स्थान यह देह है; इसमें रहेनेवाराभी अपवित्र  
 है, अरु अस्थिद्वेषी यह धर्ममें लडते है; वामें बुद्धि,  
 मूल्य, विद्या इसमें शीघ्र लगाया है; अरु मांसकी कहे-  
 गीत करी है; अरु अहंकारद्वेषी इसमें स्वप्न रहता है,  
 अरु तृष्णाद्वेषी स्वप्ननी इसकी स्त्री है; अरु काम,  
 शोध, मोह, लोभ इसका जेठा है. मात्र अरु विद्यादिक  
 करी पूजन भस्मा हुआ है. जैसा जे अपवित्र स्थान,  
 अभंगणद्वेष जे शरीर, तिनका जे अंगीकार नहीं करता;  
 यह शरीर रहे याव भत रहे; इसके माथ भरे जन्म कष्ट  
 प्रयोजन नहीं. हे मुनीवर! जेक जडा धर है, तिसमें  
 जडे पशु रहने है; सो धूमके उड़ावते है. सो अहमें कोटि  
 जाता है, तब सिधमें मारने लगता है, अरु धूमनी उ-  
 सके उपर गिरती है. सो शरीरद्वेषी जडा अह है, तिसमें

छद्मिवाङ्मयी पशु है, जन्म छवि अहमें पैडता है, तब  
 जडी आपदाके शत्रु होता है, तात्पर्य यह है छिममें अ  
 हंसाय करता है, तब छद्मिवाङ्मयी पशु गो निरपङ्गु  
 सिधमों भागते है; अरु तृष्णाङ्मयी धुड छसिके गलीन  
 कृति है, हे मुनीश्वर! ऐसा शरीरका नै अगीकार नही  
 करता, इसमें सदा इतल पड़े रहते है; तिममें जान  
 डूपी मेषदा प्रयोग नही होती, ऐसा नै शरीरङ्मयी अह  
 है, तिसने तृष्णाङ्मयी यडी स्त्री रहती है, गो छद्मिवाङ्मयी  
 द्वारमो देखांती रहती है, गो सदा इतलपना कृत रहती है तिसकर  
 ममत्वादि रूप मषदाका प्रयोग नही होता तिस धर्ममें  
 अ, सत्वा है, जन्म उनके उपर विद्याम करता है, तब  
 इधुके मुण्य पाता है; परंतु तृष्णाका नै परिवार है सो  
 विद्याम करने नही देता गो मुमुक्षुङ्मयी सत्वा है, जन्म  
 उममें विद्याम करता है, तब काम क्रोधादिक रदन करने  
 है, अरु अ यडी स्त्रीका नै परिवार, काम क्रोन, लोभ  
 मोह, छिन्ना है सो लोहाछ देते है विद्याम करन नही देत,  
 हे मुनीश्वर! ऐसा दुःखका मून नै शरीरङ्मयी अह है  
 तिसकी छिन्ना मैंने त्वाग दीनी है, यह परम दुःख है  
 नहाग है छगनी छिन्ना मुत्रमें नही है, हे मुनीश्वर!  
 शरीरङ्मयी जूरा है; तिसमें तृष्णाङ्मयी डौवान्नी आप  
 स्थित जर्ह है, गो जेमें डौवान्नी नीच पदारथके पास  
 उरती है; तेमें तृष्णाङ्मयी डौवान्नी लोभङ्मयी मलिन प  
 दारथके पास उरती है, जहुगी तृष्णा जदरीडी नाह रा  
 रीरङ्मयी जूराको द्विवाणी है, जूराके स्थित होने देती नही  
 अरु जेमें उन्मत्त हरित नीचमें इम लता है, अरु नि

इस नहीं राखता, अरु जेदवान होता है, तेमें अग्यानरूपी  
 भद्र कर उन्मत्त हुआ अथवा शरीररूपी शीघ्रमें इत्या है,  
 सो निकम नहीं राखता है; पर्याप्त दुःख पावता है, जैसे  
 दुःख पावनेवाग शरीर है, तिसका में अगीकार नहीं करता,  
 हे मुनीश्वर! यह शरीर अस्थि, मांस, इधिर करी पूरन  
 है, सो अपवित्र है, जैसे हरतीके कुन सदाई हलते हैं,  
 तेमें इसको मृत्यु परा हिलाता है, उछु कालका विद्वन्म  
 है, पंगु मृत्यु इसका आस कर सेवेगा, ताते में इस  
 शरीरका अगीकार नहीं करता हों, यह शरीर कृतघ्न है;  
 जोग्य, भुगता है; अरे अर्थियोंको प्राप्ती करता है; पंगु मृत्यु  
 धनकी सम्पादन नहीं करता है, जन्म अथ इसीको छांड  
 कर परलोक जाता है, तन्म अकेलाई जाता है; और रा-  
 गीको छोड़े देता; अथ धर्मके सुख निमित्त अनेक जतन  
 करता है; पंगु मंगमें सदा नहीं रहेता, ऐसा न्त कृतघ्न  
 शरीर है, धराका जेने मनसों त्याग दिया है; सो यह दुःख  
 देनहारा है, हे मुनीश्वर! और आश्वर्य देओ,—जे वाईका  
 जोग करता है, तिसके साथ अलता नहीं; जेमें धूर कर  
 मारग जासनेने रहे जाता है; तेसे यह अथ जन्म अलने  
 लगता है; तन्म शरीर साथ क्षोभवान होता अरु वासना-  
 रूप धूर संकुडत अलता है; पंगु दिखता नहीं जे कहा  
 गया, जन्म परलोक जाता है, तन्म अडा कष्ट होता है;  
 अतेने न्त शरीरके साथ पररा दिया है, हे मुनीश्वर! यह  
 शरीर छिनजग है, जेमें जलकी छुंद पत्रके उपर गिरती  
 है, सो छिनभाव रहती है; तेमें शरीरभी छिनजग है,  
 जैसे शरीरमें आस्था करनी, सो भूरभता है; अरु जैसे

शरीरके उपर उपकार करनाही दुःखके निमित्त है, मुझ  
 कुछ नहीं है. और जो धनाध्य शरीरमें जो लोग  
 भुगतते है; परंतु स्वभावया अरु मृत्यु दोनों होने हैं.  
 इसमें विधाता कुछ नहीं. शरीरका उपकार करना, और  
 लोग भुगतना, जो तृप्ता इतके विरहा दुःख का कारण है.  
 जैसे कौन नागनी यममें अपने हमको धर पावे.  
 तोडि आपका जगों नष्टके शरीरों; तेनें अपने  
 दुःखकारणी नागनी साथ मज्जाई करी है म  
 भरेगा, जो जो नाशना है. इसका निमित्त जो लोग  
 भुगतनेका स्वभाव करना जो मुष्णता है, जैसे पतन का  
 आता है, अरु जगते तेसों यह शरीर नाशना है  
 इसको प्रीति करनी, जो दुःख का कारण है. गण उन  
 इसकी आम्थामें पाये दुःख है, इसीका नाम कोडि नि  
 ग्धानेही दिया है. जैसे कोडि निम्ना मृग हाता है  
 जो मरनेके वनकी आम्था त्यागता है, जो मरने  
 समते है, है मुनीयग वीरगनीका = इ दीपका प्रसंगनी  
 आता स्वता रिपता है. परंतु हम शरीरका आत्मियत  
 नहीं दिखता है, जो वहा तें आता है, अरु वहा स्वता  
 है. जैसे समुद्रनें सुदसुद दीपकता है, अरु मित्र स्वते  
 है, तिसकी आम्था करने तें कुछ लाभ नहीं, तेनें यह श  
 शरीरकी आस्था करनी योग्य नहीं; यह अत्यन्त नारायण है,  
 स्थिर कदाचित्त नहीं होता है. जैसे जिन्दगी स्थिर नहीं  
 होती, तेसा शरीरकी स्थिर नहीं रहता; इसकी में आस्था  
 नहीं करता, इसका अविमान मेंनें लागता है. जैसे कोडि  
 शूडि तृप्तों त्याग देता है; तेसें जेनें अहममता त्यागी है.

हे मुनीश्वर! जैसे शरीरको पुष्ट करना, सो दुःखके नि-  
 मिष है. धर्म शरीर किसी अर्थ आपने जोग नहीं; ब-  
 लावने जोग है. जैसे लकड़ी बलाअपे अिन ओर काममें  
 नहीं आती है, तेसे यह शरीरभी बड अर गुंगा बला-  
 वनेके अर्थ है. हे मुनीश्वर! एन पुश्यने काष्ठरूपी शरी-  
 रको सानामि कर बलाया है; तिनका परम अर्थ मिद्ध बय-  
 है. अर एनने नहीं बलाया, सो परम दुःख पाया  
 है. हे मुनीश्वर! न में शरीरी हों, न भरा शरीर है, न  
 धर्मिका में हो, न यह भेग. है; अण मुक्तको कामना कठि  
 नहीं है. मैं निरासी पुश्य हों. अर शरीरसाथ मुक्तको  
 प्रयोजन कछु नहीं है. ताने तुम सोध उपाय कहे; ए-  
 मकर में परम पदकी प्राप्ती पाई. हे मुनीश्वर! एस पु-  
 श्यने शरीरका अभिमान त्यागा है, सो परमानंदरूप है.  
 ओर एसको देहका अभिमान है, सो परम दुःखी है.  
 जेने कछु दुःख है, सो शरीरके संयोग करी होते हैं.  
 मान, अपमान, जरा, मृत्यु, रंण, क्षाति, मोह, शोक,  
 आदि सर्व विकार देहके संयोग कर होते है. एसको देह-  
 में अभिमान है, तिनको विकार है. ओर सण आप-  
 दाणी तीरुको प्राप्त होती है. जैसे समुद्रमें नदी आप्य प्र-  
 पेश करती है, तेसे देहाभिमानमें सर्व आपदा आप्य प्र-  
 पेश करती है. एसको देहका अभिमान नहीं, सो पुश्-  
 पनमें उत्तम है, अर अंदना करने जेअ्य है; जैसेको  
 भरा नमस्कार है, अर सर्व सपदाभी तिसको प्राप्त होती  
 है. जैसे मान सगेपरमें सण हंम आप्य रहने हैं, तेसे  
 बहा देहाभिमान नहीं रही, तहा शरय संपदा आप्य रहती



है। हे मुनीश्वर! जेमें अपनी छायामें जानक जैतान  
 सपता है अरु निम्न, उष पाता है वन्य वसिष्ठो वि  
 आग्नी दासी देवी - तन जैतानम अमान हो जाता है,  
 तेमें अनातक सुत्रों अहकाररूपी पिरायने शरीरमें  
 एक आग्नी पतार के ताते गेष्ट उपाय है, असाकर अ  
 हकाररूपी पिरायन नारा होवे अरु आग्नीरूपी दासी  
 देवी है मुनीश्वर। अथवा ना सुत्रों अनातक अग्नि  
 वा, मो अहकाररूपी पिरायन वा तिसरे अनात शरीरमें  
 आस्था उपशु है जेमें जीव तें अम अकु होता है  
 कि अकु तें अकु होता है तों अहकार शरीरकी  
 आग्नी होती है हे मुनीश्वर। अथ अहकाररूपी पिरायने  
 शरीर अवनतों दीन वि है जेमें पातकों छायामें जैतान  
 जागता है अरु दीनताओं अम होता है तेमें अहकार  
 रूपी पिरायने सुत्रों दीन दिया है मो अहकाररूपी पि  
 राय अविचारने गिद्ध है अरु निम्न वि है अभावको  
 प्राप्त होता है जेमें प्रसार अथवा नारा हो जाता  
 है तेमें निम्न वि है अहकार नारा हो जाता है हे  
 मुनीश्वर। जे शरीरमें आस्था अग्नी वा मो शरीर न  
 लडा प्रवाहकी नाह स्थि नही होता जेसा अण है जेमें  
 पिण्डुरी। अमका स्थि नही होता, अरु अथवा नगरकी  
 आस्था अर्थ है तेमें शरीरकी आस्था अग्नी अर्थ है हे  
 मुनीश्वर। जेमें शरीरकी आस्था अहकार करते है  
 अरु अगतके पानथ निमित्त अवन करते है सो महा  
 मृग्य है जेमें स्वप्न मिथ्या है तेमें अह अगत मिथ्या  
 है तिसको शान अवनको जो अमका अवन करता है सो

अपने अंधनके निमित्त करता है, जैसे धुरान युद्ध बनाती है, मो अपने अंधनके निमित्त है, अरु पतंग दी-पकड़ी छच्छा करता है; सो अपने नाराके निमित्त है; तैसे अज्यानी जे अपने देहका अभिमानकर जोगकी छच्छा करता है, मो अपने नाराके निमित्त है, हे मुनीश्वर में तो इस गरीरका अंगीकार नहीं करता; इसी शरीरका अभिमान परम दुःख देनहार है, इससे देह अभिमान नहीं रहा, तिससे जोगकी छच्छाणी न रहेगी, ताते में निरारा हो; अरु परम पदकी छच्छा है; इसके प्राये-त अहुमी संसार समुद्रकी प्राणी न होवे।

धृतिश्री योगवासिष्ठे चैराग प्रकश्ये, देह नैराशय वर्णनं  
नाम त्रयोदशः सर्गः १३

शमोपाय. हे मुनीश्वर! यह संसार समुद्रमें जे जन्म पाया है, तामें पाषाण अवस्था छसके प्राण भाई है, सोनी परम दुःखका मूल है; तिममें परम दीन हो जता है; अरु जेते ओखुन इसमें आप प्रवेश करने है, सो इहत हों, आ-राजता, मूर्च्छता, छच्छा, अपजना, दीनता, अरु दुःख अंतप, जेते विकार छसके आप प्राप्त होते है, यह पा-लावस्था महा विकारवान है; अरु पाषाण पदारथकी ओर धारता है, जेक परशुका ग्रहन कर दुसरीके आहाता है; स्थिर नहीं रहता है; फिर ओरमें लग जता है, जैसे जानर इहके नहीं चिहता, अरु जे डोड़ लपर कोष करता है, तब अंतरते पस्था जलता है; अरु जाने जाने छच्छा

उरता है; तिसकी प्राप्ति नहीं होती सदा तृष्णामें रहता  
 है; अरु जिनमें जगतीन हो जाता है; रातिमें प्राप्ति नहीं  
 होता; किं महा नीन हो जाता है. जैसे उद्वीजनम हस्ति गा  
 उमो पाधरा दुग्धा दीन हो जाता है; तेमें यह अतन्त्र  
 पुरण जानक अन्या उ दीन हो जाता है. जो कछु छंदा  
 उरता है, गो बियार भीन है तिमकर दु प्य पाता है  
 अरु मूढ गूग अन्या है. तिमकर कछु सिद्धि नहीं टोपी,  
 नेह पदाग्धरी प्राप्ति होती है. तिममें जिनमात्र मुष्ठी रह  
 ता है; जहरी तपने लगता है. जेमें तपनी पृथीप  
 लल शरिरे तप अक दिन नीनन होती है किं इसी प्रा  
 उमो तपनी है तेमें उद्वी तपना रहता है. जैसे रावकि  
 अंतमें सूर्य पीद्य होता है, तिमकर उनुकादि कष्टानन टोता  
 है, तेमें यह उरवे। म्बुपके अमान कर जानानस्थामें कष्ट  
 होता है. है सुनीधर। जो जाणक अवस्थाकी भगती उरता  
 है, मोषी मुष्ण है. इतिने जो यह निनेक रहित अवस्था  
 है; अरु महा अपवित्र है ओर सदा पदाग्धरी ओर पाप  
 ता है जेभी मूढ अरु नीन अवस्थाकी मुष्ठी छंदा नहीं.  
 उम पदाग्धरो देपना है तिसकी ओर धावना है अरु  
 दिन दिन अपमानके पावता है. जेमें कूक दिन दिनमें  
 छुकी ओर वावता है, अरु अपमान पावता है, तेसे  
 जाणक अपमानके प्रात होता है. अरु गापके सदा  
 भावा अरु पिताअ जन रहता है जावका महा जष रहता  
 है, अरु आपने जडे जाणकामी जष रहता है अरु पशु  
 पछी दुका जष रहता है. है सुनीधर। जेसी दु पदुप  
 अवस्थाकी मुष्ठी छंदा नहीं. जेसा श्रीका नेन अथल है,

अरु नदीका प्रवाह व्ययल है, धरातली मन अरु पात्रक  
 व्ययल है, ऐसे वदनता हों; अरु सप्त व्ययलता पात्रकते  
 कनिष्ठ है; पात्रक सप्तते व्ययल है, जेसा मन व्ययल है,  
 तेसा पात्रकभी व्ययल है, मनका रूप पात्रक है, है मुनीश्वर।  
 जेसे वरपाका अित्त ओक पुरुषमें नही दहरता, तेसे पात्र-  
 कका अित्त ओक पदारथमें नही दहरता, जे छग पदारथ  
 कर मेरा नारा होवेगा, ऐसा विचारणी तिसकों नही, अरु  
 छसकर मेरा इक्षान होवेगा सो विचारणी नही, जैसेछ  
 परधा बेष्टा करता है; अरु सदा दीन रहेता है; अरु सुप्त  
 दुःख छच्छा होय करके तपायमान गहता है; जेसे जेक  
 आपाठमें पृथी तपायमान होती है, तेसे पात्रक तपताछ  
 गहता है, सांतीछों कदाचित् नही पावता, अरु जप विद्या  
 पढने लगता है, तप अरुसो जग जप भीत होता है, जेमें  
 कोछी जभकों देपके जप पावे, ओर अरुकोछों देपके जेसे  
 सर्प जप पावे, तेमें जपभीत हो वता है, जप रागीरको  
 कोछी कष्ट आप प्राप्त होता है, तप जडे दुःखकों प्राप्त होता  
 है, पंगु दुःखके निवारणमें समर्थ नही होता; अरु  
 राहनकोंभी समर्थ नही, अंतरते पश्या जलता है; अरु  
 सुप्तते कछु जोल राइता नही, जेसे जूयछ कछु नही जोल  
 राइता, अरु दुःखका निवारण नही करी राइता, न संहार  
 कर राइता, अंतरते पश्या जलता है; तेमें पात्रक युंग  
 युं लुआ दुःख पावता है, है मुनीश्वर। जेसी जे पा-  
 लकरी अवरथा, तिसकी जे स्तुति करता है, सो मूर्ख है,  
 यह तो परम दुःखरूप अवरथा है; छसमें विवेक विचार  
 कछु नही, ओक जानिके पाता है, अरु इदन करता है

ऐसी औद्युत रूप अवस्था मुझे नहीं सुहाती है, जेमें मिश्रणी अरु लकड़े छुद छुद स्थिर नहीं रहते तेमें जा-लकड़ स्थिर कदाचित् नहीं होता, हे मुनीश्वर! यह महत् मूर्ध्नि अवस्था है; कपड़ु कहता है,—हे पिता! मुझे कपड़ु कपड़ा बुनी है; कपड़ु कहता है,—मुझे अंग्रेजा डितार है, जे सज मूर्ध्नाके जयन है, ताते ऐसी मूर्ध्नि अवस्थाके में अंग्रेजाके नहीं करता, जेमें दुःखका अनुभव जासकेका होता है, सो हमारे मुपनेमेंनी नहीं आया; तात्पर्य यह जे जाजावस्थाने जा दुःख है, यह जाजावस्था औद्युतका जूजन है, सो अज युन करे सोजती है, ऐसी नीम अवस्थाके में अंग्रेजाके नहीं करता, जगदी स्तुति इनी मो मूर्ध्ना है, जसमें युन कोडिनी नहीं है.

इतिश्रीभाग वारिष्ठे वैराग्य प्रकरणे जाजावस्था वर्णनं नाम अष्टमः सर्गः १४

शमोवाच, हे मुनीश्वर! दुःखरूप जाजावस्थाके अनतर जे स्तुवा अवस्था आती है, मो नीचे तें हाथी अठनी है; सोपी उत्तम गिनवेके निमित्त नहीं है, अधिक दुःख दावक है, लज स्तुवा अवस्था आती है, तज कामरूपी पिराम्य आय लगता है, मो कामरूपी पिराम्य स्तुवा अवस्था रूपी गरिजेमें आय स्थित होता है, अित्त किंपता है, अरु छत्रामें पसागता है, जेमें सूर्यमुष्पी कमल पिली आता है, अरु पंचुमीनके पसागता है, तेमें स्तुवा अवस्था रूपी मूर्ध्नि उच्य होता है, तज नावा प्रकारकी छत्रामें

दुःखी है, अरु कामरूपी पिशाच धरकों श्रीमें डर देता  
 है, तहा परा दुःख पाता है, जैसे कोठिमें अन्निके कुंडमें  
 डरी दिया होय, अरु वह दुःख पावे, तेसो कामके परा  
 हुआ दुःखको पाता है. हे सुनीश्वर! जो कुछ भिक्षा  
 है, सो मज्ज शुद्धा अवस्थामें आपके प्राप्त हुआ है. जेमें  
 धनवानको दैनिके निर्धन सज्ज धनकी आशा करते है, तेमें  
 शुद्धा अवस्थाको दैनिकर सज्ज दोष आप छंठे होये है.  
 अरु जो लोगको सुखरूप जनकर भोगकी धंष्टा करता  
 है, सो परम दुःखको डारन है, जैसे मल्लका घट लक्ष्मा  
 हुआ दैनिके मात्र सुंदर लगता है, परंतु ज्य उतका पान  
 करे, तज्ज उन्मत्त होय जल्प; तिम उन्मत्तता कर दीन हो  
 जाता है; अरु निरादरको पावता है. तेमें यह भोग  
 दैनिके मात्र सुंदर जासता है; परंतु ज्य धनको सुगतता  
 है, तज्ज तृष्णाकर उन्मत्त हो जाता है; अरु पराधीन  
 होय जाता है. हे सुनीश्वर! यह काम, क्रोध, लोभ, मोह,  
 अहंकार, ये सज्ज जो बोर है, सो शुद्धाशुभी शत्रुको  
 दैनिकर कुंठने लागता है; अरु आत्मनानरुपा धनको  
 बोर से जाता है, तिसकर यह दीन होना है. यह पुरुष  
 आत्मानंदके भिन्निगकर दीन हुआ है. हे सुनीश्वर! जेसी  
 जो दुःख दिनहारी शुद्धा अवस्था, तिसका में अंगीकार  
 नही करता; अरु शान्ति जो है, सो बिच विधर करनेके  
 लिपे है; सो बिच शुद्धा अवस्थामें विषयकी ओर धायता  
 है जेमें जान लक्षके ओर जाता है, तज्ज उमको विषयको  
 मंजोग होता है, सो विषयकी तृष्णा निश्च नही होती;  
 अरु तृष्णाके भावे जेमें जन्मांतररूप दुःखको पावता

है. हे मुनीश्वर! ऐसी दुःखदायक श्रुति अवस्थाही मु  
 जको भ्रमण नहीं है. हे मुनीश्वर! जेते कछु दुःख है  
 सो सब श्रुति अवस्थामे आवक प्राम होता है. काम,  
 क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, अपनता धियाविक जे दुःख  
 है. सो सब श्रुति अवस्थामे स्थित होते है. जेसे प्रथम  
 अवसरे सब योग आव स्थित होते है, तेसे श्रुतिवस्थामे  
 सब उपद्रव आव गिते है: ओ? जिनजग है जेसे  
 अशुभिकी अमका दोषके मिट जाती है, जेसे समुद्रमे  
 तमब होते है, अरु मिट जाती है, तेसे श्रुति अवस्था  
 दोषके मिट जाती है. जेसे स्वप्नमे डोह की विकारक  
 छत्र जाती है, तेसे अज्ञानक श्रुति अवस्था छत्र जाती  
 है. हे मुनीश्वर! श्रुति अवस्था अही परम शक्ति है  
 जे पुरुष अंस शक्तिके शक्ति जने है सो धन्य है। अरुके  
 शक्ति काम, क्रोध है, जे अरुके छुट्या है, मो वरुके प्रहार  
 करणी छेदान जेग्या, जे अरुके जाग्या हुआ है, मो  
 पद्य है हे मुनीश्वर! श्रुतिवस्था है जनेमे तो मुक्ति है  
 परतु अरुके तृप्ति करके नगरीत है. जेसे वृत्त जे  
 जेमे तो मुक्ति होय, अरु अरुके मुक्ति लया हुआ है  
 तेसे श्रुतिवस्था जे जेके निमित्त जगत करणी है सो  
 जेग आवगत गमनीय है. अरुत यह जे जगजग अद्विप  
 अरु विषयक मज्जेग है, जगजग अविचारित जग  
 लयता है, अरु जग निजग हुआ तप दुःख होता है  
 ताने जेग करके मूष प्रसन होते है अरु उन्मत्त होत  
 है, तिमके गादी नहीं होती, अरु अरुके सब तृप्ति  
 गहती है. अरुके विचारी आराधित गहती है. जग अरु

वनिताका भिन्नेग होता है, तब निसके समरन करके बलता  
 है, जैसे जनका अरुच्य अगन करके बलता है, तैसे शुवा-  
 वस्थामें प्रष्ट भिन्नेग करके शुव बलत है, जैसे उन्मत्त  
 हस्ती साकर करके अंधन पाता है, तब स्थिर होता है;  
 कहु ब्यथ नही राउता; तैसे कामरूपी हस्ति है, तिसके  
 साकररूप शुवा अवस्था अंधन करती है, अरु शुवावस्था-  
 रूपी नदी है, तिसमें अरुचा रूपी तरंग उडते है, सो कदा-  
 चीत सातिके नही पाते हैं, अरु है मुनीधर! यह शुवावस्था  
 अडी दुष्ट है; कोउ अडा अद्विधान होवे; अरु सदा निर्मल  
 प्रमन होवे; अने गुन करके संपन्न होवे; तिराकी अद्विक्ताभी  
 शुवावस्था मलीन करे डारती है, जैसे निर्मल बलकी  
 अडी नदी होवे; अरु ब्यथ अगपाडाव आवे, तब मलीन  
 होय ज्ञवे; तैसे शुवावस्थामें अुदी मलीन होय जाती है,  
 है मुनीधर! शरीररूपी अरुच्य है, तिसमें शुवावस्थाका अल  
 प्रगट होता है; सो अलिष्ट होता है, तब अितरूपी अंगग  
 आवे जेडाता है; सो तृषणा रूपी तिसकी मुगंद करके उन्मत्त होता  
 है, अरु सज्ज निमार बूझ जता है, जैसे ब्यथ प्रज्जल पवन  
 अजना है, तब रूपे पत्रके उडाप ले जता है; अरु  
 गहने नहीं देता, तैसे शुवावस्था आवती है तब, पैराग,  
 गंतोपादिक गुनका अभाव करती है, अरु दुःखरूपी क-  
 मयका शुवावस्था रूपी मूर्ख है, शुवावस्थाके उदयते सज्ज  
 दुःख प्रदुक्षित होय आते है, ताते सज्ज दुःखका मूल  
 शुवावस्था है, जैसे मूर्खके उदयते मूर्खरूपी कमज अलील  
 आते है, तैसे अितरूपी कमज, संसाररूपी पंचुरी, अरु सत्यता-  
 रूपी मुगधक अलीली आता है, अरु तृषणा रूपी ओरा



तिसपर आव जाता है, अरु विषयकी सुनंध सेता है, हे मुनीधर ! गंगागङ्गी गङ्गी है, तिसमें ग्नुवावस्थाइधी तागगन प्रसारते है; डारन यह जे रागीर ग्नुवानग्था इंगी मुखोभित होता है, अरु ग्नुवावस्था रागीरको न नंगी भाग कडे हो आती है, जैसे धानके छोटे पृच्छ हरा तपनगे रहे, न्यनग डमको कूख नही आया; न्यन कूख आता है, तप रूपनेको लगता है; अरु अंन के उन परिपत्र होते हैं, तप अनके छोटे पृच्छ न्यनग भावको पाने है, डमकी हरिपानन नही गह राङ्गी, तेसे न्यनगी ग्नुवानी नही आर, तपवगी रागीर मुंदर डोमय गहता है; न्यन ग्नुवा आर तप रागीर कू हो नतता है, डेर परिपत्र होकर छीन हो नतता है, अरु पृद होता है; ताने है मुनीधर ! ऐसी दू पकी मूलरुप ग्नुवा अवस्था है तिसकी सुनडो छरछा नही, जैसे समुद्र जडे नलकुर पून है; तंगको पसारता है, अरु छिन्तता है तोडवी मपौदाका त्याग नही करता, छन्धरकी आग्वा मपौ दामे गहेनेकी है, अरु ग्नुवावग्था तो ऐसी है, जे रात्रकी मरनदा, अरु लोडकी मपौदा भिटके मनी है, अरु निनको अपना जिया नही गहेता, जैसे अवकागमें पदारुपका ग्यान नही होता, तेमें ग्नुवावस्थामें शुभ अशुभका त्याग नही होता, असुडो जियार नही रखा तिसको साति रहति होरे, सध आवी तापमें नरथा रहता है जैसे नलपिना मरछको साति नही होती, तेमें जियार जिना पुरुप रीत नलता रहेता है, न्यन ग्नुवावस्थाइध रान आती है, तन डाम पिशाच आपके मरनता है, तिसकर

धसिकों वही संकल्प जाते हैं, जो कौण्डि कामी पुरुष आवे,  
 तिसके साथ में वही अर्था करों. हे मित्र! वह ऐसी सुंदर  
 है' अरु ऐसे जिसके कटाच्छ है' सो किस प्रकार भोको प्राप्त  
 होय. हे मुनीश्वर! छह छच्छा साथ वह सदा नरताई रहती  
 है: जैसे मरु बलकी नदीको हेम मृग दोरता है; अरु  
 बलकी अप्राप्ति कर बलता है; तेसे कामी पुरुष विषयकी  
 वामना करके बलता है, अरु शांति नही पावता है.  
 हे मुनीश्वर! मनुष्य जन्म उचम है; पंगु जिनके अजाग्य है,  
 तिनको विषयते आत्मपदकी प्राप्ति नही होती. जैसे  
 अतामनि कोष्ठको प्राप्त होवे, सो तिसका निराहर करे और  
 उसको जाने नही, और अरी दृषे, तेसे जो पुरुष मनुष्य  
 शरीर भावकर आत्मपद नही पाया, सो जडे अजागी  
 है; अरु मूर्खता करके अपने छवनेको व्यर्थ जोय अरता  
 है. अरु ग्नुषान अपरमाने परम दुःखका क्षेम अपने  
 निमित्त जोता है; अरु अते विकार ग्नुषावस्थामें है, सो  
 सब आयके धनको प्राप्त होते है. मान, मोह, मद छत्यादि  
 विकार करके पुरुषार्थका नाश करता है. हे मुनीश्वर! जैसे  
 ग्नुषावस्था जडे विकारको प्राप्त करती है. जैसे नदी जा-  
 बुसों अनेक तरंग प्रसारती है, तेसे ग्नुषावस्था अिचके  
 अनेक कामको उठावती है. जैसे पंप्पी पंप्प कर बहुत  
 उठता है; जैसे सिंह बुन्दके जलमों पशुको मारनेको दोर-  
 ता है, तेसे अिच ग्नुषावस्था कर पिक्षेपकी और धावता  
 है. हे मुनीश्वर! समुद्रका तरना कठिन है, काहे तें जो  
 तामें बल अथाग है, अरु भिरतारणी जडा है; अरु ति-  
 समें मरुछ, कच्छ, मगर जडे रहधारी रहते है; ऐसा

दुःखर सञ्जुद्धा तरना सो में सुगम मानता हों, परंतु  
 शुभावस्थाका तरना महा कठिन है कारण यह जो शुवा  
 वस्थामें निर्दोष रहना कठिन है, ऐसी सडकवादी जो  
 शुभावस्था है विसमें अजापमान नहीं होते सो पुरुष भन्प  
 है। अर अन्ता कर्म लोग है है मुनीश्वर। यह शुवा  
 वस्था मनीन कु जाती है जैसे बनकी जावरी है,  
 विसके विक्र गण्य कटे गे होय, सो पवन अननेने गण्य  
 आप जावरीमें गिरे, तमें पवनरूपी शुवावस्था जोय  
 रूपी छू कटेवके अिसरूपी जावरीमें जाके मरीन कर  
 देवी है जैसे ओगुन करके पून जो शुवावस्था तिमकी  
 धम्मा मुत्रमे नहीं है शुवावस्था। नरेपर वही रूपा  
 करनी, जो लोग दर्शन नहीं होये, तेरा आनता में दु अडा  
 कारण मानता हों जैसे पुत्रके भगवडा मडा पिता सो  
 नहीं राकता, अर सुपडा निमित्त नहीं देअता तेसा तेरा  
 आपना में सुपडा निमित्त नहीं देअता ताते मुत्रपर र्पा  
 करनी जो आपना दर्शन न होये। है मुनीश्वर। शुवाव  
 स्थाका तरना महा कठिन है जो कोडि जेअनवान होये  
 सो नअता मधुका होये, ओर रात्रके गुन, वैराग विचार  
 मनोष, शांति, धनिकर सपल होये सो दुर्लभ है जेमें  
 आकारामें मन होता आक्षर है तमें शुवावस्थामें  
 वैराग, विचार, शांति, मनोष पावता जे अडा आक्षर  
 है ताते मुत्रके मोर्द बीपाय कहे, अमकर शुवावस्था  
 के दु अकी मुक्ति होय जय, अर आत्मपत्नी प्राप्ति होय  
 धृतीक्षी योगवाशिटे वैराग प्रकृत्य शुवा गाइडी  
 वरुण नाम पंचदश सर्ग १५

हे मुनीश्वर! जिस काम विधासके निमित्त स्त्रीकी पांछ करता है, सो स्त्री, अस्थि, मांस, दूधिर, मूत्र, निशाकरी पूरन है; धसीकी पूतरी जनी दुध है; जैसे बंतीकी जनी पुतरी होती है, सो तागिसोंकर अनेक बेष्टा करवी है; तेसे यह अस्थि, मांसादिकी पूतरीमें कछु ओर नहीं है. जे जियार कर देजो तो सो उ-मनी दिपाती है. जैसे पर्वतके शिखर दूरतें सुंदर, अरु निकटतें असार है; पडे पथरध दिपते है; तेमें स्त्री-वस्त्र अरु जू-पनसों करी सुंदर जागती है; अरु जे अंगकों जिभजिभ जियार कर देजो तो सार कछु नहीं है, जेमें नागनीके अंग अहुत कोमल होते है; परंतु उसका परस करी तो अठके भार डारती है; तेसे जे मोर्ध स्त्रीको स्पर्श करते है तिनको नारा कर डारती है; जैसे जिषकी जंली देपन मात्र सुंदर लगवी है, परंतु स्पर्श कियेते भार डारती है; जैसे हस्तिको बंछर कर बांधि तज जिस द्वारपे रहता है, तहांध स्थिर रहता है; तेसे अग्यानीका जे चित्तूपी हस्ति है, सो कामरूपी बंछरकर जष्या हुआ स्त्रीरूपी अेक स्थानमें स्थिर रहता है; वहांते कहुं ज्वन नहीं सकता. ओर जज हस्तिको महाजन अंकुराका प्रहार करता है, तज बंधनको तोरके निकस जता है, तेमें यह चित्तूपी मूर्ध हस्ति है, सो महाजनरूपी अुरका उपदेशरूपी अंकुराका वारंवार प्रहार करता है, तज सोपी निर्बंधन होय जता है. हे मुनीश्वर! कामी पुरुष जे स्त्रीकी पांछ करता है, सो अपने नाराके निमित्त करता है; जैसे कदलीजनका हस्ति, कामकी हस्तनी देपकर छल पायके बंधनमें आता है, ताते

परमदुःख पाता है; तैसें परमदुःखका मूल श्रीका भग है:-  
 है मुनीधर। जेमें जतके दाहकी अजि सज्जनको बलावती है  
 तैसें श्रीरूपी अजि तिसने अधिक है; काहेतें जे तम अजिके  
 परस जिये तम होते है; और श्रीरूपी अजि तो स्मरन  
 मात्रने बलावती है, और जे सुख रमनीय दिखाता है,  
 सो आपाव रमनीय है; जय श्रीका सुखका विजोग होता  
 है, तय मुरदेकी नाई हो जाता है, तिस कावमेंनी  
 ( श्री मंजोग काव ) राय ( मुखा ) जेसा हो जाता है,  
 है मुनीधर। यह तो अस्थि, मांस, इधिरका पिजरा है,  
 सो अजिमें जस्म हो जवगा; अथवा पशुपंथीको आ-  
 नका आहार होयगा, उनको देपकर पुरष प्ररान होता  
 है, अर प्राण आकारमें लीन हो जने है; ताते धसि  
 श्रीकी धरजा कनी मो मूर्च्छा है, जेसे अजिकी जवा-  
 लाके उपर सामता है; तेमें श्रीके शीरा उपर स्वाम के-  
 रा है, जेमें अजिके स्पर्श जियेते जलता है, तेमें  
 श्रीके स्पर्श जियेते पुरष जलता है, ताते जलाना दोनोमें  
 पुष्य है, है मुनीधर। धसिके नारा करनहारी श्रीरूपी  
 अजि है; जे श्रीकी धरजा करते है, सो महामूर्च्छ अ  
 ग्वानी है; सो अपने नाराके निमित्तध धरजा करते है,  
 जेमें धरंग अपने नाराके निमित्त दीपकी धरजा करते  
 है; तैसें कभी पुरष अपने नाराके निमित्त श्रीकी धरजा  
 करता है, है मुनीधर। श्रीरूपी जियकी जेली है; अर  
 हस्त पावके अत्र तिमके पत्र है; अर भुज्ज डारी  
 है; और अस्थिरूप सुंठे है; नेवातिके इंद्रिय तिसके  
 मूल है; अर कभी पुरषरूपी जारे आप जेते है,

अरु कामरूपी धीवरने स्त्रीरूपी लल पसारी हे; तिसपर  
 कामी पुरुषरूपी पत्नी, आप कसते हे. कामरूपी धीवर  
 तिनको इसापकर परम कष्ट प्राप्त करता हे. ऐसे दुःखडे  
 देनहारी स्त्रीकी जे बाछा करते हे, सो महा मूर्ख हे. हे  
 मुनीवर! स्त्रीरूपी सरपनी हे; ज्य तिसका पुतकारा निकसता  
 हे, तज तिसके निकट कमल कूल सज लल जते हे; ऐसी  
 स्त्रीरूपी सरपनी हे, तिसकि धर्मछारूप जे पुतकारा निकसति हे,  
 तज वैरागरूपी कमल जर जते हे; अरु ज्य सरपनी दसवी  
 हे तज विष मठता हे, ओर स्त्रीरूपी सरपनीकी मितौनी करी  
 तज अतरने आपेक विष मठ जता हे. हे मुनीवर!  
 जैसे व्याध छलकर मच्छीकों इसापता हे; तैसे कामी पुरुष  
 मच्छीपत सुंदर स्त्रीरूपी लल देखे इसाता हे; ओर स्ने-  
 हरूपी तागैसो कामी पुरुष बंधन पाप जेव्यापा मजा जता  
 हे; फिर नृशारूपी धुरीसो काम मार डारता हे. हे  
 मुनीवर! ऐसे दुःखडे देनहारी स्त्रीकी मुत्रको धर्मछा नही;  
 अरु कामरूपी पाराधि हे, तिसते रागरूपी धंद्रियसो लल  
 पिछाय कामी पुरुषरूपी मृगको आराडित कर डारता हे. अरु  
 स्त्रीका स्नेहरूपी जोरी हे; तिसकर कामी पुरुषरूप मेलसो  
 मध्या हे. अरु स्त्रीका सुखरूपी जे मंद्रमा हे, तिसको  
 देखकर कामी पुरुषरूपी कमलनरी पीली आती हे; जैसे मं-  
 द्ररूपी कमल मंद्रमकों देखकर प्रसंन होते हे; ओर सूर्व-  
 सुखी नही होत, तैसे यह कामी पुरुष जोग हुंकर प्रसंन  
 होते हे; अरु ग्यानवान प्रसंन नही होते हे. जैसे न-  
 कुण सर्फेकं जिलमेंते निकारके मारता हे; तैसे कामी पुरु-  
 षको स्त्री, आत्मानंदमेंते निकालके मार डारती हे. ज्य स्त्रीके

निकट जाता है, तब विसर्गों परम का उदारी है. तबमें  
 सूत्रे तब अरु धृत्को अग्नि परम का उदारी है, तबमें कागी  
 पुरुषको श्रीरूपी नागनी परम का उदारी है. हे मुनीश्वर ! श्री  
 रूपी ज्योति है, तिमका स्नेहरूपी अथकार है. तिममें कामकोषा  
 दिव उषुक अरु पिगाय है. हे मुनीश्वर ! ज्ये श्रीरूपी पाउगडे  
 प्रहातें खुनारूपी सयाममेंतें जन्मा है सो पुरुष धन्यहो  
 तिमको मेरा नमस्कार है. श्रीका मन्तेम परम हु अका  
 काय है, तातें मुक्तको धिसरी धर्या नही. हे मुनीश्वर !  
 ज्ये रोग होता है, तिसके अनुसार औषध करता है, तब  
 गेग निरुच होता है, अरु जोड कुपथ्य दिये, तब वाका  
 प्रलय होता है, गेग अद जाता है; तातें मेरे गेगके अनु  
 सारे औषध जगे; सो मेरा गेग मुनिये. जरा अरु  
 मृत्यु मुक्तके पादा रोग है, तिमका वाराका औषध मुक्तके  
 शिष्टिये. ओ श्रीःःःःः ज्ये लोग है, सो सत्य धर्म रोगके  
 वृद्धि करता है. ज्येसे अग्निमें धून उरिये, तब अद जाती  
 है, तबमें लोगमें जरा मृत्यु आदिगेग सो अदता है; तातें  
 धिस गेगकी निरुचिका औषध कगे, नही तो सयजत्याग कर  
 जनमें जन्य गहुगा. हे मुनीश्वर ! तिमको श्री हे तिसको  
 जोगरी धर्याणी होती है, और असर्ग श्री नही तिसको  
 श्रीकी धर्याणी नही. तिमने श्रीका त्याग दिया है, तिनने  
 मरामकाणी त्याग दिया है. सोध गुणी है, ममारका पीज  
 श्री है, तातें मुक्तको श्रीकी धर्या नही मुक्तको सोध अ  
 षध दीजे, तिमने जरा मृत्यु आदि गेगकी निरुचि होध.

धृतिश्री योगवासिष्ठे चैराग प्रकरणे श्रीदुर्गाया वलुंन  
 नाम पौडसाः सर्गः १६

श्रीरामोवाच. हे मुनीश्वर! जाणके अपरशतो महा  
 तः हे, अरु आराधन हे; ओर सज्ज सुवापस्था आती  
 हे, तज्ज जाणापस्थाको महन उर सेती हे. तिसके अनंत  
 वृक्षापस्था आती हे, तज्ज शरीर नर्जरीभूत हो जाता हे.  
 अरु सुखी छीन हो जाती हे; अरु मृत्युको पावता हे.  
 हे मुनीश्वर! छिम प्रकार अम्पानीका छवना अर्थ हे, उछु  
 अर्थकी सिद्धि नांही हे. जैसे नदीके तटपर वृक्ष होते  
 हे, सो जलके प्रवाह उर नर्जरीभूत हो जाती हे; तेसे वृ-  
 क्षापस्थामें शरीर नर्जरीभूत हो जाता हे. जैसे पवनसो  
 पत्र उड जाता हे, तेसे वृक्षापस्थामें शरीर नारा पाता हे,  
 जैसे उछु गोग हे गो सज्ज वृक्षापस्थामें आप प्राप्त होते,  
 हे; अरु शरीर पूरा होय जाता हे; अरु स्त्री पुत्रादिके  
 सज्ज वृक्षा लाग उर हेते हे; जैसे फलें फूलमें वृक्ष लाग  
 रता हे, तेसे वृक्षके कुटुंब लाग रता हे, अरु रूप हसते  
 हे; जैसे भावरेको हसके हसके जोलते हे जो अर्थकी अर्थ  
 मज्ज जात रही. जैसे कमल फूलके उपर गज पडते हे,  
 अरु कमल नर्जरीभूत हो जाता हे, तेसे नरा अपरशामें  
 पुरुष नर्जरी जावको प्राप्त होता हे, अरु शरीर दुबरा  
 हो जाता हे; उरा स्वेत हो जाती हे; शक्ति छीन हो जाती  
 हे. जैसे त्रिकालका जग वृक्ष होता हे, तिसमें पुना होता  
 हे, तेसे शक्ति उछु रहंत नांही. हे मुनीश्वर! ओरहु  
 सज्ज प्रति छीन हो जाती हे; परंतु अक आशक्ति, मात्र  
 रहती हे. जैसे जडे वृक्षमें उलूक आप रहते हे; तेसे  
 छिममें कृषिराक्ति आप रहती हे; ओर शक्ति सज्ज छीन  
 हो जाती हे. हे मुनीश्वर! नरा अपरशामें दुःखी धर हे;



लगं अवस्था आती है, तब मय दुःख छिड़े होते  
 तिनकर महा चीन हो जते है; अरु शुवावस्थाका जे  
 का मय रहता है, सो लरामें चीन हो जता है, अरु  
 पकी आशक्ति घट जाती है, तिनमें यथवशाया अ-  
 व हो जाता है, जेमें पिनाडे निर्बल हुये पुन चीन हो  
 ग है, तेसैं शरीर निर्बल हुये छंद्रियाहु निर्बल हो जाती  
 ओर ओके तृष्णा उन्मत्त होत पड जाती है, हे मुनी-  
 ! जंम लगातूषी शक्ति आती है, तब आसी रूषी मि-  
 । आव शब्द उठती है, अरु आवि व्याधिरूषी उलूक  
 14 निवास करते है, हे मुनीश्वर! ओमी जे नीच पदा  
 था है, तिमकी मुञ्जकां छच्छा नहीं, यह देह लग आवेते  
 17 होय जाती है; जेमें पके इजसोः प्रकृत हूय जाता  
 तेमें लरके आधे देह डूबरी हो जाती है, जे शु-  
 वस्थामें स्त्री पुनारिकि याहते ये, अरु रहय कते ये, सो  
 न'लमकों लाग देते है, जेमें वृद्ध जेवर्षी जेवसाग त्याग  
 18 है; तेमें छसिमें अंधु त्याग देते है, ओर देनके हसते  
 अरु अपमति करते है, तिनके लटकी नाह पासता  
 हे मुनीश्वर! ओसी जे नीच अवस्था है, तिनकी  
 प्रको छिच्छा नाहीं, अय जे इच्छु कल्प्य मुञ्जकां कहो  
 19 में, जेमें, छिवा शरीरकी तीनो अवस्थामें जेह सुखदाह  
 14 ही है, ओ जे जागवस्था महा गूढ है; अरु शुवा-  
 स्था महा निकान्वात है; अरु लग अवस्था महा दुःखका  
 15 है, जागवस्थाको शुवा अवस्था गृहन कर लेती है  
 अरु शुवा अवस्थाको लग अवस्था गृहन कर लेती है,  
 अउ लर अवस्थाको मृत्यु गृहन कर लेती है, यह अवस्था

सुख अल्प कालकी है; धनके आश्रय करके चरेकों कहा सुख होना है; ताते सुभ्रकों सोई उपाय कहे, जिसा कर धरि दुःखते सुख हो जगई. हे मुनीश्वर! जग्य जरा अवस्था आती है, तज मरनाभी निकट आता है. जैसे संध्याके आपे रात तत्काल आप जती है, और जे संध्याके आपे दिनकी धरणा करते हैं, सो महा मूर्ख है. तेसे जराके आपे छुवनेकी आशा रखनी सो महा मूर्खता है. हे मुनीश्वर! जैसे जिली चितोनी करती है, जे सुहा आपे तो पुर खेज; तेसे मृत्यु चितवत है, जे जरा अवस्था आपे तो जे धरिका गृहन कर खेज; अरु जरा अवस्था मानो कालकी सभ्नी है. गेगडूपी मरालेकर शरीररूपी भांसकों शुष्पाती है, तज काल जे धरिका स्वामी है, सो आपकर जोगन कर खेता है; अरु शरीररूपी धर है तिसका स्वामी काल है; जग्य काल धरमें आपे, तज तिसके आगे तीन परगनी आती है; पहिली अराकतता, दूसरी अंगमें पीडा, तिसरी आसी. सो शीघ्र स्वाराके अलावती है; अरु येत केश हाते हैं, सो अमरकी नांछ भुखते है. जैसी जे कालकी सहेली है सो प्रथमही आछ प्रवेश करती है; अरु जगडूपी कलगी शरीरके जनावती है, तज जे पाडा स्वामी काल है, सो आप प्रवेश करता है. हे मुनीश्वर! जे परम नीच अवस्था है, सो जगडू है, जो जग्य आती है तज शरीर जगडूश्रुत कर देती है. कंभनेका लगती है, अरु शरीरके निर्जल कर हंकी है; अरु कूर कर देती है. जैसे कभजपर जरडकी जरणा होये, अरु जगडूश्रुत होय जग्य, तेसे शरीरके जगडू

शून्य ३२ आती है, जैसे जनमें पावन आपके शब्द ३-  
 गते हैं, यह मृगडा नारा करते हैं, तमें आसीरूपी पावन  
 आप मृगरूपी पनडा नारा करते हैं, है मुनीधरा । तप  
 नरा आपत है, तप मृत्यु प्रभत होता है, जेमें अद्रमाके  
 उदधने कभधनी पिन आती है, तमें मृत्यु प्रसंन होता  
 है, यह वह नरा अकथ्या पडी दृष्ट है, जरे जरे  
 जेधे दुष्म है तिमोनी दीन ३ दिये है, नक्षपी जरे  
 गुरगेने मंत्राभमें शत्रुके छते हैं, सोडिगदु नगने छत  
 क्षुपे है; यह जोडे पंगडे मून कर अरे है ताडिगदु नरा  
 पिराअनीने महा दीन ३ दिये है, यह नरारूपी जो ग  
 क्षुभी है, तिसने सजोने दीन ३ दिय है, जो मगने छ  
 तनेवागी है, है मुनीधरा यह नरा गरीरके अमिडी  
 नाध लगती है, जेमें अमि अरुके लगता है, यह  
 धूम निरसता है, तमें गरीररूपी अरुके नरारूपी अमि  
 लगके तृष्णारूपी धुपे निकसते है, जेमें जिनेमें जरे रत्न  
 रहते है, तमें नरारूपी जिनेमें दुष्परूपी अनेक रत्न रहे  
 है, यह नरारूपी असतरुतु है, तिस करके शरीररूपी  
 अरुके दुष्परूपी मस करके पूगन होता है जेमें हस्ति  
 साकरमो जध्या दुष्मा दीन हो जता है, तमें नरारूपी  
 साकर करके जध्या पुडप दीन हो जता है यह अग सप  
 सिपिन हो जता है, पन छीन हो जता है, यह छद्रि-  
 वाणी निर्भय हो जती है, यह शरीर नररुगी जावके  
 प्राभ होता है, परंतु तृष्णा नही धगती है, नित्य पडती  
 यसी जती है, जैसे गत्र आती है तप मूर्धनगी कभज  
 मम मूद जते है; तप पिराअनी आप पियरने

लगती है, अर्थात् प्रभंन होती है; तैसें जरारूपी रात्रिके  
 आपिते सप्त रात्रिरूप कुम्भ मूढ जते है, अर्थात् तृष्णारूपी  
 पिरायनी प्रभंन होती है, है मुनीश्वर! तैसें गंगाके तट-  
 पर जृम्भ रहते है, सो गंगाजलके जगसो जलगी जूत  
 हो जते है, तैसें जे आपुर्षी प्रवाह चलता है, तिसके  
 जगकर रात्रीर जलगीजूत हो जता है, तैसें मांसके  
 दुकडके देष आकाराने उजवी स्थल नीचे आय से जवी  
 है; तेमें जरा अवस्थामें रात्रीरूपी मांसके काल से जता  
 है, है मुनीश्वर! यह तो कालका आस जन्पा हुआ है,  
 तैसें सुंदर जृम्भके हस्ति आय जता है, तेमें जरा अ-  
 वस्थावारा रात्रीरके काल देषके जोवन कर जता है.

धृतिश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे जरा अवस्था नि-  
 रूपसुं नाम समष्टयः सर्गः १७

रामोवाच, है मुनीश्वर! संसाररूपी गर्त है, तिसमें  
 अस्तानी गिर्वा है, सो संसाररूपी गर्त अक्षय है, अर्थात्  
 अग्यानी तो जडा हो गया है, संकल्प विकल्पकी आधिप्यताते  
 जडे है, अर्थात् जे ग्यानज्ञान पुरुष है सो संसारके मिथ्या जलनता  
 है, फिर संसाररूपी जलमें डूबना नांही, अर्थात् जे अग्यानी  
 पुरुष है सो संसारको सत्य जलनकर संसारकी आस्थाइपी  
 जलमें डूसता है, अर्थात् संसारके जोगकी वांछा करते है  
 सो जैसे है, -तैसें दर्पणमें प्रतिबिम्ब देषकर जालक पडरनेकी  
 ज्वाला करता है; तैसें अग्यानी संसारको सत्य जलनकर  
 जगतके पदारथकी वांछा करता है; यह जेरेको होये; यह  
 जेरेको नांही होये अर्थात् यह जे सुख है सो नारात्मक है,

अभिप्राय यह जो आरतों से अरु जाते है; सो सियर  
 नही रहते है; धनका काय अहन करता है. जैसे पके अनारकों  
 खुदा जाय जाता है, तैसे सय पदारथकों काय जाता है.  
 हे सुनीथर! जैसे कुछ पदारथ है, सो काय असित है;  
 जो जड़े वाली सुमेरु जैसे गभीर जलधारे पुरुषके आस  
 कायने डिपे है. जैसे सर्पकों नकुल भस्जन कर जाता है, तैसे  
 जड़े जलिका आस काय कर जाता है. अरु जगतरूपी अेक  
 सुखरका रूप है, जिसमें जो मन्म है सो अस्मादिक है,  
 सो रूपका जो अरु है, तिनका जो जन है, सो अस्वरूप  
 है, तिम अस्वरूप जनमें जैसे कुछ जन है, सो सय धसिका  
 आहात है, ममका भस्जन काय कर जाता है. हे सुनीथर!  
 यह काय जडा पालिष्ट है, जो कुछ देखनेमें आता है, सो  
 सय धस आस कर निपा है; तज अवरकी का कहनी है.  
 ओर हमारे जो जड़े अस्मादिक, तिनकाजी काय आस कर  
 जाता है. जैसे मृगका आस सिध कर लेता है, ओर  
 काय जिमी कुंठे जन्मा नही जाता जिन, धरि, प्रहर, दिन,  
 मास, ओर अर्षादिक कुं जनिपे सो काय है, ओर काय  
 की भूर्त्ता प्रगट नाही है, अेसा अग्रगुरुप है. अरु दीसीकी  
 स्थिति होने नही देता. अरु अेक जेही कायने पसारी है,  
 तिनकी त्वया गति है; अरु कूल तिमका दिन है; ओर  
 अ्वरूपी जों तिसपर आप जेने है. हे सुनीथर! ज-  
 गतरूपी सुखरका रूप है, तिसमें अ्वरूपी भस्जर जहोत  
 रहते है, तिस कूलका भस्जन काय कर जाता है. जैसे  
 अनारका भस्जन तोता करता है, तैसे काय भस्जन करता है.  
 अरु जगतरूपी अरु है, अरु अ्वरूपी तिसके पत्र है,

तिसका कालरूपी हस्ति भक्षण कर जाता है, अरु शुभ  
 अशुभरूपी जेरानको कालरूपी सिंह छेदछेदके जाता है,  
 हे मुनीश्वर वह काल महा क्रूर है, मो किसी परी दया नहीं  
 करता; राजका भोजन कर जाता है, जैसे मृग राज कुल-  
 नको भाय जाता है, तिसको डोह रहता नांही है, परंतु  
 अेक कमल उसको पये है, मो कमल डेसा है:- शांति  
 अरु मैत्री तिसके अंकुर है, अरु चेतनता मात्र प्रकाश है,  
 इस कारणते वह पत्था है; सो कालरूपी मृग इसको  
 पाहोय नहीं राकता, इसमें प्राण हुवा कालभी तीन हो  
 जाता है; ओर जेता इछु प्रपंच है, सो राज कालके मुष्ममे  
 है, अस्सा, विषयु इद्र, कुंभेर, आदिकर सभ मूर्ति काल-  
 की धर्म हुध है, द्विरे तिनकोभी अंतर्धान कर देता है,  
 हे मुनीश्वर! उत्पत्ति, स्थिति, अरु प्रलय, सभ कालते  
 होते है, अनेक जेर महा कलपकाहु अहन कर लेता है;  
 अरु अनेक जेर करैगा, अरु कालको भोजन कियेते तृप्ति  
 कदाचित् नहीं होती; अरु कदाचित् होनहारी हु नांही-  
 जैसे अग्नि धूनकी आहुतीसो तृप्त नहीं होता, तेसे जगत  
 अरु सभ अस्साका भोजन करतेहु काल तृप्त नहीं होता;  
 अरु इसका अेमा सुभाव है जे, इंद्रको दरिद्री कर देता है,  
 अरु दरिद्रीको इंद्र कर देता है; ओर सुमेरुको राक्ष बना-  
 ता है, अरु राक्षका सुमेरु करता है; सभते जडे अैश्वर्य-  
 वारेको नीच कर उरता है; सभते नीचको गय कर उरता है;  
 अरु सुदक ससुद्र कर उरता है, अरु ससुद्रका अुंद करता  
 है, अेसी शक्ति कालमें है, अरु अुवर्षी जे मच्छ है,  
 तिनको सुभाशुभ कर्मरूपी छुरेसो छेदत रहता है; द्विरे

देसा है - जो कानकूपन अक है; अत्ररूपी दृष्टो शुभ अ-  
 शुभ कर्मरूपी अगुनीसो जाकर ले दितारै. फिर देसा है -  
 अत्ररूपी पृथ्वी गन अरु तिनरूपी कृतागडर छेदता है.  
 हे मुनीधर! जेता कछु नगन गिलाग जासता है, सो सपका  
 गृहन नन कर सेवेगा अरु अत्ररूपी रतनका कान डिम्बा  
 है; सो अपने उदरमें अरिता बनता है और अत्र अत्र  
 है, अरु अंद्र सूररूपी गेदको कपहु उग्रध उजावता है.  
 कपहु नीचें अगता है, अरु जे महापुरुष है सो उत्पति  
 प्रणयमें जे पचाये है, तिनमें स्नेह तिसिद्धि साथ नही अगता.  
 तिसका नाग अग्ने कान अमरय नाही. जेमें सुदकी  
 माना महादेव अरु अग्ने हैं तेसो पहली अत्रकी माला  
 अग्नेमें अगता है. हे मुनीधर! जे जडे जडे अक्षिष्ट है,  
 तिनकाभी कान गृहन कर लेता है. जेसैं समुद्र अग है,  
 तिनका आडवालि पान कर लेता है, और जेसैं पवन जोल  
 पनको उगता है, तेण कानका अत्र उे तिसीरी गामगी  
 नाही, जे अंसके आगे स्थित रहै हे मुनीधर! शाति  
 अत्र प्राधान्य जे देता है, अरु रत्नेअत्र प्राधान्य जे  
 अडे गनत है; अरु तमो अत्र प्राधान्य जे तैल राखस  
 है, तिनमें कोन समर्थ नाही, जे अंसके आगे स्थित होय.  
 जेसैं गोकनीमें अत्र अरु कल धरु अत्रिपर अदाय सिधेन  
 फिर उअने हैं, सो अत्रके दाने कपहु उरें और कपहु नीचें  
 फिर जाते है, तेसैं अत्ररूपी अनेक दाने नगनरूपी दोकनीमें  
 परे हूअे गन दूररूपी अत्रोपे अरे है, अरु कर्मरूपी  
 कंडलीकर कपहु उग्रध बनता है, कपहु नीचें बनता है. हे  
 मुनीधर! यह कान तिसीको रिअ न होने देता, महा कडो

हे, दया किसीपर नहीं धरता। उसका जप मुझको गहेता  
हे, ताते सोई उपाय मुझको ह्यो, जिसकर में काजते नि-  
र्णय हो जई।

धृतिश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे काव्य वृत्तांत निर-  
पह्यं नाम अष्टादशः सर्गः १८.

श्रीशमोवाच हं मुनीश्वर! यह काव्य जडा अलिष्ट है; -  
जैसे राजके पुत्र शिकार खेलने जाने हैं, तब जनमें जडे  
पशु पंछी देखते हैं, फिर मारते हैं; तैसे यह संसाररूपी  
जन है, तिसमें प्राणीमानव पशु पंछी हैं; जन्म काव्यरूपी  
राजपुत्र तिसमें शिकार खेलने आता है, तब सब जन्म  
जपकों पावते हैं, फिर तिसकों मारता है। हे मुनीश्वर!  
यह काव्य महा जैरव है, सगडा आस कर लेता है। प्रलयमें  
सज्जम प्रलय कर डारता है; अरु धसिडी जे अंडिका राजिन  
है, तिसका जडा उदर है; अरु कासीका सगडा आस करती  
है, पाजे, नृत्य करती है। जैसे जनके मृगको सिंह अरु सिंह-  
नी जोलन करते हैं, और नृत्य करते हैं, तैसे जगतरूपी  
जनमें जव रूपी मृगका जोलन करेके काव्य अरु कालिका नृत्य  
करते हैं। अहुरी धनते जगतरका आदुर्भाव होता है, नागा  
प्रकारके पदार्थनके रचते हैं, पृथ्वी, जगीचि, पावरी, आदि  
सब पदार्थ धनहीते उत्पन्न होते हैं; अरु सुंदर जव-  
कीहु उत्पत्ति धनने होती है; और अके सभमें उनका ना-  
शानी कर देती है। सुंदर समुद्र रचके फिर वामें अग्नि  
लगाय देती है; अरु सुंदर कुमलकों जनापके फिर वाके उपर  
परकी परजा करती है; अत्यादि नागा पदार्थनके रचके



तिमका नारा करती है, जहाँ जड़े स्थान पसने है तिमका  
 उल्टा कर डारती है; फिर उल्टा में पसती कर धरती है;  
 और नाराभी करती है; स्थिर रहने तिसका नहीं देती, जैसे  
 पागमें पानर आपड़े अचछकों रहने नहीं देता, तैसे धान-  
 रूपी पानर द्विमी पदारथको स्थिर रहने नहीं देता, है  
 मुनीश्वर! यह प्रकारमें सत्य पदारथ ज्ञानमेंकर सर्वसि-  
 ज्ञ होत है, तिसका में आश्रय द्विमी शीतमें कमें, मुक्तको  
 तो नारा रूप पारसता है, तानें अत्य मुक्तों तिसी जगत्का  
 पदारथकी धरता नहीं।

धृतिश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरण्यु हात्र निस्तप्त वल्लुनं  
 नाम अेकोनविंशतिमः सर्गः १९

शमोवाच, हे मुनीश्वर! धृति ज्ञानका महा पराक्रम है,  
 धृतिमें तैयको म-मुक्त रहनेको कोउ समरथ नहीं; जिनमें  
 उभको नीच कर डारता है, और नीचको उंच कर डारता है,  
 तिसका निवारण कोउ कर नहीं सकता; मग धृतिमें जयसे  
 परे कंभते है, यह महा जैरथ है, सत्य विथका आश्रय कर  
 सेता है; और धृतिकी अडिगरूप शक्ति है सो जगत्पान है,  
 सो नदीरूप है, तिसका उल्लखन कोउ नहीं करी सकता है,  
 और महा ज्ञानरूप ज्ञान है, तिमका जडा जगत्पानके आकार  
 है, और ज्ञानरूप ज्ञे रूद्र है, तिसमें अभिजन्मरूपी कानिका  
 है; सो मगका पान कर सेने; पाउ जैरथ और जैरथनी  
 नृत्य करते है; सो ज्ञान कानिका डेसी है, - जडा तिसका  
 आकारमें श्रीर है, और तिसका पातालमें सरन है, ६  
 शौ दिसा तिसकी शुभ है; मग समुद्र तिसके हाथमें कंभ

है, संपूर्ण पृथ्वीरूप तिसके हाथमें पात्र है, तिस उपर एव  
है सो भोजन योग्य है, हिमाक्षय अरु सुमेरु पर्वत दोनों  
कानमें षडे रहत है, चंद्रमा सूर्य जिसके लोचन है; अरु सप्त  
तारागण पाके मस्तकमें निद है, अरु हाथमें त्रिशूल अरु मुराध  
आदि शस्त्र है; अरु जिसके हाथमें तंद्रा शंसा है, तिस-  
कर एवको मारता है, ऐसी जे कालिका देवी है, सो सप्त  
एवका आस करके महा जैरव जे इद्र है तिसके आगे  
नृत्य करती है; अरु अष्ट, अष्ट, ऐसा शब्द करती है;  
अरु एवका भोजन करके इनकी इंद्रमाला गरमें धारन  
करती है; सो जैरवके आगे नृत्य करती है, अरु जैरव  
कैसा है, जे जिसके सन्मुख रहेनेकी शक्ति कोठमें नहीं है;  
अरु जहां उठार है तहा छिनमें पस्ती कर डारते है; अरु  
जहां पस्ति होवे तांहा छिनमें उठार करते है, छसीतें  
तिनका नामें देव कहते है, अरु तिसका वृणांतभी कहते है,  
अरु षडे षडे पदांग्य होते है, अरु तिसका नाराभी होता  
है, अरु स्थिर जिसीगें रहेंत नहीं देता; तिसने छसका नाम  
कृतांत है; अरु नित्यरूपीहु पली है, जे छस आदि धर्या  
है सोधि कर्ता अरु कर्मरूप है; कहिने जे परिनाम ए-  
सका अनित्यरूप है, छसीतें छसका करम नाम है; सो कैसे  
नारा करता है; जग अजावरूपी धनुष्य हाथमें धरता है,  
तिमकर रांग दौणरूपी पान खंजाता है, तिस पानने जर्जरी-  
श्रव करके नारा करता है; अरु उत्पति नारामें एसको जल-  
नभी कछु कृना नहीं पडता है; छसको तो जेल जेसा  
है; जेसे पालक मृत्तिकाकी सेना बनाता है, किर उठावकर  
नाराभी कर देता है, तेसे कानको उपजलपने अरु नारा

रनेमें जलन करना नहीं पड़ता है, है मुनीश्वर ! शिवरूपी  
 भीतर है, जिसने किशोरुपी रूप पसारी है, तिम विषे शिव-  
 रूपी पड़ी परे इमने है, मो इसे इमै गानिदों नही प्राण होने  
 है मुनीश्वर ! यह तो राण नागरूप परायें है, धनमें आ-  
 थव डिगीरा करना, जिम्का मुष्पी होवे, तो श्यावमंगम  
 लगत राम काठके मुष्पने है; यह राण नाशरूप मुष्पके  
 दृष्टिमें आवे है ताते नो निर्णय पर होष मो मुष्पके कहे.

धृतिश्री योगवागिष्ठै वैराग्य प्रकृश्लेषु शालजिज्ञास अर्जन  
 नाम विशतिमः सर्गः २०.

श्रीशमोवाच. है मुनीश्वर ! ने ते कछु पदार्थ जासते  
 है, मो सम नाशरूप है, ताते डिगीरी छत्रेण करों ? ओ  
 कोनको आथा इगे ? धनश्री छत्रेण करों मो भूषता है;  
 अइ नेती कछु श्रेष्ठा अम्बानी करता है मो सम दुःखके  
 निमित्त है, अइ श्रवनेमें अश्वरी सिद्धि कछु नहीं है;  
 कहेंने नो पावक अवस्था होनी है, तम मृदता गेहेती है,  
 जिया कछु नाहीं गेहेता, अइ जल श्रुवा अवस्था  
 आवी है, तण भूषता इके विषयको सेवने है; अइ मान  
 मोहारि निश्वरों मेलेछ जते है; तामेंभी जियार कछु नहीं  
 होता, अइ स्थिष्ठी नाहीं रहते, हिर दीनका दीन गहीके  
 जियवशी तृष्णा करता है; शानिदों नहीं पावता है, है मुनी-  
 श्वर आंपुष नो है मो महा अंखल है; अइ मृत्तु तो नि-  
 क्त है, पाको अन्वथा भाव नाहीं होत, है मुनीश्वर ! ने  
 ते कछु योग है मो गेग है; अइ जिसको मपदा जलते  
 है, सो आपदा है; अइ जिशको सत्य कहेते है सो अस

लरूप है; अरु जिस स्त्री पुत्रादिकों मित्र बनते हैं, सो  
 सत्य बंधनका करता है, अरु इंद्रिय नो है सो महा रात्रु-  
 रूप है, सो सत्य मृग तृष्णाके बलवत् है; अरु यह देह  
 है सो विकाररूप है; अरु मन संयत्न है; और राधा  
 असांतरूप है; अरु अहंकार नो है सो महा नीच है,  
 धर्मनेह दीनताको प्राप्त किया है; धसकर नोते कछु पदारथ  
 धसको सुपदायक जासते है, सो सत्य दुःखके देनहारै है  
 तिसकर धसको कदाचित् शांति नहीं होती, ताते मुत्रको धि-  
 नकी धिञ्छा नाहीं। जलपी देपने भाव सुंदर जासते है,  
 तोभी धनिमें सुप्य कछु नाहीं; सो पदारथ स्थिर रहनेका  
 नाहीं। जैसे समुद्रमें नाना प्रकारके तंग जासते हैं, सो  
 सत्य अउवाभिउर नारा होते है, तेसे यह पदारथभी नाराको  
 पावते है, में अपनी आयविषे केने आस्था करों, है  
 मुनीधर । जडे समुद्र नो दृष्ट आवते है, अरु सुनेर आदि  
 जडे पदारथन है, सो सत्य नाराको पाते है; तय हमसारि-  
 ज्येकी कहा जायता है। और जडे जडे दैत्य गक्षसहु होयके  
 नारा पाय गये है, तो हम सारिज्येकी कहा जायता है। अरु  
 देवता, सिद्ध, गंधर्व, हुज्ये हैं सो सत्य नाराको पाते है,  
 तिनकी नाम संज्ञाभी नहीं रहती, तय हम सारिज्येकी कहा  
 जायता । पृथ्वी, जल, अरु अग्नि नो दाहक शक्ति धरने  
 हारै अरु पवन नो है सो विष्य सहित सत्य नारा होय  
 जयगे, कछु धनकी सत्ताभी न रहेगी, तो हम सारिज्येकी  
 कहा जायता । अरु यम, कुबेर, अरुन, इंद्र, जडे तेजवारे  
 है सो सत्य नारा पावगे तो हम सारिज्येकी कहा कहेनी  
 है । और तारा मंडल नो दृष्ट आवते है, सो सत्य गिर

पड़ेंगे जैसे सुने पात जूझते जाइमो गिर जाने हे  
 तेमें तां जिगते हे तज हम सरिजेकी उहा जास्ता हे  
 मुनीधर । धुव जे रिश भासता हे, गोपी अरिषा होय  
 लपगा, अर अद्रमा अमृतमय मडवका हउमें आता हे,  
 ओर मूं अ मड मून हे निराडा, असा जे प्रताप सवुअ  
 हउ आता जे, गो म । नारा हो जलहिमें, तो हमसारि-  
 जेकी उहा जास्ता हे ओरकी उहा जास्ता हे । यह  
 जे जोड धिया लगते अधिटाता हे तिडाभी अभाव  
 होय जता हे पञ्चि जे धिया हे तिसडाभी अभाव होय  
 जता हे, हउि जे जिष्यु मोनी हरे लपगे महा जेरव  
 रूप जे इद्र, गोपी रून्य हो लपगे, तो हम सागिजेकी  
 उहा जास्ता कुनी' अर कान जे समय लखन करने  
 हाग हे गोपी दुकडुक हेके नाराको प्राप्त होवेगा अर  
 डावकी स्त्री जे नेवी हे, मोहु अनतताको प्राप्त होवेगी,  
 अर समय आधा जे आधरा जे सोपी नारा हो जल  
 पगा, तो हम सागिजेकी उहा जास्ता' अर नेता उछु  
 लगत अय क सिद्ध होता हे सो गज नारा हो जवेगा,  
 जेहु मिय रहेनेडा नाहीं तज हम जिमकी आग्था करे,  
 अर जिम । आशय करे, यह लगत मय अम भाव हे  
 अग्थानीकी धिसमें आग्था होती हे, ओर हमारी नाहीहे,  
 जे लगत अम जेमें उत्पत्ति जया हे अर में धिया जलन  
 ता हौ, जे ममाग्में धितना दुप्पी हाते हे, सो अहकारने  
 दिया हे हे मुनीधर धिसज जे परम रानू अहकार हे  
 मो कउे जास्ता जिगता हे जैसे जेवरी साथ जवि कुअ  
 पनग उजहु उरे, उजहु नीचे जता हे, रियर उजहु नहीं

रहेता, तेसें एवहु अहंकार करके कणहु उर्ध्व कणहु अध  
 जता हे, स्थिर कणहु नहीं होता. जैसे अश्वते आरूढ़  
 रथ तिनके उपर पेड़के सूर्य आकारा भारगमें जमता हे,  
 तेसें यह एव जमता हे, स्थिर इदायित् नहीं होता. हे  
 मुनीश्वर ! यह एव परभारथ सत्यराडूपतें बुद्धा दुआ  
 जठकता हे; अइ अज्ञान करके संसारमें आस्था कता हे;  
 अइ भोगहुंको सुखरूप जनकर तिसमें तृष्णा करता हे.  
 ओर जिसको सुखरूप जनता हे, सो रोग समान हे;  
 ओर जिसकर पूरन सरथ जैसे हे, सो एवडा नारा कर-  
 नहारै हे; ओर जिनको सत्य जनता हे, सो असत्य हे,  
 मज्ज कावके मुजमें असें दुजे हे. हे मुनीश्वर ! जिसार  
 जिना अपना नारा आपली करता हे; कहतें जे धमिका  
 इक्षान करेनहारै जोध हे; जे सत्य जिसार जोधके सारन  
 जन्य तो कलान होवे; ओर जेते पदाग्र्य हे, सो स्थिर  
 कोजी नाहीं. धनको सत्य जनना दुःखके निमित्त हे. हे  
 मुनीश्वर ! जज्ज तृष्णा आती हे, तज्ज आनंद अइ धिर-  
 जको नारा कर देती हे; जैसें जायु रिकडा नारा कर डारता  
 हे, तेमें तृष्णा नारा कर डारती हे. तांतें मुजको सोई  
 उपाय कहो, जिसकर जगतका जम मिट जावे, अइ अवि-  
 नशी पदकी प्राप्ति होवे. इसि जमरूप जगतकी आस्था  
 में नहीं देखता; तांतें धमिका आहे तेसीं करो, परंतु सुख  
 दुःख धमिकों होने हे सो हांभगे, मिटवे के नाहीं जावे  
 पदाग्र्यी कंदरामें जेहो, जावे कोठमें जेहो, परंतु जे होनेका  
 सो निव्या हे, इसि निमित्त जतन करना मूरजता हे.

धृतिश्री योगशास्त्र वैराग्य प्रकरणे भाष्यविलास वर्षुनं  
 नाम अष्टविंशतिमः सर्गः २२.

गनोवाय. हे मुनीश्वर! यह जे नाना प्रकारके सुंदर पदारथ जासते हे, सो मज नाराशुप हे, इमकी आग्धा मज्ज करतें हे; यह तो मनकी इक्षणा करके ज्ये हुज्ये हे. तिसमें तिसरी आग्धा कुंठा हे मुनीश्वर! आग्धानी एव का एतना व्यर्थ हे; कोहो जे एवनेनें एतका अग्ध सिद्धि कछु नाही हाता. ज्य कुमा? अपरथा होती हे, तज मूढ बुद्धि होती हे, तिसमें जिया? कछु नहीं हाता. ज्य गुनावस्था आती हे, तज काम कोनादिक विज्ञा? हे लज होते हे, तिसका सदा लपे रहते हे. जेमे जतमें पधी लज जता हे, अरे आकारा माग्गो देभी नहीं राकता हे, तेमें काम कोनादिक करी इया हुआ जिया? माग्गो देभी नहीं राकता, ज्य वृद्धावस्था आती हे, तज गरीर लज्जशील हो जता हे, अरे महा दीन होता हे. जहुरी शरीरकोणी लाग देती हे. जेसे कमलके उपर भरक पडता हे, तज तिसका जोरा लाग कता हे, तेमें ज्य शरीररूपी कमलको जग्गा सपरां होता हे, तज एवरूपी जोरा लाग कर देता हे. हे मुनीश्वर! यह शरीर तज लज सुंदर हे, ज्यजग इदाम्था प्रात नहीं होती, जेसे अंद्रमाका प्रकाश राहु रैलने आनन्द नहीं दिया तज नज? हाता हे, ज्य राहु रैल आनन्द करता हे, तज प्रकारा नहीं रहता हे, तेमें जग अवस्थाके आपे खुवा अवस्थाकी सुंदरता जत रहती हे. हे मुनीश्वर! जराके आपेनें शरीर पूरा हो जता हे, अरे तृष्णा नद जती हे, जेमें जपरां काममें नदी नद जती हे; तेसे जग अवस्थामें तृष्णा नद जती हे; अरे जे पदारथकी तृष्णा कता हे, सो

पदारथनी दुःखरूप है; तृष्णा करके आपही दुःख पावता  
 है. हे मुनीश्वर! तृष्णारूपी समुद्र है, जिसमें विषरूपी  
 जेडा पस्ती है; राग दोषरूपी मच्छ कपड़ु उरध जते है,  
 कपड़ु नीचे आते है, स्थिर कदाचित् नही रहेते. हे मु-  
 नीश्वर! कामरूपी जृच्छ है, जो जृच्छमें तृष्णारूपी लता  
 लगती है, जिसमें विषरूपी कूख है; जल श्रवणरूपी लौरा  
 तिसके उपर जेडता है, तल विषरूपी यक्षीमों मृतक हो  
 जता है. हे मुनीश्वर! तृष्णारूपी जेक नदी नदी है.  
 जिसमें राग, दोषादिक जडे मच्छ रहेते है; जिस नदीमें परे  
 हूँये श्रवण दुःख पाते है; अइ जे मंसाङ्की छच्छा जता  
 है. जो नारा रूप है. हे मुनीश्वर! उन्मत्त हरित अइ  
 पुर्मके मभूह, जेसा जे रनरूपी समुद्र तिसके तल जते  
 है तिसकेानी में शूरां नही मानता, और जे इंद्रिरूपी  
 समुद्र, जिसमें घृचिरूपी तरंग उरधे है, जेसे समुद्रके जे  
 तर जता है, तिसके शूरा मानता हों; जिनके परिनाममें  
 दुःख होवे, तेसी क्रिया अजानी श्रवण आरंभ करते है;  
 और जिसके परिनाममें सुख है, तिसके आरंभ नही  
 करता. और कामके अर्थकी धारना करता है, जेमे आ-  
 रंभ क्रिये राईरकी शांति पाउहु सुखकी प्राप्ति नही होती.  
 जेमें कामना करे सदा जलते रहेते है; अनात्म पदा-  
 थकी तृष्णा करते है, जो शांतिके जेमें प्राप्ति होवे. हे मु-  
 नीश्वर! यह तृष्णारूपी नदी है, जिसमें जडा प्रवाह है,  
 तिसके दिनारे वैराग अइ संतोष दोनो जृच्छ जडे है, जो  
 तृष्णा नदीके प्रवाहने वे दोनोकी शांति होती है. हे मुनी-  
 श्वर! तृष्णा नदी अंजल है, जिसके स्थिर होने नही देती.



अरु मोहदूषी अरु अशुभ है, तिमरे अहंकार श्रीरूपी जेकी  
 है, मो जिया करे पून है, निसपर अिनरूपी जैरा आप  
 अदता है, तप्य शरीर भावने नारा पावता है, जेमें भार-  
 का पुत्र हिलन गेता है, तेमें अनानीका अिन अंश अशता  
 है, मो मनुष्य पशु समान है, जेमें पशु दिनके जगलमें  
 जग्य आहार करते अपने दिग्ते है, अरु रात्रिके आप  
 घरमें अंटासो अंधन पावत है, तेमें मूष्य मनुष्यके दिनके  
 घर छोड़ें ज्योहारमें दिग्ते है, अरु रात्रिके आप अपने  
 घरमें शिय होते है, ताते परमात्मकी सिद्धि कछु नाहीं  
 होनी. श्रवना अथवा सुभावना है. जागक अवस्थामें शुभ्य  
 रहेते है अउ श्रुवा अवस्थामें काम करी उभय होते है, मो  
 काम करे अिनरूपी उभय हरि श्रीरूपी उदगमें जंम  
 स्थित होते है मोनी जिनजगु है; जहूरी वृद्धावस्था होती  
 है, निसकर रागी कुरा हो जाता है; जेमें जहूते कमय  
 जहूरी जावने प्राप्त होता है तेमें जग करे रागी  
 जहूरी जावने प्राप्त होता है; अउ मय अंग हीन हो  
 जाता है; अरु अरु नृणा जहू जाती है. ते मुनीश्वर  
 यह पुरय मया पशु है, मो आकारके कूल लेनेकी छच्छा  
 करता है. जेमें अउ पर्यतपर अहंकार आकारका कूल लेनेकी  
 छच्छा करता है, मो दिग् अडी करे अउ अशुभमें गि  
 पडता है, तेमें यह श्रव मनुष्यरूपी पर्यतपर आप गेता  
 है, अउ आकारके कूलरूपी जगतके परात्मकी छच्छा करता  
 है, मो नीचेके गि पडनेका है; मो गम जेपरूपी अंश  
 अशुभमें जग्य पडता है मुनीश्वर जेते कछु जगतके  
 पराय है मो गम आकारके कूलकी नाश नाशुअ है,

धनमें आस्था करनी भी भूरूपता है; यह तो सम्पत्तमान  
 जैसा है; तिसमें अर्थसिद्धि कछु नाहीं होती; अरु जो  
 ज्ञानवान प्रश्य है, तिनको जियभोगकी छद्मता नाहीं  
 रहती; कहेंगे जो आत्माके प्रकारकर धनको भिन्ना बनने  
 है, हे मुनीश्वर! जैसे ज्ञानवान प्रश्य भी दूर रहते  
 है; हमको तो सुपनेमेंभी नहीं भासते है; और यह विर-  
 क्तात्मा दुर्लभ है; जिनको भोगकी छद्मता नाहीं है, सर्वदा  
 प्रकृत स्थितिकर भासते है; जैसे प्रश्यको मंभारकी छद्मता  
 कछु नहीं रहती; कहेंगे जो यह पदार्थ सत्य नारा रूप है,  
 हे मुनीश्वर! पर्वतको निम्न और दैर्घ्ये तहां पथरकर  
 पूर्ण दृष्ट आवता है, अरु पृथ्वी पूर्ण भूतिकाकरी दृष्ट  
 आवती है, अरु वृक्ष काटकरी पूरन दृष्ट आवता है;  
 समुद्र जलको पूरन दृष्ट आता है, तैसें शरीर अस्थि,  
 मांसकर पूरन भासता है, ये सत्य पदार्थ प्राय तत्त्व  
 करी पूर्ण है, और नारा रूप है, जैसा रूप ज्ञानी जनको  
 किसीकी छद्मता नहीं करता, हे मुनीश्वर! यह जगत सत्य  
 नारा रूप है, देणने देणने नाराको पाता है; तिसमें मे  
 किसका आशय कउके सुख पाइ, जन्म मृत्युकी सदस्य  
 ओकरी होती है, तत्त्व खलाका ओक दिन होता है, तिस  
 दिनके क्षण हुअेते सत्य जगत्का प्रलय होता है; अहुरी  
 खलाहु कावकर नारा हो बनता है; अरु खलाहु जिते  
 हो गेरे है, तिनकी मंभ्या नाहीं होती; तो इन सारिभेकी  
 उहा भागता करनी है? हम कोहि भोगकी वासना नाहीं  
 कउने, उभो जो सत्य अणरूप है, कछु स्थिर रहेनाका नाहीं,  
 सत्य नारा रूप है, धनकी आस्था भूरूप करेते है, तिसके

माय हमको कुछ प्रयोजन नहीं, जेमें मृग मरधनको  
 देख बलवान करनेको योग्य है, अरु शक्तिको नहीं पानता,  
 जेमें मृग्य श्रवण बगलके पदाभ्युक्त गत्य मनको तृप्ता  
 करता है, परन्तु शक्तिको नहीं पावता, डाढे ते जे मन अ  
 साररूप है; अरु जे स्त्री, पुत्र इनव जासने है, मो  
 बलवान गरीब नष्ट नहीं दुआ तयवग जासने है; बल  
 शक्ति नष्ट हो बलवान तय बलनियेमेंभी न आनेगा जे कहा  
 गया? अरु कहाँ आया था? जेमें तेन अरु अचीर नी  
 पः प्रकारता है, तय अज प्रकारवान दृष्ट आनता है,  
 पाडे बल मूत्र बनता है, तय बन्या नहीं बनता जे कहा  
 गया, तेसे अचीरूप आधव है, ओर निसामिये स्नेहरूपी  
 तेन है, तिसकर जे जासता है मो प्रकाश है, बल रा  
 शीररूपी दीपका प्रकारा मूत्र बनता है, तय बन्या नहीं  
 बनता जे कहा गया. हे मुनीश्वर! यह अशुद्ध मित्राप  
 है; मो जेसे तीर्थ बनता सध अस्था बनता होवे, मो  
 सग अेक जिनमें अशुद्धी छाया नीचे भेदने है, हि न्यारे  
 न्यारे होल बनने है, तेगा आववडा मित्राप है. जेसे इस  
 बन्यामें स्नेह करना मृग्यता है तेमें धनमेंध स्नेह करना  
 मृग्यता है. हे मुनीश्वर! यह ममताका जेनीके साथ  
 जाये दुअे घटी अरुकी नाह सय बनने जिते है, तिनको  
 शक्ति इदायित् नहीं होती, यह देखने मात्र तो येतन दृष्ट  
 आवता है, परन्तु पशु अरु अरु धनिते देख है; जिनकी  
 ममति देह धद्रिवके साथ जाये दुर्ध है, अरु आगमा  
 पाई है; इसमें आस्था गजनी सो महा मूर्यता है,  
 उनको आत्मपदकी प्राति होनी कठिन है, जेमें पवनकर

जुड़के पात तूके उड जते हे, फिर इनको जुड़के साथ लगना कठिन हे, तेसे जे वैहादिक साथ जांघे हुअे, तिसको आत्मपद पावना कठिन हे, हे सुनीधर! जप आत्मपदते विमुज्ज होता हे, तप जगनके लमको देपता हे; अइ जप आत्मपदकी ओर आता हे, तप संभार धसिको जडा फिरस लगता हे; ओर जेसा पदारथ जगतमें डोडि नांही जे स्थिर रहेगा, जे कछु पदारथ हे सो नाराको प्राप्त होते हे, ताते में किमकी आस्था करे? ओर किसका आश्रय करे? सप नारापंत जासते हे, वह पदारथ सुत्रको कहे, जिसका नारा न होवे.

धृतिश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकश्ये सर्व पदार्थांजाप  
 ज्जननं नाम द्वाविरातिमः सर्गः २२.

श्री रामोपाय, हे सुनीधर! जेता कछु स्थावर जंगम जगन दीमता हे, सो सप नारारूप हे, कुछणी स्थिर गहनेका नही, जे जाठधी मो जलकर पूरन हो गछ हे, अइ जे जडे जलकर समुद्र पूरन रिजते थे, सो जाठरूप बहे गये; अइ जे सुंदर जडे जगीये थे, सो आकाराकी नांई शून्य हो गये, अइ जे शून्य स्थान थे, सो सुंदर जुड़के हुअे जलकर दृष्ट आते हे, जहां जरती थी, तहां उतर हो गछे; अइ जहां उतर थी तहा जसि हो गछे हे; अइ जहां गडेवे थे, तहां पर्यंत हो गये हे; अइ जहां जडे पर्यंत थे, तहा समान पूरती हो गछे; हे सुनीधर! धरा प्रकार पदारथ देपत विपर्यय हो जते हे, स्थिर नहीं रहते, जहुरी में किसका आश्रय करे? अइ किस पावनेका जगत

इगो; यह पदार्थ तो सण नाराडूप है, अरु जो अडे अडे  
 अैथर्वक मंपन है; अरु जो अडे कर्तव्य इते है, ओर  
 अडे वीरवान, अडे तोरवान हुअे है, मेवी मरन मात्र हो  
 गये है, तम हम मारिजेकी रहा जाता है' सण नारा  
 होने है, तम हमारेवी धरी पयमें अल जना ते, रहना  
 किसीका नहीं, है सुनीथर ! यह पदार्थ अंशुधरूप है,  
 ओ अेकरा इधमिगुहू नहीं रहता अेक जिनमें कुछ  
 हो जाता है दुमरी जिनमें कुछ हो जाता है। अेक जिनमें  
 दग्दी हो जाते है, दुमरी जिनमें अपराधान हो जाते है।  
 अेक जिनमें अुपने दृष्ट आसते है, दुमरी जिनमें मर जाते  
 है, अेक जिनमें सुवेनी अुते हुते है; यह ममाङ्की स्थिरता  
 कणहु नहीं होती, सातवान धरिणी आग्था नहीं इते,  
 अे.जिनमें मसुद्धे प्रवाहके विजाने मइयन होय जाते है,  
 अरु मइयनमें बसके प्रवाह हो जाते है, है सुनीथर !  
 धम जगतका आभास स्थिर नहीं रहता; जेमें जायकका  
 स्थित स्थिर नहीं रहता तेमें जगतका पदार्थ अेकही स्थिर  
 नहीं रहेता, जेमें नर स्वागको धरता है, ओ कणहु डेसा  
 कणहु डेसा; ओ अे, व्यागमें नहीं रहेता; तेमें जगतके प-  
 दार्थ अरु लरुभी अेकरा नहीं रहने; कणहु पुरष स्त्री  
 हो जाता है, कणहु स्त्री पुरष हो जाती है; अरु मनुष्य  
 पशु हो जाता है, पशु मनुष्य हो जाता है; ओर स्थावरका  
 जंगम, अरु जंगमका स्थावर हो जाता है; मनुष्य देवता हो  
 जाता है, ओर देवताका मनुष्य हो जाता है, धरि प्रका  
 धरी वंशरी नांरु लरुभी स्थिर नहीं रहेवी; कणहु कवको  
 जाती है, कणहु अधको जाती है, स्थिर कणहु नहीं रहवी,

सदा लटकत रहती है, है सुनीधर! जेते कछु पदारथ दृष्टिमें आवते है, सो सग नष्ट हो जनेके है, केसैंई स्थिर रहनेका नाहीं। जे सग नदियां है सो सग जडवाजिमें लप होष जगगी; तेसैं जेते कछु पदारथ है सो सग जडवाजिको प्राप्त होहिंगे, अरु जडे जनिष्टहु जेरे जेभते लीन हो गये है; अरु जे जडे सुंदर स्थान सो शून्य हो गये है; अरु जे सुंदर ताल, अरु जगगी, मनुष्य करी संपूरन, जेमे स्थान सो शून्य हो गये है; अरु जे मरथलकी जूमिका, सो सुंदरताको प्राप्त जई है, अरु धटपट हो गये है; वगैरे साप हो जने है; सापके वर हो जने है। एम प्रकार है विप्र! जे जगत दृष्टिमें आवता है, सो कजहु संपदा, कजहु आपदा दृष्टिमें आवती है; अरु महा अपज दृष्ट आवते है, है सुनीधर! जेमे गण अस्थिरूप पदारथ है, तिसका जिनार जिनार में केमें आशय करे, अरु किसकी ईच्छा करे? सग नागरूप है; और जे यह मूर्ख प्रकारकर दृष्टिमें आवता है, सोभी अंधकाररूप हो जगगा; अरु अमृतकर पूरन जे अंद्रमा दृष्टिमें आवता है, सोभी शून्य हो जगगा; अरु सुमेरु आदिक जे पर्वत दृष्ट आवते है, सो सग नारा होयगे; और गग लोक नारा हो जगगे; ताते है सुनीधर! और किसीकी ज्वा करनी है; अज्ञा, विज्यु, रद्र, जे जगतके ईश्वर है, सोभी शून्य हो जगगे, तो हम मारिजेकी कहा पारता इहेनी है! जेता कछु जगत दृष्ट आवता है, सो स्त्री, पुत्र, पांडव, जैश्वर्य, धीर्य, तेज, करीके नाना प्रकारके छव जे, जायते है, सो सग नारारूप है; जहुरी में किस पदारथका आशय करे, और

किसकी छवि का जो है मुनीश्वर ! जो पुरुष दीर्घवर्षा है,  
 तिनको तो सत्य पदाग्र्य निरस हो गये, किसी पदाग्र्यकी  
 प्रशंसा नहीं करते करते जो सत्य पदाग्र्य नारायण आसते  
 है, जो अपनी आधुप्यको निरुद्धीके समताग्र्यत् देखते  
 है, जैसे निरुद्धीका समताग्र्य होता है तेसी रागीकी आ-  
 धुप्य है जिसको अपनी आधुप्यकी प्रतीति होती है,  
 जो किसीकी प्रशंसा करते नहीं। जैसे किसी अनिदान  
 अग्र्य पाते हैं, तब वह जाने, पति भुगतनेकी प्रशंसा  
 नहीं करता; जैसे जिसको अपना अपना सम्मुख आसता  
 है, जिसकोभी किसी पदाग्र्यकी प्रशंसा नहीं करते, यह सत्य  
 पदाग्र्य आपही नारायण है, तो हम किसीका आश्रय कर  
 मुभी होने? जैसे जो पुरुष समुद्रमें मत्स्यके आश्रय कर  
 गे हैं जो मैं धरिपत्र जैसे समुद्रके पाठ लींगा, और  
 मुभी होशिया, सो मुरजता करके उलही भोगे। जैसे  
 जिम पुरुषने धरि पदाग्र्यका आश्रय लिया है, और अ-  
 पने मुभके निमित्त जनता है जो नारायण नाम होशिया  
 है मुनीश्वर ! जो पुरुष भगवते निवारता रहता है नि-  
 तको यह जगत समनीय आसता है और समनीय जनके  
 नाना प्रकारके कर्म करता है और नाना प्रकारके मन्त्र  
 करके जगतमें भटकते हैं, कल्प उष, कल्प नीचे आते  
 है जैसे पवन जो पूर कल्प छवि कल्प नीचे आती  
 है, और स्थिर नहीं रहती जैसे यह जगत् भटकते किन्ते  
 है, स्थिर कल्प नहीं रहेगे, और जिस पदाग्र्यकी प्रशंसा  
 करते हैं, सो सत्य ज्ञान आसरूप हो गये है, जैसे ज-  
 नमें अग्नि समती है, तब सत्य धरनादिकके समती है,

तेसे जेते कछु पदाग्र्य हे, मो सण छंधनरूपी जगत जन  
 हे; तिसकें डालरूपी अग्नि लगी हे, तिसकें सणकें आस  
 लिवा हे; पहुरी जे छसि पदारथकी छच्छा कते हे मो महा  
 मूरख हे; अइ तिनकें आत्म जियागकी प्राप्ति हे, ति-  
 नकें यह जगत लमरूप आसता हे; अइ तिसकें आत्म  
 जियागकी प्राप्ति नांही हे, तिनके यह जगत रमनीय आ-  
 सता हे; अइ जगतके देखते नारा हो जते हे. सुपन  
 पुरीकी नांछ संगारकी में डेसे छच्छा करों? यह तो दुःखके  
 निमित्त हे, जेसे भिडाहमें जिय भिलाया हे, तिसका  
 ओहन कुनेपारे मृत्युकें प्राप्त होते हे, तेमें निषय भुगतने  
 पारे नाराकें प्राप्त होते हे.

इतिश्री योगवासिष्ठ वैराग प्रकृत्यु जगद्विपर्यय अ-  
 ननं नाम त्रयोविंशतिमः सर्गः २३



श्रीरामोवाच. हे मुनीश्वर! छसि संभारमें जोगरूपी  
 अग्नि लगी हे, तिसकर सण जलते हे; जेसें ताल-  
 में हाथके पापसोंकर डमलका चूरन हो जता हे,  
 तेसें जोगसोंकर मनुष्य दीन हो जते हे, जेसें  
 पापुसों मिथ नष्ट हो जता हे, तेसें काम क्रोध दुःखारमों  
 शुभ गुन नष्ट हो जते हे, जेसें इंद्रादीमें पनेमें अइ इ-  
 लमें काटे हो जते हे, तेमें निषयकी धारनारूपी कंटक आप  
 लगते हे. हे मुनीश्वर! यह जगत सण नारारूप हे; किसी  
 पदाग्र्यका स्थिर रहना नांही हे, वासनारूपी जल, अइ  
 छद्विपारूपी गाडी हे, तिसमें पुरय डालगों आप इर्या हे,  
 मो जे दुःखकें प्राप्त होवेगा. हे मुनीश्वर! वासनारूपी



मूलमें अक्षुभी होती पगोपे दुःखे है; अरु मनक्षुभी नर  
 व्याप पगोपक विन-वक्षुभी आत्माके गरुमें जागता है, नर  
 आमनाक्षुभी ताग दूरी पञ्चा तप यह अमनी निवृत्त होप-  
 गा. हे मुनीश्वर! हरिदा भोगरी वृत्ता मो अपनका  
 क्षान है, भोगरी वृत्ता इ भगता है, शक्तिसे प्राप्त नहीं  
 होता, ताके मुञ्जेके किसी भोगरी वृत्ता नहीं. न गन्धी  
 वृत्ता है, न धरकी, न अनकी वृत्ता है, न मनेक दुःख-  
 मानता हों, न अनेक मुख मानता हों. किसी पदावका  
 मुख नहीं; मुख नै होना मो आत्मज्ञानकर होना है,  
 अन-वथा किसी पदावकर होता नहीं; जैसे सूर्यके उदय  
 दुःखेगिना अवधारका नारा नहीं होता, तेमें आत्मज्ञान  
 गिना संसारका दुःखका नारा नहीं होता, ताके मोर्छ उपाय  
 मुञ्जेके उहो निराकर मोहका नारा होवे, और में सुखी होत.  
 हे मुनीश्वर! भोगकों भुगतनहाय नै अहका है, मो मेंने  
 लाग निरा कि भोगरी वृत्ता केमे हेवे हे मुनीश्वर यह नि  
 पक्षुष निराका स्पर्श किा हे निराका नारा हो जाता है अरु  
 सगप निराके काटना है, मो अके नै हरिके मार जागता है  
 अरु निपक्षुषी सगप निराके काटने है, सो अनेक जन्म  
 परंत मागते अने जने है, ताके परम दुःखका क्षान नि-  
 पक्षुष भोग है; याने विपक्षुषी परम निप है अरु वरु  
 कों शरीरका युगन होना मोभी में सद्गुरु परवृ विपक्षुषी  
 भुगतना मेमों केमोर्छ सदा नहीं जाता. यह मुञ्जेके दुःख  
 दावक दृष्टिमें आता है; ताके मोर्छ उपाय मुञ्जेके उहो, निरा-  
 कर मेरे हृदयमें अज्ञानक्षुभी अवधारका नारा होने; अरु  
 नै न उहोगे तो मे मेरी जातीपर धीमक्षुषी शिवा ध-

रहे जेहा गहोंगा, परंतु जोगकी ध्विजा न करोंगा. हे मुनीश्वर! जेते कुछ पदारथ हे, सो सत्य नाराडूप हे: जेसे अंगजिमें लज नही इहरता, तेसे विषय जोग अर आधुन्य नारा दुर्ध जते हे, इहरते नाहीं. जेसे कंदी कर मरछी दुःख पावती हे, तेमें जोगकी तृष्णा कर छव दुःख पावने हे, ताते मुनिकों किसी पदारथकी ध्विजा नाहीं. जेसे किसीने मरीचिकेके लक्षकों सत्य ज्ञान लक्षपानकी ध्विजा करी देख्या मो लक्ष पावत नांही, ताते में किसी पदारथकी ध्विजा नाहीं करता.

धृतिश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे , सर्वांत प्रतिपाद्यत नाम अतुर्विरातिमः सर्गः २४.

श्रीरामोवाच. हे मुनीश्वर! संसाररूपी पिशारेमें अर मोहरूपी शीशमें मूरण्डा मन गिर जता हे, तिसकर पख्या दुःख पावता हे, शांतिज्ञान कण्डु नही होता. लज गरा अवस्था आवी हे, तज सर्व शरीर लज्जशील होकर कंषने लगते हे: जेमें पुरातन अरुणके पत्र पवन कर हिलने हे, तेमें गरा अवस्थाकरं अग हिलते हे, अर तृष्णा वृद्धि हो जाती हे: जेसे नीमका अरुण ल्यों ल्यों अरु होता हे, तों तों कड़वा बदती हे, तेमें तृष्णा बदती हे. हे मुनीश्वर! निरा प्रवचने रह, छंदिवादिजनका आशय अपने मुख निमित्त लिया हे, सो मूरण्य संसाररूपी अधरूपमें गिरता हे, निकम नही राकता: अर अग्यानीका मित्त जोगका त्याग करामित्त नही करता हे. हे मुनीश्वर! लमतके पदारथमें मरीचि बुद्धि मलीन हो गई हे. जेमें

अरणा इनमें नदी मखीन होती है; जैसे भागसर भा  
 समें मखी शुष्मी जाती है, तेमें लगतकी सोबा देखन  
 देखत निगस हो जाती है, जैसे लगतका पदाग्र्य मू  
 अडों मखी आसना है; जैसे पानीका अना तुनकी  
 आच्छादित होता है, अर मूगका आत-तिम तुनका रम  
 नीय जनक आने जने है, किं गिं जने है; तेमें यह  
 मूग्य लोगके मखीय जाती मूगनके गिं पके है, किं  
 महा दुःख पावते है, जैसे मूग मूगनृष, १३२ होता है  
 सो मुष्मी नहीं होता तेसे यह मूगनृषगाडूप मसाके प  
 दाग्र्य छिन डप मखीपो मूग उडनहाग केमें मुष्मी होने  
 है मुनीयः । अतः पदाग्र्यमें अर मखी अडि अमल हो  
 गई है ताते मोर्छि उपाय न्हो, गिराके परतणी नाई मखी  
 अडि निश्चय होवे मा प. देसा रे जे परमानदेके ज  
 तनमें गेने है, अर निर्णय, निगदर प. गिराके पावेने  
 संसार कहुणी नहीं गहता है, अडुगी पानना कहु नहीं  
 गहता है तेमें सूरन लगतकी नाना रडाकी अयना सख  
 द्य जाती है, तिम प. पासेका उपाय मुअके न्हो है  
 मुनीयः । जैसे प.ते मखी अडि पुन्य है ताते में शाति  
 पान नहीं होता यह मसाके अर मसाके उर्म मोहडूप  
 है छसमें पडे दुअे शानिके राष नहीं होते अर जन  
 कदिक मसाके रहे पुअे जनकी नाई निर्णय गहते है,  
 शानिमान मसाके निर्णय गहते है मा जैसे डोडि की  
 यसों पून होय, अर कहे जे मुअके कीयका परा नहीं  
 दुआ, तेमें शरके विक्षेपडूपी कीयमें परेदुअे शानिमान  
 में निर्णय रहे है, तिसकी समुअ कहा है, सो कृपा कर कहो

अरु तुम जैसे जे रात जन हे सो विषयकों भुगतने दृष्ट  
 आवते हे, अरु लगनकी चेष्टा सभ्य करते हे; सो निर्लेप  
 डेसो रहने हे, सो शुकुति कहो. जैसे तुम जल कमलवत्  
 गहेते हो सो कहो. यह श्रुति तो मोह करी मोही जाती  
 हे. जैसे ताजमें हस्ति प्रवेश करता हे, ओर पानी मलीन  
 हो जाता हे, तेसो मोह करी श्रुती मलीन होय जाती हे,  
 ताते सोध उपाय कहो, जिसकर श्रुति निर्मल होये. यह  
 असंगोपमे श्रुति स्थिर क्यहु नही रहती. - जैसे मूलसो  
 कुहासे कर कटा मृच्छ स्थिर नही होता, तेसो पारानासो कटी  
 श्रुति स्थिर नही रहेती. हे मुनीश्वर! संसाररूपी विरू-  
 चिका मुक्तकों लगी हे, ताते सोध उपाय कहो, जिसकर ह-  
 र्यका नारा होये, धरिने मुक्तके जग दुःख दिया हे; अरु  
 आत्मज्ञान रूप प्रकारा होय, जिसके उदय हुये मोहरूपी  
 अंधकारका नारा होये. हे मुनीश्वर! जेमें पादरसो संद्रभा  
 आच्छादित होय जाता हे, तेसो श्रुतिकी मलीनताकर मे  
 आच्छादित हुआ हो, ताते सोध उपाय कहो जिसकर आ-  
 कन दूर होये. अरु जो आत्मज्ञानसो नित्य हे, जिसके  
 पायेने अहुरी पावता कछु नही रहेता, धरिने संपूर्ण दुःख  
 नष्ट हो जाते हे. अरु अंगर शीतल हो जाता हे, असा  
 नै पद हे, तिसकी प्राणिका उपाय मुक्तकों कहो. हे मुनीश्वर!  
 आत्म ज्ञानरूपी संद्रभाकी मुक्तकों छच्छा हे, जिसके प्रकारा  
 अरु श्रुतिरूपी कमलनी गिली जाती हे, अरु जिसकी  
 अमृतरूपी दिग्ग कर तृप्त धनि होती हे सो कहो. हे मुनी-  
 श्वर! अम मुक्तके मूहमें गहेनेकी छच्छा नाही, अरु  
 जन जिनो कहेनेकीभी छच्छा नाही. मुक्तकों तो धरिनी

पक्षी छवि है जिस पक्षि वीर राति होय नय  
 छतिश्री योनवागिठे वैगग प्रकरो वैगग प्रयोजन  
 वर्धननाम पयवि । तिम मन. २५

श्री गभोपाय के मुनीश्वर ने छवि की आस्था  
 से ही जो मूषा के जेमें पनपन करती छ. इहती  
 नाही, तेसो आधुनिक जिनमयु के जेसो अरथा का नम  
 इहते जो नते है, तय उनका इ ययन रात इहता  
 गहता २ तेमें आगत दिन दिनमें ययन हो जाती है  
 जेसो शिनछे कपानमें यद्रमाकी रे ॥ कछुभी है तेसा  
 यह शरीर है हे मुनीश्वर जिनमें छनमें आस्था है  
 सो महा मूषा है यह न कानडा आरा है जेमें जिरी  
 चुके पडा लेती - तेमें सयमे जब पडा लेता है  
 जेमें जिरी चुके। मजात करे नही देती तेमें सयमे  
 जब अग्यानके गृहन २ लेता है अरु जिरीमे जासता  
 नाही, हे मुनीश्वर नय अग्यानरूपी - रोष आध ग  
 जाता है तय लोणरूपी मोर नयन होके नृत्य करता है  
 नय अग्यानरूपी मय अरथा इता है तय इ पदरूपी  
 मजरी अने लगती है, अरु लोणरूपी जिशुरी छिन  
 छिम होय होय नट हो जाती है अरु तृण्यारूपी जलमें  
 इमे इमे छवरूपी पछी परे इ य पावते है, रातिकी  
 प्राप्ति नही होती है मुनीश्वर यह नगररूपी नडा रोग  
 लग्या है, तिसका निवारन करनेका मेतसा पतय है, जो  
 पाने मोष्य है जिसरु अमरूपी रोग निहत होवे, सोध

उपाय कहे। यह जगत भूरण्डों रमनीय दिखता है,  
 ऐसे पदारथ पृथ्वीपर, अरु आकारामें, अरु देवलोकमें,  
 अरु पातालमें कोउ नाहीं जे ज्ञानवानकों रमनीय दिजे,  
 ज्ञानवानकों सज्ज लभरूप जागता है; अरु अज्ञानी ज-  
 गतमें आस्था करता है। हे मुनीश्वर! मंद्रमामें जे कलंक  
 है, तिसकर शोभा सुंदर नहीं लगती, जस्य कलंक दूर होय  
 जस्य, तस्य सुंदर लगे; तेसैं भरे चितरूपी मंद्रमामें काम-  
 रूपी कलंक लग्या है, तिसकर उज्वल नहीं जासता, तातें  
 सोध उपाय कहे; जिसकर कलंक दूर हो जस्य। हे मुनीश्वर!  
 यह चित्त अहुत अंशल है, स्थिर इच्छामित् नहीं होता,  
 जेसैं अग्निमें डार दिया पारा उड जता है, तेसैं चित्तपी  
 स्थिर नहीं होता; जियपकी तरङ्ग सदा धावता है, तातें  
 सोध उपाय कहे, जिसकर चित्त स्थिर होवे; ओर संसा-  
 ररूपी जनमें जोगरूपी सर्प रहते है, सो छत्रका दंश  
 करते है, तिससो अनेका उपाय कहे; अरु जेती उधु  
 किया है, सो रागद्वेषके आय मिला दुर्ध है, तातें सोध  
 उपाय कहे जिसकर रागद्वेषका प्रवेश न होवे, जेमें रामु-  
 द्रमें परे होय, अरु जलका पररा न होय, तेमें यह संसा-  
 रमें परे है तिसकों तृष्णारूपी जलका पररा न होय, जेमा  
 उपाय कहे; जिसकर धसकों रागद्वेषका पररा न होय;  
 अरु मनमें जे मननरूपी सत्ता है, सो शुभगीर्णों कर  
 दूर होती है, अन्यथा दूर नहीं होती। सो निश्चित् अर्थ  
 आप भरेके शुक्ति कहे; ओर आगे जिसकों जिस प्र-  
 कार निश्चित् दुर्ध है, सो कहे। अरु जिस प्रकार तुमारै  
 अतरमें शीतलता दुर्ध है सो कहे। हे मुनीश्वर! जेसैं

दुम बनते हो मो उहो, अर जे दुभारे निहमान वह  
 खुगती नाही पाई, तम ने तो उधु नाही बनता, तो ने  
 मज त्यागकर निअहंकार होय गहोगा. कल्पनग हे  
 खुगती मुळी न प्राप्त होईगी तगतम में भोजन नाही  
 कौगा, अर बनपानभी नाही करगा, अर भानादिक  
 क्रियाभी नाही कौगा. भपराय अरनभी नाही कौगा,  
 ओर आप ।। अरनभी नाही कौगा, निगहन होअगा.  
 ओर ये न मेरी रह हे, ओर न मे रह हो, सज त्याग  
 करे मेरी गहोगा. जेमें अगरे उपर भूचि स्थिति होती  
 हे, तेमें हेय रहोगा. भाग आवते वतते आपही छिन  
 होर वरागे. जेमें तेरिगा दीपक लूकता हे, तेमें अ  
 नर्धपिन रह निमान होर बनगा तम महा सातिमें  
 प्राप्त होअगा

वाहनीडोवाय. हे भागद्वारा जेमें उही करी गमछ  
 सुप होर गहे जेसे जे भयको देणके मोर सार करे  
 सुप हो बनता हे

छतिश्री योगनागिठे वेगग प्रकृतेषु व्यनन्य त्याग  
 र्गन नाम पद्विगतिम् सर्गः २६

वाहनीडोवाय हे पुन' जल इस प्रकार रधु पराडूपी  
 आकारके रामचंद्ररूपी अद्रमा जोले, तम सजगी मौन हो  
 गये, अर स के रोम अडे हो अरि, मानो गेमहु अड  
 होकर रामछके लयन सुनते हे अर जेते उधु सजामें  
 जेते थे, सो सज निर्वासनारूपी अमृतके समुद्रमें मज हा

गपे, वशिष्ठ, वामदेव, विश्वामित्र, आदि जो मुनीश्वर थे; और जोते दृष्टि आदिक जो मंत्री थे, और राज दरारथ अइ जोते मंडलेश्वर थे, और जोते आकर नोकर थे, और मात कौराख्या आदिक सभ मैांन हो गपे. अर्थ यह जो अचल हो गपे है; अइ पिण्डमें पंथी जोते थे सोभी मैांन हो गपे; अइ जगीमें पशु आदि थे, सोभी मैांन हो गपे; अइ आरा तृण जात रही गपे; अइ जो पंथी आसपमें भेठे थे, सोभी मुनकर मैांन हो गपे; अइ आकारके पंथी जो निकट थे, सोभी रियर हो गपे; अइ आकारमें देव, सिद्ध, गंधर्व, विद्याधर, किंनर, थे; सोभी आय सुनने लागे; अइ कूलकी परपा करने लागे सभ धन्य धन्य शब्द करने लागे। और कूलकी परपा सो मानो परङ्की परपा होती है; अइ धीर रामुद्रके तर्ग उछलते आपने होष, अइ मोतीकी माताकी जृष्टि आपत होष; और जोसे मांजुनके पिंड उडने होष, छसि प्रकार आधी धडी पर्यंत कूलकी परपा जर्ष; अइ जडी सुगंध आय पसरी, अइ कूलपरी जौंरे दिरेने लागे; और जडा विचारतिस कालमें हो रहा; अइ नमोनमः शब्द करने लागे.

देवोवाच. हे कमलनेन गधुवशी आकारमें अंद्रभाडूप आप रामछ। तुम धन्य हो। तुमने जडे येष्ट स्थान देपे है, अइ बहुत प्रकारके जयन सुने है; वाने जोसे आप जयन कहे है, जोसे जयन कपहु नांही सुने. छसि जयन सुनके हमारा जो देवताका अजिमान था, सो सभ निवृत्त जया है. अमृतकृपी जयन सुनकर हमारी छुद्धि पूरन हो गई है. हे रामछ। जोसे जयन तुमने कहे है, जोसे



अमनं षट्स्वपतिकुं कहेनेकों समर्थं नाक्षी ; तुम्हारे अमन परमानन्दके इग्नहारे हे, ताने तुम धन्य हो.

छतिश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रदर्शने देवसमाज्य अर्चनं नाम सप्तविंशतिमः सर्गः २७

वाङ्मनीशोवाच. हे वाग्द्वान्! जैसे अमन देवता इन्द्रके पिआर करत जये. रेवुगराडा कुल पूजये लोग हे; निशमे रामछने जटे छार अमन मुनीश्वरके विद्यमान कहे हे; अण जो मुनीश्वर उचर हायगा गोपी अण दिया अद्विये. जेमे कूडे छपर जोग स्थिर होत हे, तेसे व्याम, नाद, पुनह, पुनरत्य, आदि राण साधु सभामे आप स्थित जये; तण वशिष्ठ, निशामित्र आदि मुनीश्वर छडे अडे दुजे, अरे निनकी पुन कने लागे. प्रथम पुन गन्य हगरेयने करी, हिर, नाना प्रका गगो सयने वाडी पुन करी, ओर लथान्ज्य आमनके छपर जेडे; ओ केरो हे अरे नाद अदुत मुह मूर्तिवारे हायमे जीवालेके जेडे, अरे स्वाम मूर्ति व्यासछ आप जेडे; ओर नाना प्रकारके गगो नित वस्त्र पहिरे दुजे मानो तागमे महा व्याम धरा आर्ध हे जैसे अरे दुर्वासा, वामदेव, पुनह, पुनरत्य, अरे षट्स्वपतिके पिता अग्निग, अरे षुशु, ओर मेहु तहा वा, ओर अकार्षि, गगर्गि, देव पिं, देवता, मुनीश्वर गम आडे सभामे स्थित दुजे. डिम्बिके जडी लटा हे, डोछने मुनठ पेरे हे, डिम्बाने इद्राक्षरी माया पेरी हे, डिम्बाने मोतीकी माया पेरी हे; डिम्बिके छमे गलकी

भाषा है; और हाथमें कुमंडलु, भुजाधाता, किसीके महा  
 सुंदर वस्त्र; ऐसे जडे तपसी आयेके जेठे, तामें डेडि राग-  
 सी स्वभावके, डेडि सात्विक स्वभावके; ऐसे जडे जडे आये;  
 अरु सज विद्वत् जेद पढनहारे प्राण हुअे, और किसीका  
 सूर्यवत, किसीका अद्रभावत्, किसीका तारावत्, ऐसे जडे  
 प्रकार वारे पुरुषार्थपर नतन करनेहारे, सो नयान्नेग  
 आसनपे स्थिर जये; और मोहनी मूर्त्ति रामछ अरु  
 दीन सुभाववारे हाथ नेरके सजामें जेठे, तिसकी सज  
 पूज्य करत जये; कहत हे जे हे रामछा तुम धन्य हो।  
 और नारद सजके विद्यमान कहत जये, जे हे रामछा।  
 तुमने जडे निवेक अरु जेगभके जखन कहे, सो सजको प्यारे  
 लागे; सजके उद्यान करनेहारे हे; और परम जोधके उ-  
 रन हे, हे रामछा। तुम जडे अदीवान उदारात्मा दृष्ट  
 आवते हो; अरु महा वाक्पका अर्थ तुमने प्रगट होता  
 हे; ऐसा हज्जवत्र प्राण साधमें और अनंत तपसीमें डोडिक  
 होते हे; अरु जेते कछु मनुष्य हे, सो सज पशु जेसे  
 दृष्टिमें आवते हे; ज्यों जे किसिकों संसार समुद्रके पार  
 होनेकी धृच्छा नांही, और जे पुरुषार्थ पर नतन करने  
 हे, सोध मनुष्य हे, हे साधो। मृच्छ तो बहुत होते हे,  
 परंतु अंजनका मृच्छ डोडि होता हे; तेमें शरीरपायी बहुत  
 हे, परंतु जेमा डोडि होता हे; और गज आस्थि मांसके  
 पुत्रे गाय भिने हुअे बाडते फिरते हे; सो जेसी लंबीकी  
 पूतरी होती हे, तेगे अस्तानी छव हे; और हस्ति तो  
 बहुत हे; परंतु जिसके गरतकमें मोची नीक्षता हे, सो  
 निरक्षा हे, तेसैं मनुष्य तो बहुत हे, परंतु पुरुषार्थ पर

जलन कुम्भेकाते कोउ नैते हे. अमे पात्रमे योते अर्थ  
 इहाभी जलुत हो जना हे तेमे तेनकी लुः योगी जलमे  
 डागी जिम्माके पावती हे. तेमे योते जलन गो आपके  
 हियेमे जलुत होते हे, आपकी लुद्धि जलुत भियेन हे.  
 अर दीपक जेसी प्रकारा वागी हे; अर जोरडा पत्रम पाव  
 हे, ओर डेहेने मानने आपको शीघ्र सान होयेगा. अर  
 जे हम सज्य जेडे हे, गो हमते जिद्यमान आपको सान  
 होयेगा, तज्य जलनना जे हम सज्य मूर्ध जेडे ते.

धृतिश्री योगवासिष्ठे वैश्वान प्रकृत्यु सुनि मभाष्य ज-  
 नन नाम अष्टाविंशतिनः सर्गः २८

मभाष्येय योगवासिष्ठे वैश्वान्य प्रकृत्यु



मिहासनपर राज्ज दरायके पाय मेडा हे, अर सुपंजी  
 नाई प्रदागमान जिसरी इति हे तिगम पुन शुक्ल, सो  
 राज्ज साम्यका वेत्ता था, सत्यके सप बनता था,  
 असाके असात्य बनता था, मो गातरूप, ओर पर  
 मानदरूप आत्मामें विश्राम न पावन जया, तज्ज उरमे  
 विडप उडवा के तिमिने ने वान्ता हे मो न होयेगा,  
 इहेने के मुझे आनन्द नही जागता सो मरायके धरुके  
 ओर कानमें क्यामछ सुभेरे परतरी दगमें ओरि थे, ति  
 नो निष्ठ आसु उहत जये. हे जगजन! यह मसार  
 नज्ज अमात्मक उहामे जया रे वारी निवृत्ति हेमें होयेगी,  
 ओर आगे काउके धमकी निवृत्ति जई हे' मो इमे हे  
 गमछ। इस प्रकार जज्ज शुक्लने उवा तम निवृत्ति मि  
 गेभति के वे. आसछ हे न त इ न उपरग उत जये  
 तज्ज शुक्ल हे उवा हे जगजन न उ पुम केहा ता मा में  
 आसो जगता हो, धमके सु न गति प्राप्ति नही होती.  
 हे गमछ। जज्ज धम उका शुक्लने उवा तज्ज गर्वित  
 के वे. आसछ हे, मे निव्या उत जये के नरे ज  
 अनज्ज धमके शांति प्राप्ति न होयेगी मो के अज्ज पिता  
 पुत्रका सजन जागता हे, ओमें निव्या गे आसछ  
 उहत जये, हे पुन! मे सन तत्वत्त नही, तु गज्ज बनउके  
 निकट न, वे गर्व तत्वत्त हे, अर सातात्मा हे उमसो  
 तेग मोह निवृत्त होयेगा. हे गमछ। जज्ज धम प्रकार  
 व्यामछने उवा, तज्ज शुक्लने उहामो अवे, तज्ज के मि  
 यिज्ञा नगरी गज्ज बनउकी थी तिसमें आपउ गज्ज न  
 नके द्वापे स्थित जया नज्ज जेहीने नज्ज बनउके

जैसे तैल बिना दीपक निर्वाण हो जाता है, तैसे निर्वाण हो गये, तैसे समुद्रमें अंध लीन हो जाती है, तैसे मर्कटा प्रकारा संघाडाक्षमें सूँके पास लीन हो जाता है तैसे कथनाक्ष कथंके त्वागडर अक्ष पदके प्राप्त भवे

धृतिश्री योगवासिष्ठे सुमुक्षु प्रकरोति शुके निर्वाणव-  
धुनं नाम प्रथमः सर्गः १

विश्वामित्रोवाच. हे राजन् धरारथ ! तमे शुकेण शुके  
पुत्रिवारे च, तसे रामेण च. तसे सानिके निमित्त के  
सके कष्टुक मार्जन करैय धूम, तसे रामेणके विश्वासके नि-  
मित्त कष्टुक मार्जन अहिते कहें त्ने आवरण करदही  
भोग है; सो धृच्छा तिनने निवृत्ति लक्ष है; अरु त्ने  
कष्टुक जनये भोग या सो लभ्या है; अम हमारे  
कष्टुक जुगली करनी है, तिस करके उरके विनाम होवेगा  
तसे शुकेणके योउसे मार्जन करके सातिश्री प्रहिते  
तमे धनिकोपी होवेगी. हे राजन् ! अम रामेणके भोग  
गकी धृच्छा स्पर्सा नही करती. तमे सादधानके अस्वात्म  
आदि दुःख स्पर्सा नही करता, तमे रामेणके भोगकी  
धृच्छा स्पर्सा नही करती, भोगकी धृच्छा सजको वीन करदी है,  
हमकार नाम अंधन है; अम भोगकी वासनाम क्षय क-  
रता है, त्ने त्ने लघु हो जाता है; अरु त्ने त्ने भोगकी धृच्छा  
जकी वासना क्षय होवी है, त्ने त्ने गरिष्ठ होता है, तम  
अम कुरेके आत्मानंद प्रकारा नही होता, तमअम निवृत्ती  
होवी; तम आत्मानंद प्राप्त होता है.

मिथामनपर गन्त दशम्येके पास जाता है, अरु सुपेकी  
 नर प्रशासनात् निराकी प्रति है, तिसमें पुत्र शुक्ल, सो  
 सग साम्ना वेता था, मरको म वं बनता था,  
 अमरको असत् बनता था; सो शक्तिरूप, अरु पर  
 मान्द्रूप, आत्मामें विद्याम न पावत जया, तम हरेमें  
 निः प ईसा जे निरुद्धे में बनता है, सो न होवेगा;  
 जे जे मुझे आनन्द नही जागता, सो मरको धर्म  
 अरु ज्ञानमें क्यामछ सुमेश परतरी हगमें जे वे, ति  
 ने निः आयत्त रहत जे। हे जगन्ना! यह मरको  
 सग धर्मात्मक प्रदामे जरा ते वादी निरुद्धि केमें होवगी;  
 अरु अगें केरके धर्मकी निरुद्धि जर्जरे' सो कदा हे  
 गमछ। धर्म प्रकाश जग शुक्लने दा, तम विद्वत् मि  
 गेमनि को ने, व्यासछ हे सो तः न उपरग मत्त जये  
 तम शुक्लने ज्ञा, हे जगन्ना! न उधु पुम केदा हा मा में  
 आगेमो बनता हों, धर्मको मु । गानि प्राप्त नही होवी,  
 हे गमछ। जग धर्म प्रकाश शुक्लने ज्ञा, तम गर्जत  
 जे वे, व्यासछ हे, सो विद्या म् न जे जे भरे ज  
 बनको धर्मो। शक्ति प्राप्त न होवेगी, सो जे अज पित्त  
 पुत्रका सगल जागता है, जेमें विद्या म् के व्यासछ  
 रहत जये, हे पुन। में सर्व तावत नाँही, तु गन्त बनकेके  
 निकर ज, वे सर्व तावत है, अरु सावात्मा है, उमसों  
 तेग मोह निरुद्ध होवगा। हे गमछ। जग धर्म प्रकाश  
 व्यासछने ज्ञा, तम शुद्धेषछ उदागों असे; तम जे मि  
 यिता नगरी राज बनकेरी थी तिसमें आपकर गन्त न  
 नजे द्वारमें स्थित जया। तम जेहीने जगको बनकेमे

कक्षा, जे आमछके पुत्र-शुक्रछ आप अउं छे; तय रा-  
 ज्यने जन्मा, जे धसकें बितारा छे, तय कक्षा अउं गहो;  
 तय अउं रछे. धसी प्रकार ज्येही जय कक्षा, तय सात  
 दिन अउं रहत जीन गये, तय राज्यने ईर पूछवा जे शु-  
 क्रछ अउं छे के बचने रछे छे; तय ज्येही कक्षा अउं छे.  
 तय राज्यने कक्षा आगे से आओ. तय आगे से आये;  
 इस दृष्यज्येतेपी मात दिन अउं गछे, गहुरी राज्यने  
 पूछवा, जे शुक्रछ छे, तय ज्येहीने कक्षा जे अउं छे. तय  
 राज्यने कक्षा, अंतःपुरमें से आओ; उमकें नाना प्रकारके  
 जोग जुगनाओ तय अंतःपुरमें से गये, उहां अिनपके  
 पास सात दिन अउं रछे. तय राज्यने ज्येहीके पूछवा, जे  
 तिसकी दशा डेरी छे, ओर आगे कक्षा दशा थी? तय  
 ज्येहीने कक्षा जे आगे निराहर करे न शोभान हुआया,  
 अइ जय जोगकर न प्रसंग हुआ छे; छष्ट अनिष्टमें  
 समान छे. जेमें मंड पवन करे अइ बलापमान नहीं  
 होये, तेमें यह अउं जोगका निराहरकर बलापमान नहीं  
 भये. जेमें पैपेके अंधके बल बिना नदी, तात, आदि  
 बलकी धिजा नाही होती, तेमें इसको किसी प्रकारकी  
 धिजा नाहीं. तय राज्यने कक्षा, उहां से आओ तय  
 गो से आओ. जय शुक्रछ आपि तय राज्यने जयके उके  
 अउं होय प्रनाम दिया, फिर छोडि भेठ गये. तय राज्यने  
 कक्षा जे छे मुनीधर । वृम किम निमित्त आये हो; वृमको  
 कक्षा अउं छे सो दहो, तिसकी प्राप्ति में अइ रज.

श्रीशुकैवाच. हे गुरु ! यह संसारका आंखर डेमें उत्पन्न  
 हुआ छे, फिर डेमें सांत-होयेगा, सो वृम कहो.



विद्याभिन्नोपाय. हे गमछा ! त्वय धसि प्रकार शुक्र  
 देवछने कदा त्वय राज्ज वनकने नथारास्र जपरेस न्ने  
 कछु प्पासछने कखा या सोध कखा. पंहुगी शुक्रछने कखा,  
 भगवन् न्ने कछु तुम कसो हो, सोध भिम पिताछ उदत  
 था, अर मोध शास्त्र कहत हे, ओर निशारेमो मेहु  
 ऐसा वनता हो, न्ने पह मंगार अपने चित्तमें उत्पन्न  
 होता हे, अर चित्तका निर्देह हुवे लभजी निवृत्ति होती हे,  
 फिर विद्याम मुक्तो नही प्राप्त होता हे.

वनक उवाच. हे मुनीश्वर ! न्ने कछु भेने कखा हे,  
 अर न्ने तुम वनते हो. धसते अवर उपाय कछु हे,  
 ऐसा वनता नही, अर कहनाभी नही. पह ससार  
 चित्तके संवेदनकर हुआ हे. वण चित्त धुग्नेने रहित  
 होता हे, तम लभ निवृत्त हो वनता हे, अर आत्मगत  
 नित्य शुद्ध हे, अर परमानंद स्वरूप हे, केवण चैतन्य हे ;  
 निस्तथा आग्वास करेगा, तम त्वं विश्वाभक्तो पायेगा; अर  
 त्वं मुक्ति स्वरूप हे; अहेने न्ने तेरा वतन आत्माकी ओर  
 हे. दृश्यकी ओर नाहीं, ताने त्वं जडा हृदयारत्ना हे. हे  
 मुनीश्वर ! त्वं भेदिं प्पासने अधिक वन भेरे पास आया  
 हे; ओर त्वं भेरेनेभी अधिक हे; अहेने न्ने हमारी बेष्टा  
 बाहिरने दृष्ट आवती हे, ओर तुमारी बेष्टा बाहिरने क-  
 छुनी नाहीं; अर अंतरने हमारी हृदिगणी नाहीं.

विद्याभिन्नोपाय. हे गमछा ! वण धसि प्रकार राज्ज  
 वनकने कखा, तम शुक्रछ निःमंग, निःप्रयत्न, निर्जन्म  
 हो; अर सुमेरु पर्वतकी इंगामें वण निर्निर्कल्पक समा-  
 धि दस सहस्र वर्ष तांछे करी. पंहुरी निर्वाण हो गये.

जैसे तेज बिना घीपक निर्वाण हो जाता है, तैसे निर्वाण हो गये, जैसे समुद्रमें लूट लीन हो जाती है, जैसे सूर्यका प्रकाश संध्याकालमें सूर्यके पास लीन हो जाता है, तैसे कलनाश्रुप कलंकके त्यागकर खल पदमे प्राप्त भवे.

ईतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे शुद्ध निर्वाण्युप-  
र्णन नाम प्रथमः सर्गः १

विश्वामित्रोवाच. हे राजन् दशरथ ! जैसे शुक्ल शुद्ध लुडिवारे ये, तैसे रामछ है. जैसे रातिके निमित्त उसको कछुक मार्जन करिये था, तैसे रामछको विश्वामके निमित्त कछुक मार्जन अहिये, कहिये जे आवरण करनहारि भोग है; सो धर्या तिनने निवृत्ति भव है; अइ जे कछु जनये जोग या सो जन्या है; अण हमारे कछुक ज्युगती करनी है, तिस करके उसको विश्वाम होवेगा. जैसे शुक्लको योउसे मार्जन करके रातिकी प्राप्ति भव थी, तैसे धनकोभी होवेगी. हे राजन् ! अण रामछको भोगकी धर्या स्पर्श नही करती. जैसे ज्ञानवानको अध्यात्मक आदि दुःख स्पर्श नही करता, तैसे रामछको भोगकी धर्या स्पर्श नही करती, भोगकी धर्या सजको दीन करती है, धर्मकार नाम बंधन है; अण भोगकी वासनाका क्षय करना, धर्मकार नाम मोक्ष है. ज्यों ज्यों भोगकी धर्या करता है, त्यों त्यों लघु हो जाता है; अइ ज्यों ज्यों भोगकी वासना क्षय होती है, त्यों त्यों गरिष्ठ होता है. जन्म-लग हरिकों आत्मानंद प्रकारा नहीं होता, तजलग विषयकी वासना हू नही होती; जन्म आत्मानंद प्राप्त होता है.

तब विषय वामना डोई नहीं रहती. तेमें मरथपमें ल-  
 तारी उत्पत्ति नहीं होती, तेमें ज्ञानवानको विषय वामनाकी  
 उत्पत्ति नहीं होती. हे साधा ज्ञानवान जे विषय जोगडा  
 लाग उगता हे, मो किसी रूपकी धम्डा करे नही करता।  
 मुभावनें ज्ञानवानकी विषय वासना छेक जती हे. तेसे  
 सुरजके उदय हुमे अधराडा अभाव हो जता हे तेमें,  
 गमछके अण किसी जोग पदारथकी धम्डा रही नाहीं;  
 अण भिदित पेद हुआ हे; अण आप विश्रामकी धम्डा  
 साहाता हे, ताने जे कहें, मोर्ध डगे; जिसकर विश्राम-  
 जाल होय. हे गजन्! यह जे जगवान परिशुष्ट हे, ध-  
 नकी श्रुति करे सांत होवेगा; अर आगेभी मोर्ध रघु-  
 वंरा कुलके शुर हे; धनके उपदेशद्वारा आगेभी रघुवशी  
 ज्ञानवान अपे हे. जे मर्वस हे, अर साक्षिरूप हे,  
 ओर विभावस हे, ओर ज्ञानके सुरज हे, धनके उपदेशकर  
 रामछ आत्मपदके प्राप होवेगा. हे परिशुष्ट! यह ज-  
 ह्वाडा उपदेश तुमारे समग्रमें हे, क्यों जे जण तुमारा  
 हमार विरोध हुआ था, तब उपदेश दिया ओर जे सण  
 कपीधर अर अरु करी पूजन हे, जेमा जे मंदिरायल  
 पर्वतमें आपकर अस्वाछनें संसार वारानाके निमित्त उपदेश  
 दिया था, अर तुमारा हमार विरोध था, तिमके निमित्त  
 अर ओर छुके उत्थान निमित्त जे उपदेश दिया था।  
 अण वही उपदेश तुम गमछके डगे; यहभी निर्मल  
 ज्ञानवान हे, अर ज्ञानपी वही हे, अर विमानपी वही  
 हे, अर निर्मल श्रुति वही हे, जे शुद्ध पात्रमें अरपन  
 होवे; अर पात्रमिना उपदेश नाहीं मुहान हे, अर जि-

समें शिष्यभाव न होवे, अर्थात् विरक्तता न होवे, ऐसा न्ने  
 अपात्र मूर्ख होवे, तिनको उपदेश करना व्यर्थ है; अर्थात्  
 न्ने विरक्त होवे, अर्थात् शिष्य भावना न होवे, तडिभी उ-  
 पदेश नहीं करना, अर्थात् दोतो करी संपन्न होवे तत्प करना;  
 पात्रमिना उपदेश व्यर्थ होता है; अर्थ यह न्ने अपवित्र  
 हो जाता है. जैसे गौडा दूध महा पवित्र है, अर्थात् श्या-  
 नकी त्वयामें डारिये, तत्प यह अपवित्र हो जाता है, तैसे  
 अपात्रको उपदेश करना व्यर्थ है. हे मुनीश्वर! न्ने शि-  
 ष्य अैराग करी संपन्न होता है, अर्थात् उदार आत्मा है,  
 सो तुमारे उपदेशके योग्य है; पुत्र केसे हो; न्ने पीतराग  
 हो, तत्प अर्थात् क्रोधने रहित हो; परम शांतिरूप है, सो  
 तुमारे उपदेशका पात्र रामछ है.

वाहमीकोवाच. इस प्रकार जल विधामित्रने कखा,  
 तत्प नारद अर्थात् व्यासादिकने साधो, साधो, करके कखा,  
 अर्थ यह न्ने जला, जला, कखा; अैसेही वयार्थ है. तत्प  
 राज्ज वरारथके पास जडे प्रकारके साध हुअे जेडे थे.

परिशोवाच. अज्ञाछके पुत्र परिशच्छने तिनको कखा  
 न्ने, हे मुनीश्वर! न्ने उछु तुमने आग्या करी है, सो ह-  
 मने मानी है; अैसा समरथ कोड नांही, न्ने संतकी आ-  
 ग्या निवारन करे. हे साधो! न्ने उछु राज्ज वरारथके पु-  
 त्र है. तिन रायके हृदयमें न्ने आग्यानरूपी तम है; जो  
 में ज्ञानरूपी मूर्धकरं निवारन करोगा. न्नेमें सुनके प्रकारकर  
 अंधकार दूर होता है; हे मुनीश्वर! न्ने उछु अज्ञाछने  
 उपदेश दिया था, सो मुत्रको अंधा मुमरन है, सोछ  
 उपदेश करेगा, जिनकर रामछ निःसंराय पदको प्राप्त होवेगा.

वाङ्मोक्षाय. इस प्रकार परिदृष्टने विद्यामित्रों द्वारा,  
ताके अनंतर, मोक्षका उपाय राम रामशुको कहत अया.

धृतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे विद्यामित्रोपदेशो  
नाम द्वितीयः सर्गः २

वशिष्ठोवाच. हे रामशु! जे कछु इमजल जे अन्ना  
शु तिसने मुत्रकों छुके इषान निमित्त उपरेरा दिया हे,  
मो जते प्रकार जरे मुमरतमें आता हे, मो अज पुत्र-  
कों कहता हों.

श्रीशानोवाच. हे भगवन्! कछुक प्रश्न कयेका अवसर  
आया हे; अज अेक मंत्राके हू कगे. मुज्य उपाय जे  
कहे हो, मो मन वृम कहोगे, परंतु यह जे वृमने कया,  
जे शुद्धेवश विरह मुक्ति हो गये, तो भगवान आसशु  
जे मंत्र हे, मो विरह मुक्ति हो न हुये

वशिष्ठोवाच. हे रामशु! जेमें भूँ डिग्निमें असने  
उज दिग्नि परती हे, तिनकी मंत्रया कछु नही होती, तेमें  
परम भूँके संवेनरूपी डिग्निमें त्रिनेत्रीरूपी विमनेनु हे, सो  
अमंज्य हे; और अनंत होके मिट जाते हे; अर और  
अनंत होते हे; और अनंत त्रिनेत्री अन्व समुद्रमें हो-  
वेगे; तिसकी मंज्या कछु नाहीं.

श्रीशानोवाच. हे भगवन्! जे आगे व्यतीत हो गये  
हे, और आगे जे होयेगे, तिनकी मंज्या होती हे; अर  
वर्तमानको तो जनता हों.

वशिष्ठोवाच. हे रामशु! अनंत कोटि त्रिनेत्रीके गन  
उपजे हे, अर मिट गये हे, अर केश होये हे, अर केश

होवेगे, गिननेकी संख्या कुछ नहीं, कहेंते जे एव अ-  
 संख्य है. अरु एव एव प्रती अपनी अपनी सृष्टि है;  
 ज्य यह एव मृतक हो जते है, तज उसी स्थानमें अ-  
 पने अंतवाहक मंडलपरपी पुलमें धंसका भाधव भास  
 आता है. अरु इसी स्थानमें परलोक भास आता है.  
 पृथ्वी, अप, तेज, वाय, आकाश, पंचभूत भासता है;  
 अरु नाता प्रकारकी वासनाके अनुसार अपनी अपनी सृ-  
 ष्टि भास आती है. जहुरी ज्य उहाते मृतक होता है,  
 तज उही सृष्टि भास आती है; नामरूप संयुक्त उही  
 जगत मत्य होकर भास आती है, जहुरी ज्य उहाते  
 भरता है, तज धस पंचभूत सृष्टिका अभाव हो जाता है;  
 ओर अपर भासती है; अरु तहेंकि एव होते है, तिनकेभी  
 इसी प्रकार अनुभव होता है. इसी प्रकार अेक अेक  
 एवकी सृष्टि होती है, अरु मिट जाती है, तिसकी संख्या  
 कुछ नहीं; तज अल्लाकी सृष्टिकी संख्या केसें होवे। नेम  
 पुरप हिर सेता है, अरु तिसके मज पदारथ अमते दृष्ट  
 आवते है, अरु नेमें नौकामें नेदे हुअे नही तहके अरु  
 अखने दृष्ट आवते है; नेसें नेवके दोपार आकाशमें मो-  
 तीकी भासा दृष्ट आवती है; नेसें सुपवेमें सृष्टि भासती  
 है; तेसें एवकों अम करके यह लोक परलोक भासता है;  
 वास्तवमें जगत कुछ उपलब्ध नहीं; अेक अद्वैत परमात्म  
 तत्व अपने आपविषे स्थित है; तिसविषे द्वैत अम अ-  
 विद्या करके भासता है; नेमें आलोककों अपने परलैखामें  
 अेताअ भासता है, अरु अणकों पाजता है, तेमें अतानकों  
 अपनी कल्पना जगत्सुप होव भासती है. है रामछा।

यह व्यासदेव ज्योतिष नेर अरे देवनेमें आया है, तिसमें  
 दस तो अेक आकाशरूप है; अरु अेकही नेशी क्रिया, अरु  
 अेकही नेमे निर्या हुआ है; अरु अरु दस समानही  
 सम हुने है; अरु जारे विवक्षणु आकार, विवक्षणु क्रि  
 या अेकवारै हुने है. नेमें समुद्रमें तरंग होने है, तामें  
 केंद्र मम अरु केंद्र विवक्षणु उपरने है, तेसैं व्यास हुवे है;  
 अरु समाने हम हुवे है, तिनमें दस व्यास बनी है, अरु  
 आगेभी अष्टनेर बही होवेगा जहुगी महा जागत रहेगा,  
 जहुगी नौभीने अज्ञा होके विदेह भुक्ति होवेगा; अरु  
 हमनी होवेगे. अरु ब्राह्मीकभी होवेगा; अरु जृमुणी  
 होवेगा, अरु जूहरपतिका पिता अमिराभी होवेगा; धरिया  
 कि अरुभी होवेगे. हे रामशु! अेक मम होने है, अेक  
 विवक्षणु होने है; अरु मनुष्य देवता तिर्यगानिक शुभ  
 केंद्र नेर समान होने है, केंद्र अेक विवक्षणु होने है केंद्र  
 शुभ समान आकाश आगे नेमे रूप क्रिया सहित होने है  
 अरु केंद्र गुरुपर उडते क्रिये है आनना, वनना, शु  
 वना, मरना, मुष्य अमरी नाश विपता है; अरु वास्त  
 वने केंद्र आता है न वनता है; न वनमता है, न मरता  
 है. यह अम अग्धानगोंक नामता है, अिचार कियेने  
 कछु निरसता नाहीं. नेमें इलीका यल देवनेमें जडा पु  
 त्र आता है, क्रि. ज्योत्य देवोंतो सां कछु नहीं निरसता,  
 तेमें जगत अम अविचार सिद्ध है; अिचार कियेने कछु  
 वासना नाहीं. हे रामशु! ने पुरुष आत्म गतामें न  
 था है, तिसमें देव अम नहीं वासना है, उह आत्म द  
 र्शा, सदा गात, आत्मा, परमानन्द स्वरूप है; अरु सग

इलनाते रहित है; जैसे छव-मुक्तियों को अध्याय नहीं सकता; जैसे जो व्यासदेव है, तिसको भेद मुक्ति, अरु विद्वेह मुक्ति को कोई इलना नहीं। सदा अद्वैतरूप है; हे रामछा! छव-मुक्तियों सय सर्वात्मा पूरन आसता है; अरु स्वस्वरूप है, स्वरूप सार सांतिरूप अभूत कयी पूरन है, अरु निर्वाणमें स्थित है.

धृतीश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे असंख्य सृष्टापत्ति प्रतिपादनं नाम तृतीयः सर्गः ३

वासिशास्य, हे रामछा! छव-मुक्ति अरु विद्वेह मुक्तिमें जेद कछु नहीं। जैसे स्थिर जल है, तोभी जल-है; अरु तरंग दिरते है, तोभी जल है; तेसैं छव-मुक्ति अरु विद्वेहमुक्तिमें जेद कछु नाही. हे रामछा! छव-मुक्ति अरु विद्वेहमुक्ति का अनुभव वृत्तमें प्रत्यक्ष नहीं आगता, कहेनैं जे स्वसंपद है; अरु तिनमें जे जेद आसता है, सो असम्पदसांझों आसता है; जानवानको जेद कछु नहीं आगता है; जैसे वायु संपदरूप होता है तोभी वायु है; अरु निष्पदरूप होता है तोभी वायु है; इसके वापते निरूप विषे जेद कछु नहीं; पर अवर छवको संपद होती है, तो आसती है; अरु निष्पद होती है तो नहीं आसती है, तेमें जानवान पुरपको छव-मुक्ति अरु विद्वेहमुक्तिमें जेद कछु नहीं। उह सदा अद्वैत क्कनाते रहित है, जल छवको उसाका शरीर आगता है, तज-छव-मुक्ति कहते है; जल शरीर आग्य होना है, तज विद्वेह मुक्ति कहते है, अरु उसाको दोष वृत्त है. हे



रामजी आप प्रकृत प्रभंगको मुन, न्ने सनका नूपन हे,  
 न्ने कछु सिद्ध होता हे, गो अपने पुरपार्थक शिद्ध होता हे,  
 पुरपार्थ जिन सिद्धि कछु नहीं होती, ओर कहते हे न्ने  
 रेव करेगागो होवेगा, गो भूषता हे; यह अंद्रमा रूपमे  
 गीतय अर उधारा कर्ता वासता हे, गो धर्ममे गीतयता  
 पुरपार्थकर लुध हे, हे रामजी! जिस अग्र्यकी प्रायना करे,  
 अर नतन करे, अर तिसमें द्विरे नहीं तो अनिश्चय कर  
 लडू पाता हे ओर पुरमें नतन तिसका नाम हे, गो  
 शनन कर, संतानन अर सत्य शास्त्रके उपदेशरूप उपाकर  
 तिसके अनुसार विचका निश्चरता होय सो पुरपार्थमे नतन हे;  
 तिसने धतर न्ने चेष्टा करता हे, तिसका नाम उन्मत्त चेष्टा  
 हे; अर जिस निमित्त नतन करता हे सोध पायता हे;  
 अक छय था, गो पुरपार्थप नतन करत अपुन धद्रकी  
 पक्षी पाध निनोकीका पति होय सिंघामनपर आरूढ हुवा,  
 हे रामयद्रा आत्म तत्वमे न्ने चैतन्य सपद, धस मपद्ररूप  
 होकरे रकुति हे, गो अपने पुरपार्थकर धकाडे पके प्राप  
 लध हे, ताने देण, निगये कछु सिद्धता प्राप लुध सो अ  
 पने पुरपार्थकर लुध, देवन चैतन्य न्ने आत्मतत्व हे,  
 तिसमें विचसवेदन, यनी मपद्ररूप हे, यह चैतन्य सवेदन  
 अपने पुरपार्थ करे मरुडपर आरूढ होय सिद्धरूप होता  
 हे, अउ यह चैतन्य सवेदन अपने पुरपार्थ करे रद्ररूप  
 लया हे अर अर्धगमे पात्रिकि वर रदा हे अर मरुन  
 कमे अद्रमो। धखा हे, अर नीतकंड मम संतकूप हे  
 ताने न्ने कछु सिद्ध होता हे सो पुरपार्थकर होता हे, हे  
 रामजी! पुरपार्थ करे सुमिद्धा मुरन जिया आहे, तोभी

कर सकती है. जैसे पूर्व दिनमें दूष्कृत किया होय, अरु अगले दिनमें सुकृत करे, तब दूष्कृत दूर हो जाता है. जो अपने हाथ द्वारा अरनामृतभी से नहीं सकती. अरु पुरुष करे तो वही पृथ्वी अंड अंड करनेका समर्थ होता है.

धृतिश्री योगवासिष्ठे सुमुक्षु प्रकरणे पुरुषार्थोपक्रमो नाम  
अनुर्यः सर्गः ४

परिशोचाम्य. हे रामछ ! जो अित कुछ वांछा करता है, अरु शास्त्रके अनुसार पुरुषार्थ नहीं करता, सो सुखकां न पावेगा; उसकी ह-भक्त भेष्टा है. अरु पुरुषार्थभी दो प्रकारका है. अेक शास्त्र अनुसार है, अेक शास्त्र विरुद्ध है. जो शास्त्रको त्याग करी अपनी छिछोके अनुसार विचरता है, सो सिद्धताकां न पावेगा; अरु जो शास्त्रके अनुसार पुरुषार्थ करता है, सो सिद्धताकां प्राप्त होवेगा, अरु दुःखभी न होवेगा. अनुभवतें समरन होता है, अरु सुभरनतें अनुभव होता है; सो दोनो छसलीतें होवे है; देवतो कुछ न हुवा. हे रामछ ! अपर देव कोछि नहीं, छसका दिया छसकां प्राप्त होता है. परंतु जो अलिष्ट होता है, सो तिसके अनुसार विचरता है. जो पूर्वके भंसार असी होते है, तो उसकी न्य होती है. अरु जो विद्यमान पुरुषार्थ असी होता है, तब उसको छती जेते है. जेमें अेक पुरुषके दो घंटे है, अरु जो तिनकां लडावता है, तो दोनो निषे जो असी होता है, तिसकी न्य होती है. परंतु दोनो उसके है; तेसे दोनो कर्म छसके है, जो पूर्वा भंसार असी होता है, तोछ छसकी न्य होती है. हे रामछ !

यह जो सत्त्वगुण है और मन सांख्यदुःख विचार कर  
 ता है, यह भी पञ्चोपासना समाधि वृक्षदुःखी और उद्विग्न है तो  
 पूर्वज्ञ मन्त्रों पर ही है तिसके स्थिर हो नहीं सकता ऐसे ज्ञानी  
 भी तेने पुरुष प्रवलकाले त्याग नहीं करना जो पूर्वके सम्कारों  
 अन्यथा नहीं होता, परन्तु पूर्वज्ञ मन्त्रों पर ही होवे,  
 परन्तु ज्ञान सत्त्वगुण है, और सत्त्व सांख्यदुःख हृदय अग्राम  
 होवे, तो पूर्वके सम्कारोंके पुरुष प्रवल श्रुत होता है जेमें  
 पूर्वके सम्कारोंमें दुःख किया है आगे सुख किया है, तो  
 अगलेका अभ्यास हो जाता है, जो पुरुष प्रवल होता है  
 जो पुरुषार्थ का है और निमग्न सिद्ध का होता है सो  
 अन्त करके तानवान् जो मन है और मनसात्त्र जो वृक्ष  
 विद्या है, तिसके अनुसार प्रवल करना, तिसका नाम  
 पुरुषार्थ है, और पुरुषार्थ करके पावले जेग आत्मा है,  
 तिसके भी समाधि समुद्रका पाठ होवे है गमना जो  
 दुःख सिद्ध होता है जो अपने पुरुषार्थ करी होना है अन्य  
 देव जेहि नहीं और जो सांख्य अनुसार पुरुषार्थको त्याग  
 करी रहता है जो, जो उच्छ्रुत करना है जो देव जेगा जो  
 अनुसर्तव्य है, तिसका मग्न करना (सकी मगनी क-  
 रनी जो दुःखका कारण है) इस पुरुषको प्रथम तो यह  
 अर्थव्यक्त, अपने जर्नाश्रम जिसे शुभ आचारोंके गृहण  
 करना, और अशुभका त्याग करना, यह भी सत्त्वगुण,  
 और मनसात्त्रम विद्याना और तिसके विचार कर  
 अपने श्रुतदोषदुःख विचार करना जो दिन और रातमें  
 शुभ का करती हो और अशुभ का करती हो आगे  
 श्रुत और दोषदुःख माक्षीश्रुत होकर जो सत्त्वगुण, धीमन्,

वैराग, विचारना; अइ अन्वाम अतुन हे तिराकें जडावना; अइ जे होय विपरीत हे, तिराका त्याग करना. जल्म ऐसे पुश्पार्थकें अंगीकार करेगा, तब परमानन्दरूप आत्मतत्त्वकें प्राप्त होवेगा. तारे हे रामछ। वनके धाम्नेल हुअे भृगकी नांछ नही होना, जे धारा, वृन, पातकें रसीला. जलनके पस्था सुगता हे; तेसे स्त्री, पुत्र, आंधव, धनादिक विषे मज्ज हो रहेना, सो नही होना; धनिते विरक्त होना. इंतहुं माथ इंतहुं अवाप करी संसार समुद्रकें पाग होनेका जतन करना; अइ जलने अंधनकें तोडी करी निकस जना. जेसे केसरी सिंग. जल करके पिण्डमेंते निकस जता हे, तेसे निकस जना सोछ पुश्पार्थ हे. हे रामछ। जिमकें कछु सिद्धताकी प्राप्ती हुंछ हे, सो अपने पुश्पार्थकर हुंछ हे; पुश्पार्थ जितना नही होती, जेसे प्रकार जिन पदारथका ज्ञान नही होता. जिम पुश्पने अपने पुश्पार्थ त्याग दिया हे; अइ देवके अश्रय हुअे हे, जे हमारा देव कल्याण करेगा, सो न होवेगा. जेसे पथरसो तेल निकरवा आवे, सो नही निकरता; तेसे जनका कल्याण देवने न होवेगा. हे रामछ। तुम तो देवका अश्रय त्यागकर अपने पुश्पार्थका आश्रय करो. जिराने अपना पुश्पार्थ त्याग्या हे, तिमकें सुंदर कान्ति लक्ष्मी त्याग जाती हे; जेसे वसंत ऋतुकी मंजरी वसंत ऋतुके गयेने जिरस हो जाती हे, तेसे जनकी कान्ति लक्षु हो जाती हे. जिस पुश्पने ऐसा निश्चय किया हे, जे हमारे पावनदेव देव हे सो पुश्प ऐसा हे, जेसे कोडि अपनी बुलन्दे सर्प जनके जयपापके खेरने हे, और जनते नही जे अपनी बुल है। तेसे अपने पुश्पार्थकें

त्यागके देवका आश्रय लेता है; अरु जयको पावता है,  
 जे संतदुका संग अरु सतरासखोंका बियार करके तिनके  
 अनुभार बियरना, अरु जे तिनके त्यागके अपनी ध  
 र्मके अनुसार बियरते है, सो सुखदो नहीं पावेंगे;  
 न सिद्धताके पावेंगे, अरु जे शास्त्रके अनुसार बियरते  
 है; सो धर्माभी सुख पावेंगे, अरु आगेभी सुख पावेंगे,  
 तेसोई सिद्धताके पावेंगे; ताते गसागडूपी टोम्मे बिये नहि  
 गिठना, सो पुरुषार्थ है; मतलबदुके मंग अरु सतरा  
 सके अर्थ हृदयदूपी पत्रों लिपना; जोधदूपी डानी करनी,  
 अरु बियारदूपी स्वाही करनी, जण जैसे पुरुषार्थ करी  
 निष्पेगा, तम मंगारदूपी टोम्मेमें न गिठेगा, है रामछ ।  
 जेसे यह आदिनेति दुध है, जे पट है सो पटही है,  
 जे धट है सो धटही है; धट है सो पट नहीं, और पट  
 है सो धट नहीं; तेसे यहभी नेति दुध है, अथवे पुरु  
 षार्थ बिना परम पदकी प्राप्ति नहीं होती, है रामछ ।  
 जे मंगदुकी मंगती उगता है, अरु सतरासखी बियारता  
 है; अरु उनके अर्थमें पुरुषार्थ नहीं उगता, तिमकरी सि  
 द्धता प्राप्त नहीं होती, जेसे अमृतके निर्रध भेडा होवे,  
 अरु पान किये बिना अमर नहीं होता, तेसे अन्धास  
 किये बिना सिद्धता प्राप्त नहीं होती, है रामछ । अन्धानी  
 छव अपना जन्म अर्थ जोवते है, जण जापक होते है,  
 तम मूढ अवस्थामें लीन रहते है; अरु श्रुवा अवस्थामें  
 निडागदुगें सेवते है; अरु गरामें गर्वशीश्रुत होते है;  
 धर्सी प्रकार छवना अर्थ जोवते है, अरु जे अपुना  
 पुरुषार्थ लाग करके देवका आश्रय लेता है, सो अपने

हता होते हैं, सुखको नहीं पावेंगे, हे रामछा ! जो पु-  
 रुष षोडश विषे अरु परमार्थ विषे आक्षसी हुवे है,  
 अरु परमार्थको त्यागके मूढ हो रहे है, मो दीन हुअे  
 है, मानों पशु है; अरु दुःखको प्राप्त हुवे है; यह मैं  
 बित्थार करके देप्या है; ताते पुत्रपार्यका आश्रय करो, सत-  
 संग अरु सतरास्त्ररूपी आदर्श करके अपने गुन करके  
 दोषको देपके दोषका त्याग करो; अरु रास्त्रका सिद्धांत जो  
 है, तिसका अभ्यास करो, जन्म दुःख अव्यास करेगे, तज  
 शीघ्रही आनंदवान होहुगे,

वाल्मीकीवाच्य, जन्म छसि प्रकार परिहृष्ट कहा, तज  
 सायकाज समय हुअ्या है; सज स्नानके निमित्त छके अडे  
 भये, परस्पर नमस्कार करके, अपने धरको भये; अहुरी  
 सूर्यकी कीरनहू साथ आब स्थित भये.

धृतिश्री योगवासिष्ठे सुमुक्षु प्रकुरगु पुत्रपार्य वलुनं  
 नाम पंचमः सर्गः ५

परिशिष्टोवाच्य, हे रामछा छसका जो पूर्वका डिपा पुत्र-  
 पार्य है, तिसका नाम देव है, अवरं देव कोड नाहीं,  
 जन्म यह सतसंग अरु सतरास्त्रका बित्थार पुत्रपार्य करे,  
 तज पूर्वके संस्कारको छत सेता है, किंग पुत्र छष्ट पा-  
 वनेका यह रास्त्र द्वार जतन करेगा, तिसको अवरसमिध  
 अपने पुत्रपार्यते पावेगा; अ-वया कछु नही होनी, न दुर्ध  
 है, न होवेगी, पूर्व जो कोड पाप डिपा होता है, तिसका  
 वध जन्म दुःख पावता है, तज मूरज कहता है जे—हा-  
 अे देव, हाअे देव, हाअे इष्ट, हाअे कटा है रामछा छ-

सका जो पुरोपाय पूर्वका है, तिसका नाम हैव है, अवर हैव डोड नहीं। अवर जो डोड हैव कल्पने है, सो मूर्ख है। अर जो पूर्वके लक्ष्म सुभूत उरके आधा होता है; उही सुभूत मुभूत हैवके देखाई देता है। जो पूर्वका सुभूत अभी होता है तो उमहीकी लक्ष्मी होती है। जो पूर्वका सुभूत अभी होता है, अर सुभूतका पुरोपाय करता है; सत-संग अर सतशास्त्रदुंडका निवार अवन करता है, तो पूर्वके अम्काके छत लेता है। जैसे प्रथम दिन पाप किया होवे, दुसरे दिन अडा पुन्य करे, तो पूर्वका पाप निवृत्त हो जाता है, तेमें लक्ष्मी उहा दूद पुरोपाय करे, तो पूर्वके अम्काके छत लेता है। ताने जो उधु सिद्ध होता है, सो छसके पुरोपाय करे सिद्ध होता है। जो अेदन भाव करी प्रयत्न करना, छसीका नाम पुरोपाय है; निमका बल अेदन भाव होके करेगा, तिसके अवरक्षयप्र प्राप्त होवेगा। जो पुरोपाय अन्त हैवके लक्ष्मी अपना पुरोपाय त्याग जेका है, सो दुःखके पानेगा। सांतिवान उभदु न होवेगा। हे रामछ! मिथ्या हैवके अर्थके त्यागके पुम अपने पुरोपायके अंगीकार करे। जो मंगलन अर सतशास्त्रदुंडके बचन अर लुगती साथ बचन करे आत्मपदके अम्वास करे प्राप्त होना, छसीका नाम पुरोपाय है। प्रकार करे जेमें पदार्थदुंडका खान होता है, तेमें पुरोपायकर आत्मपदकी प्राप्ति होती है। जो पूर्वके किये अडा पापी होता है-अर उहा दूद पुरोपाय कियेने उसके छत लेता है। जैसे अडा भय होता है, अर तिसका भय नारा करता है; अर जेमें नरि दिनदुंडका छेन पका होता है, अर गिडा

तिसका नारा कर देता है; तैसे पूर्वका संस्कार पुरुष प्रयत्न करके नारा होता है, हे रामछ ! येष्ट पुरुष सोई है, जने सतसंग अरु सतरास्त्र द्वारा छुदिकों तीक्ष्ण करके संसार ममुद्र तरनेका पुरुषार्थ किया है, अरु जिनहू सतसंग अरु सतरास्त्रद्वारा छुदी तीक्ष्ण नहीं करी, अरु पुरुषार्थकों त्याग भेडे है, सो पुरुष नीयतें नीय गतीकों पावेंगे, अरु जे येष्ट पुरुष है, सो अपने पुरुषार्थ करके परमानंद पदकों पावेंगे, जिसके पापनें जहुरी दुःख नहीं होता, अरु जे दैजने करी दीन होते है; अरु सतसंगति अरु सतरास्त्रके अनुसार पुरुषार्थ करता है, सो उचम पदवीकों प्राप्त होते दृष्ट आवते है, हे रामछ ! जिन पुरुषनें पुरुष प्रयत्न किया है, तिसकों सज संपदा आप प्राप्त होती है, अरु परमानंद करी पूरन हो रहे, जेसें रत्नदूकरी समुद्र पूरन है, तैसें उह परमानंद करके पूरन हुं-ये है, ताने जे येष्ट पुरुष है, सो अपने पुरुषार्थ द्वारा संसारके अंधननें निकम जलते है, जेसें डेसरी सिंह अपने जखसों पिंजरेते निकस जलता है, तैसें उह अपने पुरुषार्थ करी संसार अंधननें निकम जलता है, हे रामछ ! यह पुरुष और उछु न करे तो यह करे जे अपने जना-जमके अनुसार मियरे, अरु सार पुरुषार्थ करे; जे संतहू अरु सास्त्रदुहा आशय होने तिसके अनुसार पुरुषार्थ करे, तज सज अंधनते मुक्त होनेगा, अरु जिस पुरुष अपने पुरुषार्थका त्याग किया है; किरि अपर देवकों मानके कहता है, जे उह भिरा इष्यान करेगा; सो जन्म मरनकों प्राप्त होवेगा, हे रामछ ! धर्म छवकों संसाररूपी विशृथिका



गैर है, तिसमें दूर करनेका उपाय में कहना हो। मंगलन  
 अरु रागरात्र्यहुके अर्थजिने दृढ भावना करनी; जे कुछ  
 तिनहुमेंने सुन्या है, तिसका वाग्वाग् अश्याम करना, अवर  
 सज्य उपना त्यागके ओकात होषके तिसका चितवन करना,  
 तज्य धसके परमपदकी प्राप्ति होवेगी, अरु दैव ज्यम नि-  
 पृच हो ज्यवेगा। अद्वैतरूप पदा भासेगा धसीकाध नाम  
 पुरपार्थ है।

धतिश्री योगवासिष्ठे सुमुक्षु प्रकश्ये पुरपार्थ वरुन नाम  
 पटमः सर्गः ६

वशिष्ठोवाच. हे रामछा अन्य पुरपार्थ करके धसके  
 अरुपात्मक आदि ताप आप प्राप्ति होतेहे तिसकी सातिके नही  
 पावता; तुमहुने रोगी नही होना अपने पुरपार्थ द्वारा ज्यम  
 भरनके ज्यनते मुक्त होहु. अर्थ किसी दैव मुक्ति नही  
 करनेका; अपने पुरपार्थद्वारा ससार ज्यनते मुक्त होना  
 है. जिस पुरपार्थ अपने पुरपार्थका त्याग किया है, अरु  
 जीसी अवर दैके भानी करी जिस पगवन हुवे है, तिसका  
 धर्म, अर्थ, काम नष्ट हो ज्यवेगा, अरु नीचते नीच ग-  
 तिके प्राप्ति होवेगा. हे रामछा शुद्ध चैतन्य जे धसका  
 अपना आप है, अरु वास्तवरूप है, तिसके आश्रय जे  
 आदि चित्त सपेदन सूक्ति है; जे अहं भगवत समिदन  
 होषके पुरने लगती है, जहुरी धद्विप अहं सूक्ति है. ज्यम  
 यह सूक्तां सग अरु सास्त्रके अनुसार होने, तज्य वह पुरप  
 परम शुद्धताके प्राप्ति होता है. अरु जे सगहु सास्त्रके  
 अनुसार न होने, तज्य ज्यसनाके अनुसार भाव अभाव

रूप जे लभ जल है, तिस जिये पस्या धरी बंत्रकी नांछ  
 नष्टकता है, सांतिवान कपहु नहीं होता. है रामछा! जिस  
 किसीं सिद्धता प्राप्त हुई है, सो अपने पुरपार्यकर हुई  
 है, जिन पुरपार्य सिद्धताओं प्राप्त न होवेगा. जन्म किसी  
 पदारथों ग्रहण करना होता है; जे भुज्य पराशरिमें तो ग्रहण  
 करना होता है; अरु जे किसी देशों प्राप्त होना होवे, तब  
 जन्म असें तब जन्म पहुंन्ही; अन्यथा नहीं होता; ताँते  
 पुरपार्य जिन सिद्ध कछु नहीं होता. जे कोउ कहता है,  
 दैव करेगा सो होवेगा, सो भूर्भ है. है रामछा! अवर  
 दैव कोउ नांहीं, छसि पुरपार्यका नाम दैव है. यह दैव  
 राम्भ भूरुपहुंका परमावा है, जे किसी कष्ट साथ दुःख  
 पाया; तिसों कहते हैं, दैवका दिया है, सो अवर तो दैव  
 कोउ नांहीं. है रामचंद्र! जे अपना पुरपार्य त्यागके दै-  
 वके आश्रय हो रहेगा, सो सिद्धताओं प्राप्त न होवेगा;  
 कहते जे अपने पुरपार्य जिन सिद्धता किसीं प्राप्त नहीं  
 होती. अरु गृहस्पति जे दृढ पुरपार्य दिया है, तब सज  
 देवताहुंका राज्भ भद्रका अरु हुआ है; अरु शुकछा अपने  
 पुरपार्यद्वारा सर्व दैत्यहुंका अरु हुआ है; अरु अवर जे  
 समान छव है तिस जिये जिस पुरप प्रयत्न दिया है, सो  
 पुरप उत्तम हुआ है; जिसों जन्ते सिद्धता प्राप्त भई है, सो  
 अपने पुरपार्यकरी भई है. अरु जिस पुरपने गंत अरु  
 राम्भहुंके अनुसार पुरपार्य नहीं दिया, सो मेरे देवते  
 देवते भई राज्भ, अरु प्रज्भ, अरु धनते अवर विजृणिते  
 छीन हो गये है; अरु नरकहुं जिये परे जलते है, जिस  
 करके कछु अर्थ सिद्धि होवे तिसका नाम पुरपार्य है; अरु

जिस कृष्ण अर्थात् सिद्धि होवे, तिमझा नाम अपुत्रपार्थ है, हे रामछा! धर्म पुरपत्रो कर्त्तव्य यही है; जे सतरास अर मगडुको भंग करी अदि तीरषु करे, अर गुण गुनको पुष्ट करे, दया, धीरज, सतोप, वैरागके अभ्यास करे अदि तीरषु करे; अर तीरषु अदि करे धनको पुष्ट करे. जेसे जे तापने मेघ पुष्ट होता है, गडुरी वर्षा कृष्ण मेघ तापको पुष्ट करता है; तेमे शुभ गुण कृष्ण अदि पुष्ट होती है; अर पुष्ट अदि करी शुभ गुण पुष्ट होते है. हे रामछा! जे पाषाण अवस्थाने सेदरी अभ्यास गिया होता है, उसको मुदता प्राप्त होती है; अर्थ यह जे दृढ अभ्यास बिना मुदता प्राप्त नहीं होती है. जे किसी देश अथवा तीर्थ जना होवे, तम मार्ग नि निरन्तर होयके अथवा जय, तो जय पदुमेगा अर जय जोजन करेगा तम क्षुधा नि वृत्त होवेगी, अन्वधा नहीं होवेगी, अर जय मुअपिय जिन्हा शुद्ध होनेगी तम पाठ अट होनेगा, युगासौ पाठ नहीं होता. ताँ जे उष्टु काम्य सिद्ध होता है, सो अपने पुरपार्थकर सिद्ध होता है, तृष्णा हा रहनेने उष्टु करज सिद्ध नहीं होता. अर समही अर जे है, धन जे पुष्ट होवे, आगे जे तेरी धर्मिछा है सो करे. अर जे मुत्रमों पूजे, तो सज सास्रस सिद्धात कहता हो, जिसकरी सिद्धताको प्राप्त होवेगा. हे रामछा! मत जे है, ग्यानवान पुरप, अर सतरास जे है, अज्ञानिद्या; तिनके अनुसार सवेदन अर मन अर इंद्रियम जिआना होवे, अर धर्मने निरुद्ध होवे तिसने पल्प रचना; तिस कृष्ण त्रुत्रको साराका राग होय स्पर्श नहीं करेगा; सजने निर्दय रहेगा. जेसे जलते कुमज

निर्दोष रहता है, तबसे तुं निर्दोष रहेगा, हे रामछा! जिस  
 पुरुषहुँतें रांति प्राप्त होवे, तिसकी बली प्रकार सेवा क-  
 रिये, कहि तें जे उनका जडा उपकार है; जे संसार स-  
 मुद्रते निकामी बने है, हे रामछा! संत बननी उही है,  
 अर सतराअब्दी उही है, जिसके जियारेकरी अर सं-  
 गति करी संसारते बिच उह प्रती होवे, मोच्छका उपाय  
 उही है; ताते अवर सर्ग कल्पनाओं त्यागके अपने पुरुषार्-  
 थके अंगीकार करहु, तब बन्म भरनका जप निवृत्त हो-  
 जये; हे रामछा! जिस यह वांछा करता है, अर तिसके  
 निमित्त दृढ पुरुषार्थ करता है, तब अवरभव तिसको  
 पावे; अर जे जडे तेज अर विश्रुति करके संपन्न पुत्रको  
 दृष्ट आपने है, अर सुनता है; मो अपने पुरुषार्थ करी  
 जये है, अर जे महानिष्ट सर्प शीट आदिक पुत्रको  
 दृष्ट आवता है तिनते अपने पुरुषार्थका त्याग दिया है,  
 तब असे हुवे है, हे रामछा! अपने पुरुषार्थको आ-  
 भव कर, नहीं तो परम शीटादिक नीच योनिको प्राप्त होवेगा;  
 जिन पुरुषते अपना पुरुषार्थ त्याग्वा है, ओर किसी दै-  
 वका आशय धर्या है, सो महा मूर्ख है, कहि तें जे यह  
 भारत ज्योहारमेंनी प्रसिद्ध है जे अपने उद्यम बिषे बिना  
 किसी पदारथको प्राप्ति नहीं होती; तो परभारथकी प्राप्ति  
 कैसे होवे? ताते दैवको त्याग करी संतजन अर सतरा-  
 ओके अनुसार ब्रतन करहु; परमं यह प्रावनेके निमित्त  
 जे दू पढीते मुक्त होवहीं, हे रामछा! जे ब्रतान वि-  
 ष्युछ है, मो अवतार धारी करी दैवहुँको भारत है,  
 अर अवर श्रेष्ठाणी करता है, परंतु पापका स्पर्श उमको

नहीं होता, कहते हैं जो अपने पुरुषार्थ करके अक्षय पदको प्राप्त हुआ है; वृमन्वी पुरुषार्थका आशय करो, अरु संसार समुद्रको तभी नवहु.

धृतिशी योगवाशिष्ठे सुमुत्सु प्रकरत्ये पुरुषार्थे उपमा  
वर्णनं नाम सप्तमः सर्गः ७.

वशिष्ठोवाच. हे रामछ! यह जो देव शम्भु है, जो मूर्च्छने कल्याण है, जो देव हमारी रक्षा करेगा. हमको देवका आकार कोडि दृष्ट नहीं आवता, न कोडि देवका काम है, न देव कुछ करताही है; मूर्च्छ लोके देव देव परे कहते है; अवर देव कोडि नहीं, धरिअका पूजा कर्मही देव है; हे रामछ! जिन पुरुषहु अपने पुरुषार्थका त्याग किया है; अरु देव परायण हुवे है; जो हमारा कल्याण करेगा जो मूर्च्छ है; कहते हैं जो अग्नि विये यह नव पद, अरु देव धरिअको निकामी सेव, तप्य बनिये जो कोडि देवभी है, सो तो नहीं, अरु जो देव करता है; तो धरि स्नान, दान, भोजन, आदिहुका त्याग करी तुच्छी होय जेडे; आपेछ देव कर नयेगा; मोची धर्मको किये जिनो नहीं होता; ताते अवर देव कोडि नहीं. अपना पुरुषार्थही कल्याण कर्ता है; हे रामछ! जो धरिअका किया कुछ नहीं होता, अरु देवही करनेदारा होता, तो रामअ अरु अरुका उपदेशभी नहीं होता. सो सत्-रामअके उपदेश करके अपने पुरुषार्थद्वारा धरिअका वाञ्छित पदवी प्राप्त होती है; ताते अवर जो कोडि देव शम्भु है सो अर्थ है; धरि अमको त्याग करके संत अरु रामअके

अनुसार पुरंधार्य करे, तब दुःखहुते मुक्त होवेगा. हे रामछा ! अगर देव कोड नही ; धसिका पुरंधार्य ने हे स्पंद सोध देव हे. हे रामछा ! ने कोड अगर करनहारा होता, तो नम्य छह शरीरकों त्यागना हे, अरु रागीर सभ नारा हो जनता हे ; किया शरीरसो कछु नहीं होती ; कहिने ने येष्टा करनेहारा त्याग जनता हे ; ने देव होता तो सनी शरीरसों येष्टा करानता ; सो तो येष्टा कछु नहीं होती ; ताने जनता हे ने देव राष्ट्रधर्य हे. हे रामछा ! पुरंधार्यकी भाचा हे, सो अस्तानी छपहुद्वोनी प्रत्यक्ष हे, ने अपने पुरंधार्य भिना कछु होता नहीं. गोपालनी जनताहे ने में गैपाकों अराउं नहीं तो जूप्पीछी गृहणी ; ताने देवके आभय भैछी नहीं रहता, आपछी अराव ले आवता हे. हे रामछा ! अगर देवकी कल्पना अम करके परे करने हे ; अगर देव तो हमको कोड दृष्ट नहीं आवता. हस्त, पाद, शरीर, देवका कोड दृष्ट नहीं आवता. अपने पुरंधार्य करी सिद्धता दृष्ट आवती हे. अरु ने कोड आकारतें रहित देव कल्पिये तो नहीं जनता ; कहिने ने निराक्षर अरु साकारका अंग्नेय केसो होवे ? हे रामछा ! अगर देव कोड नाहीं, अपना पुरंधार्यही देवरूप हे. ने राज्ज रिद्धि, सिद्धि, अंगुक्त भासता हे. सोनी अपने पुरंधार्य करी हुअे हे. हे रामछा ! यह ने विश्वामित्र हे, याने देव राष्ट्र दृष्टीतें त्याग किया हे ; सोनी अपने पुरंधार्य करके क्षत्रियतें धावन हुवे हे ; अरु अगर ने नडे विश्वतिवान हुवे हे, सोनी अपने पुरंधार्य करी दृष्ट आवते हे. हे रामछा ! ने देव पडे भिना पंडित करे तो नानिये देवने किया, सोतो पडे भिना पंडित

कहू नहीं होता; और जो अस्तानीने जानवान होते है, मोभी अपने पुरपार्थ करी होते है, ताणे अपर दैव कोडि नाहीं. मिथ्या धर्मको त्याग करी संन्यस्त और सतरास्र-हुके अनुसार संगार समुद्र तरनेका प्रयत्न कहू; तेरे पुरपार्थ बिना अपर दैव कोडि नाहीं. जो अपर दैव होना तो बहुत जेग जदभी अपनी क्रियाको त्यागके सोध रहेता, आपे दैवही पडा करेगा, मो जेमें तो कोडि नहीं करता; ताणे अपने पुरपार्थ बिना कछु सिद्ध नहीं होता; और जो धिसका क्रिया कछु न होना तो पाप कुनेहारे नरक न बतते, और पुन्य कुनेहारे स्वर्ग न बतते; परंतु पाप कुनेहारे नरकमें बतते है; और पुन्य कुनेहारे स्वर्गमें बतते है, ताणे जो कछु प्राप्त होता है, मो अपने पुरपार्थ करी होता है. हे रामछ । जो कोडि अपर दैव करता है जेसा रहे तिमका सिर काटिजे; और दैवके आश्रय श्रवण गहे तो जनिजे जो कोडि दैव है, सो तो श्रवता कोडि नहीं ताणे दैव शब्दको मिथ्या धर्म बनके मनन्यस्त और सत-साम्रहुके अनुसार अपने पुरपार्थकरी आत्मपद विषे स्थित होहु.

धृतिश्री योगवाशिष्ठे सुमुक्षु प्रकेश्ये परम पुरपार्थ  
वर्षुनं नाम अष्टमः सर्गः ८.

शमोवाच. हे भगवन् सर्व धर्महुके वेत्ता । तुम कहने हो ओर दैव कोडि नहीं, परंतु धाखनपी दैव है जेसा कहते है, ओर दैवका क्रिया गण्य कछु होता है, और मुण्य हुणके हनेहारे दैव है यह लोकविने प्रसिद्ध है.

वशिष्टोवाच. हे रामछ । में तुझको ऐसे कहता हों, ज्यों तेरा जन्म निश्चय हो जाये, इसीहीका कर्म किया हुआ है. शुभ अथवा अशुभ तिसका इस अवश्यमेव जोगवना है, सो दैव कहो; अवर दैव कोडि नहीं. अरु कर्मा, किया, कर्म आदिकहु विषे तो दैव कोडि नाही; अवर कोडि दैवका स्थान नहीं, रूप नहीं, तो अवर दैव क्या कहिअे. हे रामछा मूरखहुके परभावने निमित्त दैव शब्द कहा है. तेसे आकारा शून्य है, तेसे दैवभी शून्य है.

रामोवाच. हे जगवन् सर्व धर्महुके वेत्ता । अवर दैव कोडि नाही, सो आकाराकी नांछ शून्य है, सो तुमारे कहने कग्नी दैवसिद्ध होता है. तुम कहने हो जे इसडे पुरपायका नाम दैव है, अरु जगव विषेभी दैव शब्द प्रसिद्ध है.

वशिष्टोवाच. हे रामछ । में ऐसे तुझको कहता हों, जिस कही दैव शब्द तेरे रिहसों की जाये; अरम छह जे शून्य हो जाये. दैवनाम अपने पुरपायका है, अरु पुरपाय नाम कर्मका है, अरु कर्मनाम वासनाका है, वासना मतते होती है. अरु मतरूपी पुरुष है, जिसकी वासना करता है, सोई धसको प्राप्त होता है. जे गांवको प्राप्ति होनेकी वासना करता है सो गांवको प्राप्त होता है; जे पतनकी वासना करता है सो पतनको प्राप्त होता है; ताते अवर दैव कोडि नाही. पूर्वका जे शुभ अथवा अशुभ पुरपाय किया तिसका परिनाम सुख दुःख अवश्य होता है, और वीसीकाध नाम दैव है. हे रामछ ! तूं विचार कर देण जे अपने पुरुष कर्महुते जिन नहीं तो सुख दुःख देनहारा अरु जेनहारा दैव कोडि नहीं हुआ क्यों। यह जे पापकी



वास्ता करत है, अरु साम्प्रविश्व कर्म करता है जो किस करी करता है। पूर्वका जे धिसका दृढ पुरपार्य कर्म, तिस करी यह पाप करता है, अरु जे पूर्वका पुन्य कर्म किया होता है, तो यह शुभ भाग्यजिसे भितरता है.

शमोवाच. हे भगवन्! जे पूर्वकी दृढ वासनाके अनुसार यह भितरता है, तो मैं क्या करों। मुझको पूर्वकी वास्ताने दीन किया है, अथ मुझको क्या कर्तव्य है।

वशिष्ठोवाच. हे रामछा जे इछु धर्मकी पूर्वकी वासना दृढ हो रही है, तिमके अनुसार यह भितरना है; अरु जे श्रेष्ठ मनुष्य है, सो अपुने पुरपार्य करके पूर्वके मलीन ससारको शुद्ध करते है; तिमके मन दूर हो जते है रात साम्प्र अरु ग्यानहुके अत्यन्त अनुमात्र दृढ पुरपार्य करो, तब मन वासना दूर हो जयेगी । हे रामछा! पूर्वके मनोन पाप केमे जनिषे, अरु शुद्ध केमे जनिषे. सो अवन कहू. — जे अिच विपकी ओर धावे, अरु साम्प्र विश्व मार्गकी ओर जते अरु शुभकी ओर न धावे तो जनिषे, जे पूर्वका कर्म कोडि मलीन है, अरु जे सतजनहु अरु सतरास्त्रहुके अनुसार श्रेष्ठा करे, अरु मसार मार्ग ते विरम्य होवे, तब जनिषे जे पूर्वका कर्म शुद्ध है. ताते हे रामछा! मुझको रोनी करके सिद्धता है; जे पूर्वका मसार शुद्ध है, ताते तेरा अिच शीघ्रही सत्सग अरु सतरास्त्रहुके अत्यन्त अहन करी बेवेगा, अरु शीघ्रही मुझको आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी. अरु जे तेरा अिच धंस शुभ मार्ग विषे स्थिर नही हो सकता, तो दृढ पुरपार्य करी ससार समुद्रते पार होवहु. हे रामछा! तू अितन है, जड तो नहीं,

• अपन पुत्रपार्यंका आशय करहु, मेराभी वही आशिर्वाद हे, जे तुमारा चित शीघ्रही शुभ आचरण विषे स्थित होवे, अरु अक्षविद्याका जे सिद्धांत सार हे, तिसविषे स्थित होवे. हे रामछा अष्ट पुत्रपत्नी वही हे, निस्संका पूर्वका संस्कार यद्यपि मलीनभी या, परंतु संत अरु सतशास्त्रके अनुसार दृढ पुत्रपार्यं किया हे, सो सिद्धताको प्राप्त जया हे; अरु जे मूर्ख छव हे तिनहुने अपना पुत्रपार्यं त्याग किया हे, ताते संसारते मुक्त नहीं होता. पूर्वका जे कोउ पाप कर्म किया होता हे, तिसके मलन करके पापमें धावता हे; अपना पुत्रपार्यं त्यागनेते अंध हो जता हे, अरु विशेषकरी धावता हे. जे अष्ट पुत्रप हे तिनको पह कर्तव्य हे. प्रथम तो पांचो छंदियां बन्ध करनी; शास्त्र अनुसार तिनको वचनना; शुभ वासना दृढ करनी, अशुभका त्याग करना; जद्यपि त्यागनी दोनो वारना हे. प्रथम शुभ वासनाको छक्का करना; अरु अशुभका त्याग करना. जन्म शुद्ध वारना करके उपाय परिपक्व होवेंगे; अरु यह जे अंतःकरण जन्म शुद्ध होवेगा, तिस विचार विचार उत्पन्न होवेगा, ओर ताते तुमको आत्मतानकी प्राप्ति होवेगी. तिस तान द्वारा आत्मा साक्षात्कार होवेगा; जहुरी किया तानकाभी त्याग हो जवेगा. केवल शुद्ध अद्वैतरूप अपना आप शेष जासेगा. ताते हे रामछा अपर सत्य कल्पनाका त्याग करी संतजन अरु सतशास्त्रहुके अनुसार पुत्रपार्यं करहु.

धृतिश्री योगवशिष्ठे सुसुसु प्रकुरुषु परम पुत्रपार्यं  
 वल्लुनं नाम नवतः सर्गः ८

वगिहोवाच. हे रामश्च । मेरे वचनका गृहण करो; सो जयम जानव जैसे हे; पापव कहिये जे तेरे परम मित्र होवहिगे, अरु हु अहुते तेरी रक्षा करेगे. हे रामश्च ! यह जे मोक्ष उपाय वृत्रको उहता हो, तिमके अनुसार वु पुरपार्य करहु. तज तेरा परम अर्थ सिद्ध होवेगा. अरु यह चित्त जे संसारके जोड़ी और धारता हे, तिस जोगरूपी पाड विषे चित्तको गिडने मत देहु. जोगको निम्न जनीके त्याग देहु; हे त्याग तेरा परम मित्र होवेगा, अरु त्यागनी ऐसा करहु जे जहुरी जोगरुका गृहण न होय. हे रामश्च ! यह मोक्ष उपाय सिद्धात हे, चित्तको अकार्य करके धरिओ जवन करी तिमही परमानंकी प्राप्ति होवेगी. प्रथम राम अरु हमको धारी, अर्थ यह जे अपूर्ण संसारकी वारनाका त्याग करहु, अरु उदागता करके तृप्त रहना, धमिका नाम राम हे. अरु हम अर्थ यह जे जासु हद्विषको परा करना. जज धमको प्रथम धारैगा तज परम तत्वका चित्तार आप उत्पन्न होवेगा. तिस चित्तार्ते निरुद्धारा परमपदकी प्राप्ति होवेगी, जिस पदको पायेकरी जहुरी हु ज कदाचिन् न होवेगा, अविनासी सुख वृत्रको आप प्राप्त होवेगा. ताते जे कहु मोक्ष उपाय यह मअहता हे, तिसके अनुसार पुरपार्य करहु, तज आत्म पदको प्राप्त होवहिगा, पूर जे कहु ब्रह्माश्च हमको उपदेश दिया हे, जो मे वृत्रको उहता हो.

रामोवाच हे मुनीवर ! वृत्रको जे ब्रह्माश्च उपदेश दिया था, सो किस कारण दिया था, अरु कैसे वृत्रने धारता मो कही.

परिहोवाय. हे रामचंद्र ! शुद्ध विदाकारा एक हे, अरु अनंत हे, अपिनाशी हे, परमानंदरूप हे, विदानंद स्वरूप हे, अक्षय्य हे; तिसविषे सवेदन रसंकरूप होई हे, सो विषयुक्तो इरी स्थित भई हे; सो विषयुक्त केसा हे, जे रसंकर अरु निरसंकर विषे एक रस हे. उदासिन् अन्यथा भावज्ञो नहीं प्राप्नुवा. जेसे समुद्र विषे तरंग उपजते हे, तेसे शुद्ध विदाकाराने रसंकर इरे विषयु उत्पन्न हुआ हे; तिस विषयुक्ते स्वर्नवत् शीर्न नाभकमत्रते अस्त्रात् प्रगट भया हे; तिस अस्त्रात् कपि, मुनीपर अहित स्यावर जंगम प्रगट उत्पन्न इरी, तिस मनोरान्न इरी अस्त्रात् जगनको उत्पन्न किया; तिस जगतकी डोन विरे जे वंशु-द्वीप, जगत अंड हे, तिसविषे मनुष्यको दुःखइरी आतुर देणी इरी अस्त्रात्को करना उपज, जेसे ज्यो पुत्रको देणी पिताको करना उपजती हे. तज तिसके सुख निमित्त अ-स्त्रात् तप उत्पन्न किया, जे सुखी होवही; अरु आत्ता इरी जे तप करो; तज तप करत भये; तिस तप इरी स्वर्गादिकहुको जय प्राप्त होने लगे; तिन सुखहुको भोगी इरी जहुरी गीउही, तज दुःखी रहे. जेसे अस्त्रात् देणी इरी सत्यवाक् धर्मको प्रतिपादन करत भये; तिनके सुखके निमित्त आत्ता इरी; तिस धर्मकी प्रतिपादना इरी लोकहुको सुख प्राप्त होवने लगे; तहां केताक काव सुख भोग इरी जहुरी गीउही, तज दुःखके दुःखी रहे; जहुरी अस्त्रात्ने दान तीर्थादिक पुण्यकिया उत्पन्न इरे उनको आना इरी जे धनके सेवने इरी वृम सुखी होहुगे. जज्य वह जव उनको सेवने लगे, तज जडे पुण्य लोकहुको प्राप्त भये; अरु

तिनके मुझ लोगने लगे अहरी उताड़ मय अपने कर्मों  
 अनुसार लोग लगी गिरे, तब तृष्णाकरी बहुत मुझ  
 दुःख भरे अरु दुःखकरी आतुर हुने तब ब्रह्माश्रम  
 अत लया जे लम्ब अउ भुनके दुःखकरी महा दीन होते  
 हे ताँ मोर उपाय करिये जिसकरी उनका दुःख निरत  
 होने हे रामचन्द्रश्रम ! ब्रह्माश्रम जियागत लया जे धर्मका  
 दुःख आत्ममान जिन निरत नहीं हानिका, ताँ आत्म  
 सानकों उत्पन्न करिये, जे यह मुझी होवही, धर्म प्रकार  
 जियाउ करी आत्मगत, ध्यान कृत लया आत्मतत्वके  
 सानते मङ्गल दिया, तिम सानके कारणते जे शुद्ध तत्त्वज्ञान  
 हे तिमकी मूर्ति होकरी में प्रगट लया मो में देसा हों -  
 ब्रह्माश्रमके समान हों, जेमें उनके हाथ निचे कमंडलु हे,  
 तेमें भरे हाथनिचे कमंडलु हे, जेमें उनके ऊँच बिर रक्षा  
 कृष्ण साया हे तेसें करे असेंकी रक्षा कृष्ण साया हे,  
 जेमें उनके उपर भृगु छाया हे तेमें भरे उपर भृगु छाया  
 हे; धर्म प्रकार ब्रह्माश्रम अरु भृगु समान आकार हे  
 अरु भृगु शुद्ध ज्ञान स्वरूप हे भृगु जगत् कछु नहीं जा  
 सता सुशुभिकी नाज जगत् मुझकों जासता हे तब अ  
 हाश्रम जियाउ दिया जे, धर्मकों में उपरुके कल्याण निमित्त  
 उत्पन्न दिया हे अरु यह तो शुद्ध सानस्वरूप हे, अरु  
 अज्ञान मार्गकों उपर तब होने लय कछु नम उत्तर  
 होने, अउ तब मिथ्याका विचार होये हे रामश्रम ! उप  
 हुके कल्याण निमित्त मुझकों ब्रह्माश्रमों गोत्रमें पैदाया, अरु  
 श्रीरामे हाथ देखा निम करी में शीतल हो गया जेसें  
 अद्रमाकी शीतलु करी शीतलता होई हे, तेसें में शीतल

भया. तप्य अह्नाञ्च मुञ्चको न्से हंसाको हंस कहे यो कल्याः  
 हे पुत्र । अह्नुके कल्याण निमित्त अेक मुहूर्त्त पर्यंत तुं अ-  
 स्तानको अंगीकार करहु, अष्ट पुरष जे हे सो अवरहुके  
 निमित्तभी अंगीकार करते आवे हे, न्से अंद्रमा अहुत  
 निर्भय हे, पंतु स्वामताको अंगीकार दिया हे; तेसे तुंभी  
 अेक मुहूर्त्त अस्तानको अंगीकार करहु. हे रामञ्च ! एसि  
 प्रकार मुञ्चको कही करी अह्नाञ्चने आप दिया, जे तुं अ-  
 स्तानी होवेगा; तप्य में अह्नाञ्चकी आसा मानी आपको  
 अंगीकार दिया. तप्य भेरा जे शुद्ध आत्मतत्व अपुना  
 आपथा तिसते में अन्यकी नाई होत भया, भेरी स्वभाव  
 सचा मुञ्चको विस्मरण होई, अर भेरा मन जगी आपा.  
 जाव अभावरूप जगत मुञ्चको जासने लगा, अर आपको  
 म परिष्ट जनत भया, अर अह्नाञ्चका पुत्र, यो जनत  
 भया. अर नाना प्रकारके पदार्थ सहित जगत ज-  
 नत भया, अर तिनकी ओर अंगल होत भया;  
 तप्य में संसार जलको दुःखरूप जनी करी अह्नाञ्चते  
 पूछत भया; हे जगवन् ! यह संसार केसे उत्पन्न भया अर  
 केसे लीन होता हे ? हे रामञ्च ! जप्य एस प्रकार पिता मातो-  
 ञ्चसो प्रश्न दिया, तप्य जही प्रकार मुञ्चको उपदेश करत भया,  
 तिसकरी भेरा अस्तान नष्ट हो गया. न्से सूर्य उदय  
 हुवे, तम निवृत्त हो जाता हे, तेमें भेरा अस्तान निवृत्त  
 हो गया; अर में शुद्धताको प्राप्त भया. न्से आदर्शको  
 मार्जन करता हे, अर शुद्ध हो आवता हे; तेमें भे शुद्ध  
 हुवा. हे रामञ्च ! में अह्नाञ्चतेभी अधिक होत भया,  
 तप्य मुञ्चको परमिष्टी अह्नाञ्च आसा करी;—हे पुत्र ! न-

जुद्धीय नरतपजमें लय, गुणको मृष्टि प्रकृतनिधि अधिकार  
 है तदा लक्ष करी छत्रहुको उपदेश करु; छत्रको मसा  
 रहे सुभकी धरुग होवे, तिमको कर्म मानका उपदेश करना;  
 तिसकरी भवगतिक मुण भोगेगे; अर ससाग तें विरक्त  
 होवे, सो छत्रको आत्मपत्नी धरुग होवे, तिसको तान  
 उपदेश करना; तानें वृ अण जूनोड निधि लहु. है  
 रामछ। इस प्रकार भोग उपदेश अर उपगना हुवा है,  
 अर इस प्रकार भोग आनना हुवा है.

वशिष्ठो योगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रभञ्जे वशिष्ठोपत्ति तथा  
 वशिष्ठोपदेशा गमन नाम द्शमः सर्गः १०

वशिष्ठोवाच है रामछ। इस प्रकार पृथीविने भोग  
 आनना भया. मे ऐसा हो — लको जे तानकी वाज  
 होवे सो पूर्ण करिवेके निवेद्वलाछ मुत्रको उत्पन्न क  
 रत भया.

रामोवाच है मुनीश्वरा तिस तानकी उत्पत्तिने अतत  
 छवनकी शुद्धि कैसे भय, सो कहो.

वशिष्ठोवाच. है रामछ। जे शुद्ध आत्मतत्व है, ति  
 सका स्वभावरूप भवेन सूचि है, सो ब्रह्माछरूप हो  
 करी स्थित भव है. जैसे समुद्र अपनी द्रवता करके त  
 रगरूप होता है, तैसे ब्रह्माछ भया है. महुरी सपूर्ण  
 लक्षणों उत्पन्न किया, अर तीनो काल उत्पन्न किए, तण  
 के न व्यतीत हुवा, अर इलिगुग आया. तिसकरी छत्र  
 हुकी शुद्धि मलीन हो गय. अर पापविने निश्चरने लगे;  
 शास्त्र मेकी आमा माननेने गही भये, इस प्रकार ध

भंडी भरज्जदा छपी हो गर्ध, अर पाप प्रगट जया; जेती  
 कछु राज धर्मकी भरज्जदा थी, गो मय नष्ट हो गर्ध; अर  
 अपनी छत्राके अनुगार छव जियरने लगे, ताँने कष्ट  
 पावने लगे; तिनजों देखी करी अह्लाछजों करना उपछ,  
 तिस दयाजों धारी करी जमी लोकविषे मुज्जनों जेज्या, अर  
 इह्या,—हे पुत्र! जयकरी तुम धर्मकी मर्पादा स्थापन करी;  
 अर छवनजों शुद्ध उपदेश करी. तिसजों जोगहुकी छत्रा  
 होये, तिसजों कर्म कांडका उपदेश करना, जे स्नान, संध्या,  
 यत्तादिका उपदेश करना; अर जे मंसारते विभक्त हुये  
 हे, अर मुमुक्षु हे, जजों परम पद पावनेकी छत्रिछा हे;  
 तिसजों अह्लाविद्याका उपदेश करना. हे रामचंद्र! जिन  
 प्रकार मुज्जनों आत्ता करी जमी लोकविषे जेजते जये, तेसँछ  
 सनत्कुमार, नारदजोंहु कहते जये; तज्य हम सज्य कपीधर  
 छक्रे हो करी जियारत जये;—जे जगतकी भरज्जदा किसी  
 प्रकार होये, अर छव शुभ मार्ग विषे केसँ जियरही; तज्य  
 हमहुँने यह जियार दिया, जे प्रथम राज्यहुका स्थापन  
 करना, जे छव तिनकी ज्जाता अनुगार जियरही, प्र-  
 थम उंड कर्ता राज्यस्थापन दीया, सो केसा राजत जे जडा  
 पीर्यवान, अर तेजवान, जडा उदार आत्मा जया; तिन  
 गज्जहुजों हम अध्यात्म विद्या उपदेश करी; तिसकरी परमं  
 पदजों प्राप्त जये. जे परमानंदरूप अविनाशी पद हे,  
 तिस अह्लाविद्याका उपदेश तिसजों जया, तज्य सुखी जये.  
 छस करनते अह्लाविद्याका नाम राजविद्या हे; तज्य हमहुँने  
 वेद, शास्त्र, मृति, पुरान, करी धर्मकी मर्पादा स्थापन करी;  
 सो जय, तय, यत, दान, स्नान आदिक क्रियाजों प्रगट



शीनी; अरे छवा तुम हमके सेवने करी सुभी होहुगे; तब सब इलकों धारी करी निन्दों सेवने लगे, तामे कोडि विगला गिरे शुद्धताके निमित्त कर्म करते हे. हे रामछ। ने भूरभ हे सो कामनाके निमित्त मनमें कूनरे कर्म करते हे सो धरीयनरी तर्क जाकते हुते हे सो क्युहु उर्ध अरु क्यहु नीमें आते हे और ने निष्काम करते हे, तिमका हृष्य सुद होता हे कि मो धनविद्याके अधि- करी होते हे, तारे उपेग द्वारा आत्मप नी प्राप्ति होत हे. धंस प्रकारों छव-भुज हुने हे अर्ध गज्य प्र सिद्ध हुने हे सो राजको परपरा अमानता हमारे उपेरा द्वारा खानकों प्राप्त बन हे, और गज्य इग्यहु खानपान बना हे; और तुभी धसी रगाकों आवके प्राप्त हुवा हे, सो तु समों अट हुवा हे, नेमें तु निरकत आत्मा हुवा हे, तेमें आगेहु स्वभाविक विगल आत्मा नवे हे सो स्वभावकर रह शुद्धि कर हुवा हे धसी कामने तु अष्ट हे ने कोडि अतीष्ट हु अ प्राप्त होता हे तिमकर नि कतता उपलती हे, सो तुजों नहीं जर्ध, तुजों सब र्ध द्विपके विषय निधमान हे. तेसें होत तेरेको वैराग्य हुआ हे, तारे तु अट हे हे रामछ। ने मसान आदिक क छे स्थानक हे ता दिनने सबकों वैराग्य उपलता हे. ने क्यु नहीं, मर जना हे। निनमें कड कोड अष्ट पुरप होता हे सो वैरागकों ददर अपता हे, और ने मूर्ध हे, सो हिर विषयमें आराग हो लता हे, तारे जिनकों अकारन वैराग्य उपलता हे सो अष्ट हे; हे रामछ। ने अष्ट पु ३५ हे, सो अपने वैराग्य अरु अथासके अय करे

संसार बंधनों मुक्त हो जते है. जैसे हरित बंधनों  
 तोरके अपने जलसो निकस जाता है, तन मुष्पी होता  
 है, तेसे वैराग व्यपाराके जलकर बंधनों सानी मुक्त होत है.  
 हे रामछा! यह संसार जडा अनर्थरूप है; न पुश्पने अपने पु-  
 श्पार्थ करके बंधनों नहीं तोखा, तिनको राग दोषरूपी अग्नि-  
 न्दरावत है; अइ गिन पुश्पने अपने पुश्पार्थ करके सास्त्र और गु-  
 रूको प्रमान करके ज्ञान साध्या है, सो उम पदको प्राप्त भये है.  
 हे रामछा! शुभ शुभ साथ तेरी श्रद्धि निर्मल होय गही है;  
 तेरा नो सिद्धांतका सार जयन है सो तेरे रिद्धमें प्रवेश  
 कर रहेगा. जैसे उज्वल ज्यको डेरारका रंग शीघ्र बढ  
 जाता है, तेसे तेरे निर्मल चित्तको उपदेशका रंग लगेगा.  
 जैसे सूर्यके उदयते सूर्यवंशी कुमल भीलते है, तेसे तेरी  
 श्रद्धि शुभ शुभ कर भील आर्ध है. हे रामछा! नो कुछ  
 सास्त्रका सिद्धांत आत्मतत्व में गुञ्जको कहता हो, तिसमें  
 तेरी श्रद्धि शीघ्र प्रवेश करेगी. जेमें निर्मल जलमें सूर्य-  
 की कानि प्रवेश करत है, तेसे तेरी श्रद्धि आत्मतत्वमें शु-  
 द्धता करके प्रवेश करेगी. हे रामछा! जे तुभारे आगे  
 हाथ लेरके प्रार्थना करत हों, नो कुछ में गुञ्जको उपदेश  
 करत हों तिसविषे तुं आस्तिक भावना करीयो, नो धनि  
 जयन कर मेरा उध्यान होवेगा; अइ नो गुञ्जको धारणा  
 न होवे, तो प्रसन्न मत करना. नो शिष्यको गुरुके जयनमें आ-  
 स्तिक भावना होती है, तिसका शीघ्र उध्यान होता है;  
 ताते मेरे जयनमें आस्तिक भावना करियो; और जिस-  
 कर तुं आत्मपदको प्राप्त होवेगा सो में कहता हों. प्रथम-  
 तो यह करने असाहि श्रुवमें असत्य श्रद्धि है, तिनका

संग त्याग करे; अरि मोक्ष द्वांके शु आ? द्वांपात हे, तिनमों मित्र भावना क?; न्य तिनमों मित्रभाव होयगा, तय वह मोक्ष द्वारमें पहुँचाव द्यगे; तय आत्म दर्शन पुञ्जको होवेगा; मो द्वांपातके नाम अवन क?—सम, मंतोष, पिया?, स-भग, यह आगे द्वारपात हे; जिन पुरूपने धनगे अरा दिया हे तिसरा यह ग्रीष मोक्षरूपी द्वा रके अत? क? हेते हे, हे गमछ। मो आरों अरा न होवे, तो दीनके अरा कनो, अथवा दौके अरा कर ले, अथवा अेके अरा क?, जे अे अरा होवेगा, तो आरों अरा हो जयगे, धम आगेका परस्पर रह हे, नहा अेक आता हे तहा आगे आपों रहते हे, न पुरूपने धनमों अेह दिया हे सो सुभी जये हे, तिनको अध्यात्मक, आदिभित्तक, आदिभौतिक, ताप नलाय राकता नहीं, जेसे अरणा धनमें जहुन अरणाके होत अनके दावानन नलाय नहीं राकता, तेमें जानीके अध्यात्मक आदि श्वाप कष्टके नहीं देत हे गमछ। जिन अेष्ट पुरूपने संसारके वि रस बनकर त्याग दिया हे, तिनगे संसारका पदार्थ गिराय नहीं राकता, अरु जे मूरज हे तिनके गिराय हेते हे, जेसे अध्यायी अयत पवनके जेगसों वृत्त गिर जते हे, पगु कल्पवृत्त गिरता नहीं, तेमें हे गमछ। अेष्ट पु रूय वही जिसगे संसार पिस हो गया हे, सो केवण आत्मतत्वकी धर्मजा करे तिस परायन जये हे, तिनको अि अविद्याका अविचार हे; सो अि उन्नम पुरूप हे, हे रा मछ! तुभी तेसा उन्नत पात्र हे, जेसे कोमल पृथ्वीमें नीज जोते हे, तेसे गुञ्जके में उपरेरा कता हों, ओर

जिसको लोगकी धिक्का है, और संसारकी और बतल  
 करता है, सो पशुवत है; भेष्ट पुरुष वही है, जिसको सं-  
 सार तरनेका पुरुषार्थ होता है. हे रामछ ! प्रभु तिनके  
 पास करिये, जनमेमें आवे जे मेरा प्रभुका उत्तर देनेको  
 समर्थ है; और जिसमें उत्तर देवेके सामर्थ्य दिखवेमें  
 नही आवे, तिसमें प्रभु करना नाहीं; और उत्तर देनेको  
 जे समर्थ देखिये, और तिसमें असत्यकी भावना न  
 होय, तज तिससो प्रभु करिये, कहिये जे रंभकर प्रभु क-  
 रनेमें पाप होता है; और गुरुजी उपदेशा तिनको करता है,  
 जे संसारते विरक्त होये; अइ देवज आत्मपरायण होनेकी  
 भक्षा होये; अइ असत्यका भाव न होये, ओभा पात्र दे-  
 ंभके उपदेश करे. हे रामछ ! जे गुरु अइ शिष्य होनो  
 उत्तम होते है, तज जयन शोभते है; तुम उपदेशका  
 शुद्ध पात्र हो; जेते कछु गुन शिष्यके शास्त्रमें जर्नन किये  
 है, सो सज तेरेमें पैयत है; और में उपदेश करनेमें स-  
 मर्थ हो, ताने कारज शीघ्र होयेगा. और जिनने धनका  
 त्याग किया है, सो दुःखी है. हे रामछ ! जद्यपि प्राणका त्याग  
 होये, तोभी ओक माधन तो जल करके पारा करना; ओकेके  
 पारा कियेने आरोही जशी होयगे; अइ तेरी बुद्धिमें शुभ  
 गुनने आवके निवास किया है; जेसे सूर्यमें सज प्रकार  
 आपहुवे है, तेसे संतने अइ शास्त्रने जे निर्मल गुन कहे है,  
 सो सज तेरेमें पैयत है; हे रामछ ! जज तुं मेरे जय-  
 नका अधिकागी जयाहे; जेसे चंद्रमाके उदयने चंद्रमांशी  
 कमल पील आवते है, तेसे शुभ गुनकर तेरी बुद्धि पील  
 आवे है. हे रामछ ! सतसेग अइ सतरास्त्रद्वारा बुद्धिको



चंद्रमाके उदय हुवे आकारा शोभना हे, तसे आत्माके साक्षात्कार हुवे तेरी ज्युद्धि जियेगी.

धृतिश्री योगवाशिष्ठे सुमुक्षु प्रकेशे वशिष्ठोपदेशो नाम  
अष्टादशः सर्गः ११

वशिष्ठोवाच. हे रामछा! अज तुं मेरे जयनका अधिकारी हे, काहेतें जे, तप, विगम, विचार, संतोष, आदि जे गुण अज संत अरे साखने कहे हे, सो सज तेरेमें पैपत हे; ताते तू मेरे जयनका सुन, सो रज तम अजकां त्यागकर शुद्ध सात्विकवान होकर सुन.— गजम जे विच्छेप अरु तामम जे लय निद्रामें होत हे सो होउका त्याग करके सुन. जेते कष्टु जिनासुके अज साखमें गर्जन डिपे हे. सो सज कं तुं संपन हो, ताते मेरे जयनका तुं अधिकारी हे; ओर मूर्खकां मेरे जयनका अधिकार नांही. हे गजमछा! जेसे चंद्रमाके उदयें चंद्रकांत मनी द्रवीभूत होती हे, तज नामें. ते अभृन सरता हे; ओर पाथरकी शिखा हे, तिनते द्रवीभूत नही होता हे; तेमें जे जिहामु होता हे, तिसकां परमार्थ जयन लगता हे; अर अरानीकां नही लगता; हे रामछा! शिष्य तो शुद्ध पात्र होवे, अर उपदेश करेहारा ज्ञानपान न होवे तो उसकां आत्माका साक्षात्कार नही होवे, जेसे चंद्रमुष्पी कमलनी निर्भज होय, अर चंद्रमा न होय तज प्रकुलित नही होती तसे. ताते तुं मोक्षका पात्र हे; अर जेपी परमगुरु हों; मेरे उपदेश कर तेरा अज्ञान नष्ट होय जयेगा. में मोक्षका उपाय कहता हों, तिसकां तुं जसे प्रकार जियारेगा. जेती कष्टु

मयीनरूपी मनकी वृत्ति है, तिनका अभाव हो जलपत्ता; जैसे  
 महा प्रलयके मुँहके मंदरायल पर्यंत जल जाता है; ताँते  
 है गमछ ! वैराग्य अरु अत्यागके फलके धरि मनको  
 अपने सिधे लीन करे शांतात्मा होवली; तँने पापका  
 वस्थामों सेकरे अन्वारा करे गप्पा है, ताँने मन उपसम  
 पापके आत्मपदको प्राप्त होवेगा. है गमछ ! सत्सग  
 अरु सत्साम्प्रदाय द्वारा जे आत्मपद पाया है, सो सुखी  
 जये है; डिरे तिनको दुःख नहीं लगता; कहते ते जल दुःख  
 देहाभिमानके होता है, सो देहा अभिमान तो जेने  
 त्याग दिया है, तेमें जिनमें देहा अभिमान त्याग दिया है, अरु  
 देहा आत्मता करके जहुगी ग्रहन नहीं करता, ताँने सुखी  
 रहेगा है. है रामछ ! जिनने आत्माका जल धरके नि  
 आगद्वाग आत्मपदको पाया है, सो अदृष्टिम आनंदके  
 सदा पूर्ण है; सज जगज निसको आनंदरूप भासता है,  
 अरु जे असम्यग्दर्शा है, तिनको जगज अनर्थरूप भा  
 सता है. है गमछ ! ससरनेरूप जे यह संसार सर्प है,  
 सो आत्मानिके हृदयें छे हो गया है, सो जेगडूपी गा  
 इड मंत्र केके नष्ट हो जाता है; अन्यथा नहीं होता,  
 और सर्पका जिय है, सो ओड जन्ममें मारता है; अरु  
 अंमरनरूप जे गिय है, निसकरके अनेक जन्म पापके म  
 रना ब्रह्मा जाता है; शांतिवान कदाचित् नहीं होता. है  
 गमछ ! जिन पुरुष सत्संग अरु सत्साम्प्रदायके जयनद्वारा  
 आत्मपदको पाया है, सो आनंदित जये है; अरु अंत  
 र्गुहिर सज जगज जिनको आनंदरूप भासता है, अरु  
 मय किया करनेमें आनंद विद्याम है. और जिनने स

तसंग अइ सतशास्त्रका भिचार लग्या हे, अइ संसारके  
 सन्मुख हे. तिमकर तिसको संसार अनर्थरूप हे, सो ऐसा  
 दुःख देने हे:—जेसे सर्पके दंसते दुःखी होते हे, अइ  
 शास्त्रकर धाम्येल होते हे, अइ अग्निमें परेकी नांछ ल-  
 वते हे, अइ जेवरीके साथ बंध होते हे, अइ अंध रूपमें  
 गिरेते कष्ट पाते हे; तेसे संसारमें मनुष्य दुःख पावते हे.  
 हे रामछा! जिन पुरुष सत्संग अइ सतशास्त्रद्वारा  
 आत्मपदको नही पावा, सो जेमे कष्ट पाते हे, सो नगदरूपी  
 अग्निमें ज्वरते हे; अइसिके निद पीते हे; पापानकी  
 परप्पाकर अग्नि होते हे; डोडुमें पीडते हे; अइ शास्त्र  
 साथ कटते हे; धर्त्यादिके जे जडे कष्ट हे, सो तिनको  
 प्राप्त होते हे. हे रामछा! ऐसा दुःख डोडि नाहीं।  
 जे धिसे जेवको प्राप्त नही होना; आत्माके प्रभादसो मज  
 दुःख होते हे; अइ जिन पदारथको यह रमनीक जानते  
 हे, सो अकरी नांछ अंमल हे; उजहु स्थिर नही रहते;  
 सतभारगको त्यागकर जे धनकी धरणा करते हे, सो महा  
 दुःखको प्राप्त होते हे. अइ जिन पुरुषने संसारको वि-  
 रस जान्या हे, ओर पुरुषार्थकी तरई दृढ़ जपे हे, तिनको  
 आत्मपदकी प्राप्ति होती हे. हे रामछा! जे पुरुषको  
 आत्मपदकी प्राप्ति जध हे, तिनको फिर दुःख नहीं होता,  
 ओर तिनके दुःख जे नष्ट नही होते, तो जानके निमित्त  
 पुरुषार्थ डोडि नही करता. जे अज्ञानी हे तिनको संसार  
 दुःखरूप हे, अइ ज्ञानीको सज्जगत आनंदरूप हे;  
 अपने आपुर्ध हे; उनको जम डोडि नहीं रहता. हे रा-  
 मछा! ज्ञानवानमें नाना प्रकारकी जेष्टानी दृष्ट आदी



तौमी महा शानरूप है, अरु आनंदरूप है; सगारका  
 दुःख छोड़ नहीं पररा कर राकता; अहे तै नो तिनने  
 शानरूपी उपय पहिखा है. हे गमछ। जानवानडौबी  
 दुःख होता है, जडे जडे अक्षयि, अरु शानयि जहोन  
 शानवान जये है, मोहु दुःखों शान होने है, परतु दुः  
 खमों आतु नही होने, उयों नो शानवानने शानका  
 उपय पहिखा है, ताने छोड़ दुःख पररा नहीं करता,  
 अरु अतरते सदा शानरूप है; इस प्रकार ओरबी नो  
 शानवान उनम पुरप है ओ शानरूप है, तडो कर्णका  
 अभिमान छोड़ नाही दुग्ता. हे गमछ। अशानरूपी  
 नो जेय है, निसकर मोहरूपी कृहाडाका जृम्भ है, सो सा  
 नरूपी गगलान कडे नष्ट होवता है ताने स्वमचको शान  
 होय है; अरु सदा आनंदकर पूगन है. हे रामछ। नो  
 कछु क्रिया करते है, ओ तिनको विनासरूप है अरु सप  
 जगन् आनंदरूप है, अरु शरीररूपी ग्य, छद्रिवरूपी अथ,  
 ओर मनरूपी रसा, तासों अथको जेयता है; अरु 'बु  
 द्धिरूपी ग्य वही है, निस रयमें यह पुरप जेडा है, अरु  
 छद्रिवरूपी अथ छसको जेडे माग्गमें डारने है; अरु  
 जानवानके छद्रिवरूपी अथ है ओ जेसे है नो लहा वतते  
 है तहा आनंदरूप है, डिमी डोरमें जेद नहीं पावता;  
 सप क्रियामें उनको विनास है, सर्वत आनंद कर तृप्त  
 गते है.

छतिश्री योगवासिष्ठे सुसुसु प्रकरणे वशिष्ठोपदेश कथन  
 नाम द्वादशः सर्गः १२

वशिष्ठोवाच. हे रामञ्च! दृग्गो व्यापक, जे तेरा  
 हृद्य प्रष्ट न होवे, जडुगी संसारके छिट अनिष्ट कर्मकर  
 अजायमान न होवे; जिस पुरुषको छिस प्रकार आत्मपदकी  
 प्राप्ति भई हे, सो परम आनंदित भवे हे; सोकेके कर्ता  
 नाहीं हे. न वांचना करता हे, उपाधितें रहित परम  
 शान्तिरूप अमृतकर पूरन होय रहे हे; सो पुरुष नाना  
 प्रकारकी चेष्टा करते दृष्ट आपते, परंतु कुछ नहीं करते.  
 जहां उनके मनकी वृत्ति वृत्ति हे, तहां आत्मसत्ता जा-  
 सती हे, सो आत्मानंदकर पूरन होय रहे हे. जैसे पूर्ण-  
 भासीका अंद्रमा अमृतकरी पूर्ण रहता हे, तेमें ज्ञानवान  
 परमानंदकरी पूरन रहता हे. हे रामञ्च! यह जे में  
 प्रभुओं अमृतरूपी वृत्ति उली हे, छिसकों जन्म वृत्तिया तज  
 प्रभुओं साक्षात्कार होवेगा; जन्म जन्मकों आत्मज्ञानकी प्राप्ति  
 होती हे, तज सज दुःख नष्ट हो जाते हे; जैसे अंद्रमाके  
 मंडलमें अंधकार नहीं होता, तेमें तानीकों अशांति कणहु  
 नहीं होती. और जे कुछ किया करता हे, जिसमें दुःख  
 पावता हे; जैसे ककरके घूममें कंठकी उत्पत्ति होती हे,  
 तेमें अज्ञानीकों दुःखकी उत्पत्ति होती हे. हे रामञ्च!  
 छिस लुपकों मूर्यता करके जडे दुःख प्राप्त होते हे, ऐसा  
 दुःख अद्भुत और कोठ नांही, अरु किसी आपदा करके  
 भी ऐसा दुःख नहीं होता; जेसा दुःख मूर्खता करके  
 पाते हे ऐसा दुःख कोठ नांही. हे रामञ्च! हाथमें  
 हीकरा ले अंजणके धग्गी निष्ठा गृहन करे, और आत्म-  
 तत्त्वकी निष्ठासा होवे, तज अवर अधिरे जितने अष्ट हे,  
 तामें मुरख जे . . . . . हे; नि . . . . . मुर . . . . . ६२

करनेको मोक्ष उपाय में रहता हो है रामछा ! यह मोक्ष उपाय पञ्च जोषका करन है; कछु क अदि सम्भत होवे, अर्थ यह जे प० पचाईके जननेहारी होवे, अरु मोक्ष उपाय शास्त्रको जियारे, तो तिसकी मूर्खता नर हो न वेगी, अरु आत्मपत्नी प्राप्ति होयेगी. जेमा आत्मपत्नी पका का न यह शास्त्र है तेसा और शास्त्र तिनोकी विषे कोडि नाही नाना प्रकारके दृष्टान महित धर्तिसाम जे जमें तिसको जन्म जियारेगा तम परमानन्दको प्राप्त होयेगा, अज्ञानरुपी निमिर नारा करनेको सानरुपी सिताका है. जेसे अंकारको सुर नाम करता है, तेमें अज्ञानको यह शास्त्रना जियारे नारा करता है है रामछा जिस प्रकार धमिका कथान होता है सो अनन इयुं जे सानवान है सो शास्त्रका उपदेश करे, अरु अपन अनुभवमों सान पावे. जन्म युं अरु शास्त्र और अपना अनुभव यह तीनों धरुं न मिले तम धरिदा कया न होवे, जन्म लगी अदृष्टिम आनन्दे प्राप्त नही जया, तमनगी दद अप्पारा करे, तिस अ विम आनन्दे प्राप्ति करनेहारा में युं हों; एष भावका में परम भिन हों जेसा भिन अपन कोडि नाही, हमारी सगली एसे आनन्द प्राप्त कनेहारी है; ताते जे कछु में केहता हों सो कृ कर. है रामछा ! यह जे ससागके रोग है, सो छिनमान है ताते धरुंमे ताम इहु, और विषके परिनाममें दु प अनत है, धरुंमे दु पारुप जनकरे ताम वे, अरु हम साग्गिने सानवानका सग कर और हमारे जमनके जियारुं तेरे

हमारे संग प्रीति करी है, तिसकों हमने आनंद पदकी प्राप्ति कर दीनी है, जिस आनंदतें अन्नादिक आनंदित जये है; और ज्ञानवानहु आनंदित जये है, सो निर्दुःख पदकों प्राप्त जये है. हे रामछा ! येष्ट पुरुष सोई है; जने हमारे साथ प्रीति करी है. जिसने संत अरु सास्त्रके नियारद्वारा दशकों अष्टम जन्मा है, अरु निर्णय हुवा है; आत्माका प्रभात छपकों दीन करता है; अस्तानीका हृदयरूपी कमल तमजग सकुम्भा रहता है, जन्मजग तृष्णारूपी रात होती है; जन्म ज्ञानरूपी सूर्य उदय होता है, तम तृष्णारूपी रात नष्ट हो जाती है. अरु हृदयरूपी कमल आनंदकर जिला आवे है. हे रामछा ! जे पुरुषने परभारथ भारगकों त्यागवा है, अरु संसारका ज्ञानवान ज्ञादि जोगमें मग्न हुवा है, तिनकों तुं मँडुक जल, जैसे श्रीममें मँडुक पखा राज्य करता है, तैसा वह पुरुष है. हे रामछा ! यह संसार जग आपदाका समुद्र है; तामें जे कोउ अष्ट पुरुष है, सो सत्संग अरु सत्सास्त्रके नियार करके संसार समुद्र उर्वंधता है, अरु परमानंदकों प्राप्त होता है. आदि, अंत, मध्य, रहित निर्णय पदकों प्राप्त होता है; अरु जे संसार समुद्रके सन्मुख हुवा है, सो दुःखतें दुःखरूप पदकों प्राप्त जया है, कष्टतें कष्ट, नरककों प्राप्त होता है. जैसे जियकों जिय जल तिसका पाव करता है, सो जिय उसकों नारा करता है, तामें जिस पुरुषने असत्य जलकें अहुरी संसारके ओर जतन करता है, सो मृत्युकों प्राप्त होता है. हे रामछा ! जे पुरुष आत्म पदतें विमुक्त है, अरु आ-

त्याग कर' गसाराकी ओर धारणा हे, सो जेमे डिम्बि ध  
 ग्मे अभी लगी, अइ तूनडा धर, अइ तूनकी सत्वा  
 करीके रावन करता हे मो जेमे नाराडो पावे तेमे वनम  
 मृत्युमे प्राप्त होवहिगे; ओर मभारके पदारथ देणकर ग  
 ग होवपान हुने हे, मो सुख निशुचीडा अमडा जेसा हे,  
 को जे होपके मिठ जवे, स्थिर नही रहे, तेमा मभारका  
 हु प आगमा पाई हे. हे रामछा! यह मभार अवि  
 या करके जासता हे अइ पियार डिपेने चीन हो जता  
 हे; पियार डिपेने चीन जे नही होता, तो तुमके उपदेश  
 करनेका काम नही था, मो तो पियार डिपेने चीन हो  
 जता हे, धमी डारने पुत्रपाथ्य रहिये. जेमे हाथमे  
 दीपक होने, अइ अथ रूपमे गिरे मो मूर्छता हे तेमे स  
 सा जमके निवारनहारे युग शास्त्र विद्यमान हे तिनकी  
 रागन न आने मो मूर्छ हे हे रामछा! जे पुत्रप मतकी  
 भगति, अइ सतरास्त्रके विसागडाग आत्मपदके पाया हे  
 सो पुत्रप केवन कैवल्य जावके प्राप्त जवे अर्थ यह जे  
 शुद्ध जैतन्यके प्राप्त हुने हे, अइ मभार जम तिनका  
 निवृत्त हो गया हे हे रामछा! यह मभार मनके सुमरने  
 उपलया हे, मो धिसका डप्यान जाधर करके नही होना हे  
 अइ धन करकेनी नही होना हे, प्रज करकेनी नही होना हे  
 अइ तीर्थ अइ देवदार करकेनी नही होना हे, अर्थ  
 करकेनी नही होना हे, अइ मनके छतनेने डप्यान होना हे  
 हे रामछा! जिसको तान परमपद उहने हे ओर जिसको  
 रसावन रहने हे, जिसके पापेने धमिका नारा नही होय,  
 अइ अमग होवे, अइ सज सुखकी पूर्णता होवे, धिसका

साधन समता अर्थात् संतोष है; धनिकर ज्ञान उत्पन्न होता है  
 सो आत्मज्ञानरूपी ओंकार जृम्भ है, निमज्ज कूल गांति है ;  
 अर्थात् शक्ति धरिद्रा इत्यर्थ है; जिस पुरुषको यह ज्ञान प्राप्त  
 हुआ है, सो सातिवान् हुआ है; सो निर्दोष रहता है,  
 जिसको मगारका जावाजावर्ष रपरों नहीं है, जेमें  
 आकाशमें सूर्य उदय होता है, तथ जगतकी क्रिया  
 होती है, द्विर जग्य गो अदृश्य होता है, तथ जगतकी  
 क्रियाभी लीन हो जाती है; जेमें जिस क्रिया होने न होनेमें  
 आकारा ज्यों ही त्यों है तेसे ज्ञानवान् सदा निर्दोष है, जिस  
 आत्म ज्ञानकी उत्पत्तिका उपाय यह मग्य अष्ट शास्त्र है,  
 है रामञ्जो जे पुरुष धरि मोक्षोपाय शास्त्रों अर्थात् संकु-  
 ल पदे अथवा धुने तो पाछे दिन सो मोक्षका जागी होय  
 रहे; अर्थात् मोक्षके मार द्वाग्पाय है सो में तुत्रको कहता हों;  
 सो धनमेंने ओंकारु जग्य अपने वरा होय तथ मोक्षद्वारमें  
 धरिद्रा शीघ्र प्रवेश होवे; सो यागेंद्रा नाम कहें सो मुन-  
 है रामञ्जो यह सम धरिद्रा परम विश्रामका कारण है, अर्थात्  
 यह संसार जे दिप्ता है, सो मरथलकी नदीवन है; धरिद्रा  
 दृष्टकर भूर्भुव अज्ञानीरूपी जे मृग है, सो सुजग्य जल  
 जलकर दोरता है, अर्थात् सातिकों नहीं प्राप्त होता; जग्य  
 समरूपी मधकी जग्य होवे, तथ सुभी होवे, है रामञ्जो  
 समभो परम आनंद है, अर्थात् समसो परमपद है, और  
 शिवपद है; जिस पुरुषनें सम पाया है सो संसार समुद्र-  
 ते पाय हुआ है; जिसको शत्रु गो मित्र हो जाते है, है  
 रामञ्जो जग्य अर्द्रका उदय होता है, तथ अमृतकी कक्षा  
 खुटवी है, अर्थात् शीतलता होती है; तेसे जिसको उदयमें स-

मङ्गुपी अंद्रमा उदय होता है, तिसके सज ताप मिट जाने  
 है, अरु परम गातिवान होते है. है गमछ। यह जेनाके  
 अमृत ममान है, वही परम अमृत है; सम कउके छसके  
 परम सोभा प्राप्त होती है जेमें पूर्णमासिके अद्रमाकी कति  
 परम उदयत होती है, तेने गममे पापके उसकी उदयत  
 कति होती है. जेमें निप्रसुके जो हृद्य है सो अेक तो  
 अपने शरीरमें है, दूसरा सजमे है; तेमें छसके तो हृद्य होते  
 है, अेक अपने शरीरमें दुग्ग समझी छनका हृद्य होता है.  
 अेसा आनद अमृतके पान जियते नही होता, अरु  
 लज्जभीकी प्राप्तिभी नही होता; जे आनद समानके  
 होता है. है रामछ। प्राणहुनेंभी प्रिय कोर् होने, सो  
 अंतर्धानकर हिर प्राण होवे, तेसा आनद नही होने, अेसा  
 आनद समानके होने. तीसके दर्शन कउनी आ  
 नद प्राप्त होता है; अरु अेसा आनद गज्जकेभी नही  
 होता, जे जाहिमें अेष्ट मत्री होता है, अरु अंतरमें मु  
 दर म्रिया होतिहै, तिनकउभी अेसा आनद नही होता,  
 जेसा आनद गममपन पुरषके होता है है गमछ।  
 जिस पुरषके समझी प्राप्ति जर्ह है, सो जदना कउने  
 जेग है अरु पूजने जेग है; जिसके समझी प्राप्ति जर्ह  
 है, तिसके उद्वेग नही आवे, अरु लोकहु ते उद्वेग नही  
 पावे, उसकी क्रिया अमृत ममान है, अरु जयनभी उमके  
 अमृतकी नांछ भीठे है; जेसैं अंद्रमाकी कीरन शीतल  
 अरु अमृतरूप है सो सजके हृदयाराम है जेसैं सत न  
 नके जयन है. जिस पुरषके समझी प्राप्ति जर्ह है, ति  
 सकी संगति जज छग छषके प्राप्त होती है, तज

सत्य परम आनंदित होने है। हे रामछ ! जैसे आत्मक  
 मानकों पापके आनंदित होता है, तैसे जिसके समझी  
 प्राप्ति भर्ष है, तिसके संगकर छव अधिक आनंदवान  
 होता है। जैसे जिसका बांधव भुवा हुआ है, आवे,  
 और धरके आनंद प्राप्त होवे, तीमनेभी अधिक आनंद  
 सम भयन पुरुषों पापके होता है। हे रामछ ! जैसा  
 आनंद अक्षुवर्ती राजके पापेनेभी नहीं होता, और त्रिबोकीका  
 राज पापेनेभी नहीं होता, जिसके समझी प्राप्ति भर्ष है,  
 तिसके राजुंभी मित्र हो जते है तिसकर कछु भयभीत नहीं  
 होता और सर्पका भयभी तिसके नहीं रहता; सिंहका भ-  
 यभी तिमों नहीं रहता; ज्योउहु किसीका भय नहीं रहता;  
 सदा निर्भय राजरूप रहता है। हे रामछ ! जैने कोउ कछ  
 आप प्राप्त होवे, और शूलकी अग्नि आप लगे, तोनी  
 सो अंधापमान नहीं होता, सदा राजरूप रहते है; जैसे  
 शीतल आंघनी अंद्रमामें स्थित है, तैमें जै कछु शुभ गुन  
 और संपदा है, सो सत्य समवानके हृदयमें आप स्थित  
 होते है। हे रामछ ! जै पुरुष 'अध्यात्मकादि' तापकर  
 लक्षता है, तिसके हृदयमें समझी प्राप्ति होवे, तय ताप  
 मिट जते है। जैसे तम पृथ्वी वर्षा करके शीतल हो जाती  
 है, तैसे जिसका हृदय शीतल हो जाता है, तिसके समझी  
 प्राप्ति भर्ष है, सो सत्य क्रियामें आनंदरूप है, तिसके दुःख  
 कोउ नहीं स्पर्श करता; जैसे वनर शिलाके आन वेध नहीं  
 राकता, तैसे जिस पुरुषमें समझी कथय पहिरधा है, तिनके  
 अध्यात्मकादि ताप वेध नहीं राकता; वह संपदा शीतलरूप  
 रहता है। हे रामछ ! तपशी, पंडित, पत्सिक, धनाढ्य, सो



पूर्य मान करने योग्य है, परंतु जिसको समझी प्राप्ति लाभ  
 है सो समझने उचित है, सो समझने पूर्यने योग्य है उसको  
 मन्त्री वृत्ति आत्मभावने गृह्यते इतीति अत्र मन्त्र विधाननि  
 मोहन है. जिस पुरुषमें शम्भु, शर्मा, रूप, रस, मध  
 यह छंदिके विषय छष्ट अनिष्टमें गम होय नाही होय,  
 जिसको गान्ध्यात्मा कह्यते है. हे रामछा! जो नमाने रमणीय  
 पदार्थमें जन्मान नहीं होत, अत्र आत्मोत्तम पूर्य है,  
 जिसको गान्ध्यात्मा कहते है, यदि समझते शुभ अशुभ,  
 मलीनपना नहीं समझत; अत्र निर्दय रहता है. जैसे  
 व्याध्यात्मा मन्त्र पदार्थमें निर्दय है, तेमें गान्ध्यात्मा अत्र  
 निर्दय रहता है. हे रामछा! ऐसा जो पुरुष है सो  
 छष्ट विषयी प्राप्तिमें ह्यभयान होने नहीं, अत्र अनिष्ट  
 विषयी प्राप्तिमें मोहान होय नहीं, अत्र अत्रमें मन्त्र  
 गान्ध्यात्मा कहते है; उसको उड्डि रूप शर्मा नहीं होता, अपित  
 आपने मन्त्र परमानन्दप रहता है; जैसे सुते विषय होने  
 अत्र मन्त्र नष्ट हो जाता है; तेमें शान्ति पाये मन्त्र  
 नष्ट हो जाता है; मन्त्र निर्दिष्ट रहते है. हे रामछा! सो  
 पुरुष मन्त्र अत्र रहते दृष्ट आते है, परंतु मन्त्र निर्दिष्ट रूप  
 है; उड्डि विद्या इनको शर्मा नहीं होती. जैसे जन्ममें कम  
 निर्दय रहता है, तेमें गान्ध्यात्मा मन्त्र निर्दय रहता है. हे  
 रामछा! जो पुरुष जो मन्त्र मन्त्रमें पावत अत्र मन्त्र  
 आपकी पावत मन्त्रोंका त्रय अत्र रहता है, सो गान्ध्यात्मा  
 कहिये. हे रामछा! जो पुरुष गान्ध्यात्मा कहिये है, जिसका  
 अत्र जिन्ना छिन्न मन्त्र होय तपता है; अत्र जिसको  
 शान्ति प्राप्ति लाभ है, सो अत्र मन्त्र हीन है; अत्र

सदा ओकरस हे; जेसे हिमालय सदा शीतल रहता हे, तेसे वह सदा सीतल रहता हे; वाके मुष्पती कांति पहोन मुंदर हो जाती हे; जेसे निकलंक अंडमा होये, तेसे सांतिपान पुरप निकलंक रहता हे. हे रामछा! जिसके सांति प्राप्त भई हे, सो परम आनंदित हुये हे; परम लाभ जिसके प्राप्त होत हे, सानी धरिधि परमपद कहते हे; जिसके पुरपार्थ करना हे, तिसके सांति प्राप्ति करनी यहिये. हे रामछा! जेमे मेने कहा हे, तिस कम करके सांति का गृहव करो, तज संसार समुद्रके पार पहुँचोग.

धृतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरोत्ये सभ निरूपणु  
नाम तपोधराः सर्गः १३

वशिष्ठोवाच. हे रामछा! अज निवारका निरूपन शुन. जज हृदय शुद्ध होना हे, तज निवार होता हे; अर सास्त्रार्थ निवारद्वारा सुद्ध तीक्ष्ण होती हे. हे रामछा! अज्ञानरूपी जेजन हे, तिमने आपदारूपी बेसीकी उ-  
त्पत्ति होती हे; तिसके निवाररूपी अङ्ग करके काटेगा, तज शांत आत्मा होयेगा; अर मोहरूपी हस्ती हे, जो छवका हृदय कमलका अंड अंड कर डारता हे, अनिप्रांथ वह जे छट अनिष्ट पदार्थमे राग होपकर छेदा जाता नाही; जज निवाररूपी सिंह प्रगटे, तज मोहरूपी हस्तिका नाग करे; किर शांतात्मा होये. हे रामछा! जिसके उच्च सिद्धता प्राप्त हुई हे, सो निवार अर पुरपार्थकर भई हे; जे राजा होता हे, सो प्रथम निवारकर पुरपार्थ करता हे, तिसकर राजके प्राप्त होता हे. जज, सुद्धि अर तेज,

अर्थ जे परार्थका आगमन, अरु पंचम परार्थकी प्राप्ति  
 होती है, सो पापोंकी प्राप्ति बियागुर होती है; अर्थ  
 वह जे धर्मियोंका छाना; अरु पुत्रि सो आत्मा व्यापीनी,  
 अरु तेज परार्थका आगमन धर्मकी प्राप्ति बियागुर होती  
 है. हे रामछा ! जिस पुत्रपते बियारका आशय निवा है,  
 सो बियागुरी दृष्टा कुरे जिसकी वाजा कुरते है, तिसका  
 पापने है, ताँ बियार धर्मका परम भिन है. जे  
 बियागुरान पुत्र है, सो आपदांमें मज नही होता. जेमें  
 दुष्पी जनमें दुष्पन नाही, तेमें वह आपदांमें दुष्पन  
 नाही. हे रामछा ! वह बियागुर अज्ञान जे करता है, देता  
 है, सेता है, सो शय किया सिद्धांत कागनरूप होती है,  
 धर्म, अर्थ, काम मोक्ष बियागुरी दृष्टा कुरे सिद्ध होते है,  
 बियागुरी के परह है, तिसमें जिसका अभाव होता है,  
 सोई परार्थकी सिद्धि पावता है. हे रामछा ! शुद्ध  
 बियागुर बियागुर अज्ञान अरु आत्मज्ञानको प्राप्ति होहु, जेमें  
 दीपकमोक्ष परार्थका ज्ञान होवा है, तिसमें पुत्र बियागुर  
 मोक्ष सत्य अमृतको ज्ञानता है असत्यको त्यागकर  
 मृतकी ओर ज्ञान किया है सो बियागुरान कहते है  
 हे रामछा ! बियागुरी समुद्रजिसे आपदांभी तग्न अक्षते  
 है, जे बियागुरान पुत्र है, सो ससांके ज्ञान अभावमें  
 कष्टान नही होवा है. जे उषु बियागुर समुद्र किया  
 होती है, तिसका परिनाम सुष्प है जे बियागुरानि न सेटा  
 होती है, तिसका दुष्प प्राद-तोता है. हे रामछा ! अवि  
 बियागुरी उरक मृत्तु है, तिसमें दुष्पभी कुरक परे उत्पन्न  
 होते है, अरु अविबियागुरी गन है, तिसमें तृष्णाभी

पिशाचनी व्याप जियगती है, कण जियारूपी सूर्य उदय  
 होता है, तब अविचाररूपी रात्रि अरु तृष्णारूपी पिशा-  
 चनी नष्ट हो जाती है, हे रामछ ! हमारा मही आशि-  
 र्वाद है, जो तुम्हारे हृदयमें अविचाररूपी रात्रि नष्ट होछु,  
 विचाररूपी सूर्य करके अविचारित मंगार दुःखका नारा  
 होता है; जैसे जादक अविचार करके अपनी परछियाईं  
 पैनाल इधरके जगदों पायता है, अरु जियार डिपेते जय  
 नष्ट हो जाता है; तैसे अविचार करके मंगार दुःखको देता है,  
 और रात माहस मुझिकर जियार डिपेते मंगार जय नष्ट  
 हो जाता है, हे रामछ ! जहा जियार है तहा दुःख  
 नहीं है; जैसे जहां प्रकार होता है, तहां अंधकार नहीं  
 रहता है; जहां प्रकार नहीं तहां अंधकार रहता है; तैसे  
 जहा जियार है, तहां ससार जय नहीं है, अरु जहां जि-  
 यार नहीं तां मंगार जय रहता है; अरु जहां आत्म-  
 जियार होता है, तहां सुखको देनहार शुभ गुन व्याप स्थित  
 होते है, जैसे मान मरोवरमें कमलकी उत्पत्ति होती है,  
 तैसे जियारमें शुभ गुनकी उत्पत्ति होती है, जहा जियार  
 नहीं तहां दुःखका आगमन होता है, हे रामछ ! जो  
 इच्छु अविचारकर किया करते है, सो दुःखका कारन होता है,  
 जैसे सुहा जीनको आदके मृत्तिका निकसता है, सो जहां  
 छिड़ी होती है, तहां मेलीकी उत्पत्ति होती है; तैसे अवि-  
 चारकर मह पुरप मृत्तिकारूपी पापकियाके छिड़ी करता है,  
 तिसने आपदारूपी मेली उत्पन्न होती है, अरु अविचार-  
 रूपी पुताका आवा सूका जृच्छ है, तिसको सुखरूपी इल  
 खाते है, तैउ नहीं निकसते है; सो अविचार प्रसक्त

नाम है, जिस करके शुभ किया न होवे; अरु जिसकर  
 शास्त्रानुसार किया होवे, जिसका नाम मियार है. हे  
 रामछा ! जिसरूपी राजा है, अरु मियाररूपी पुत्र है,  
 वहां जिसरूपी राजा आता है, वहां मियाररूपी पुत्र  
 तिनके साथ हिंसी है; अरु वहां मियाररूपी पुत्र  
 आती है, वहां जिसरूपी राजा भी आता है. जो पुरुष  
 मियार करके संपन्न है, जो पूजने योग्य है, जिसको राज  
 कोडि नमस्कार करते हैं. जैसे दूतियके अद्रमादि राज  
 नमस्कार करते हैं, तैसे मियारवानको राज नमस्कार करते हैं,  
 हे रामछा ! हमारे देवत देवत अल्प बुद्धि मियारकी  
 हदताने मोक्ष पदमे प्राप्त जय है; ताने मियार सभका  
 परम मित्र है; मियारवान पुरुष अतर्कहि गिनत रहते  
 है, जैसे हिमाचल पर्वत अतर्कहि गीतन रहता है,  
 तैसे उहभी गीतन रहता है, देव ! मियार करके जैसे  
 पदको प्राप्त होता है. जो पद नित्य है, अरु स्वच्छ है,  
 अनंत है, परमानंदरूप है, जिसको पाकर जिसका त्यागकी  
 इच्छा होती नहीं; अरुका गृहनकी इच्छा नहीं होती है;  
 उनको छष्ट अनिष्ट विसे राज समान है; जैसे तगरके  
 होनेमें अरु लीन होनेमें समुद्र समान रहता है, तैसे  
 जिसकी पुरुषको छष्ट अनिष्ट विसे समान रहती है, अरु  
 संसारव्यम मिष्ट जता है; आधारमेने रहित केवग  
 अद्वैत तत्त्व इसको प्राप्त होता है. हे रामछा ! यह जगत  
 अपने मनके मोहो उपजता है, अरु अविचार करे दुःख  
 दाह विपता है, जैसे अनिचार करके पापको पैतान  
 जासता है, तैसे इसको जगत जासता है. जग्य अन्न

बियारकी प्राप्ति होवे, तब नग्न लज्ज नष्ट हो जावे. हे  
 रामछा! जिसके हृदयमें बियार होता है, वहां समताकी  
 उत्पत्ति होती है. जैसे पीछले अंकुर निकस आता है,  
 तेमै बियारते समता होत आती है; अरु बियारवान  
 पुरुष जिसकी ओर देखाता है, तिस ओर आनंद दृष्ट  
 आता है; दुःख कोडि नहीं आसता है. जैसे सुर्खों  
 अंधकार दृष्ट नहीं आवता, तेमै बियारवानको दुःख दृष्टिमें  
 नहीं आवता; जहा अविचार है वहां दुःख है; जहां  
 बियार है वहा सुख है; जेमें अंधकारके अभाव हुवे जै-  
 तासका अंधका अभाव हो जाता है, तेमै बियार कियेते  
 दुःखका अभाव हो जाता है. हे रामछा! संसाररूपी  
 दीर्घ रोग है; तिसका नाश करनेका बियार जडा औषध  
 है. जिसको बियारकी प्राप्ति भव है, तिसके सुखकी कानि  
 उन्वध हो जाती है; जैसे पूर्णमासिके अंद्रमाकी उन्वध  
 कानि होती है, तेसी बियारवानके सुखकी उन्वध कानि  
 होती है. हे रामछा! बियार करके धसकों परम पदकी  
 प्राप्ति होती है; जिस करी अर्थ सिद्धि होवे तिसका नाम  
 बियार है; अरु जिस करी अनर्थ सिद्धि होवे तिसका नाम  
 अविचार है. अविचाररूपी महिरा है; जे धसका पान  
 करता है सो उन्मत्त हो जाता है, तिसते शुभ बियार  
 कोडि नहीं हो आवता; साखके अनुभार जे कछु किया  
 है, सो ताने नहीं होती; ताते अविचार करी अर्थ सिद्धि  
 नहीं होता; हे रामछा! धमछारूपी रोग है, सो बियार-  
 रूपी औषध करके निवृत्त होता है. जिन पुरुषने बियार  
 द्वारा परमार्थ सचाका आश्रय लिया है, सो परम शांत

हो जाता है; अरु यह उपाधि छुड़ि निराधी नहीं रहती; सत्य हृदयको साक्षीयत होकर देखाता है; अरु असाठके साथ अभाव विरे ल्यों का लों रहता है; अरु उदय अमनने रहित नि मग रूप है, जैसे मगुद्र बसकरी पूगन है, तेमें जियारणान आत्मतत्व करी पूर्ण है, जैसे अंधा रूप विरे पग्या दुवा हरतके जन करी निक सता है, तेमें असाठरूपी अथ रूपमें गिग्या दुवा जियारके आया होकर जियारवान पुरष निरुगनेने अमर्थ होता है, हे रामछ । गण्यको जे कोइ कष्ट आथ प्राप्त होता है, तम उह जियार करके बतन करते है, तम कष्ट निवृत्त हो जाता है, तानें वु जियार कर देथ जे किमिडि कष्ट प्राप्त होता है सो जियारतें मिठता है, वुमणी जियारका आथन कडे सिद्धिसे प्राप्त होहु; सो जियार किमि कष्ट प्राप्त होता है, जे वेद अरु वेदाके सिद्धांतमें अवन क, पाठ क, जने प्रकार जियारगेगा, तम जियारकी हठता क आत्मतत्वमें प्राप्त होवेगा, जिस प्रकार क पदार्थम मान होता है, तेसे थुर अरु सास्त्रम जवन कर तत्वज्ञान होता है, जैसे प्रकारमें अधके पदार्थकी प्राप्ति नहीं होती है, तेसे थुर अरु सास्त्रमों जे जियारतें शून्य होवे तिसमें आत्मपन्दी प्राप्ति नहीं होती. हे रामछ । जे जियाररूपी नेत्र,र भवन है, मोर्ष देणने है, अरु जियाररूपी नेत्रों जे रहित है, सो अध है. हे रामछ । जेसा जियार क, जे में कवन टों, अरु यह जगत कवन है; अरु धसीकी उत्पत्ति केसी दुर्घ है; अरु धीन केसे होता है; किम प्रकार मन अरु सास्त्रके अनुसार जियार

कर सत्यकों सत्य बन, अइ अमृतकों अमृत बन; नि-  
 सकों अमृत बन्या हे, तिसका त्याग कर, अइ सत्यमें  
 स्थित होय मनीका नाम जियार हे; धर जियारकर आ-  
 त्मपदकी प्राप्ति होवी हे. हे रामछ! विद्यागुरुपी द्वि-  
 दृष्टि निगोडा प्राप्त भई हे, तिमकों मय पदान्धका जान  
 होता हे; जियारमों आत्मपदकी प्राप्ति होवी हे, तिसकों  
 पापें परिपूर्ण होता हे, हिर शुभ अशुभ संसारमें मत्प्रामाण  
 नही होता, ज्योंका त्यो रहता हे. जल्पजग प्राग्ध जग  
 होता हे, तजजग रागीरकी चेटा होवी हे, जल्पजग  
 अपनी छिछा होवे, तजजग रागीरकी चेटा करे, जहुरी  
 रागीरकों त्यागकर केवल शुद्धरूप हो जगता हे; ताते हे  
 रामछ! अज्ञा जियारको आशय कर, संसार समुद्रकों तर-  
 ल; जे कोडि-रोगी होता हे, सो जेता इतन नही क-  
 रता, जेता इतन जियार रहित पुरुष करता हे; जिसकों  
 इष्ट प्राप्त होता हे, मोली जेता इतन नही करता. हे रा-  
 मछ! जे पुरुष जियारते मूय हे, तिमकों सज आपदा  
 आप प्राप्त होवी हे; जेसों सज ननी स्वभावमों समुद्रमें  
 आप प्रवेश करती हे, तेसों अजियारमें सज आपदा आ-  
 य प्रवेश करती हे. हे रामछ! क्रीयका क्रीट होना मो जगता  
 हे, अइ जगके अंक होना मोली जगता हे, अइ आंधरे  
 पीलमें सरप होना सो जगता हे, परंतु जियारते रहित  
 होना नो नुच्छ हे. जे पुरुष जियारते रहित हे, अइ  
 जगमें दोरता हे, सो धान हे. हे रामछ! जियारते  
 रहित पुरुष जडे कष्टों पावता हे, ताते जेक दिनहु नि-  
 जारते रहित नही रहना; जियारसों हड होकर निर्णय र-



हना; जो मैं इवन हो, अरु दृश्य जा है, असा विद्या  
 इहे मलरूप आ भोके जनकउ दृश्यको लागे इना, हे रामछा  
 जो पुत्रप विद्यावान हे सो मसार जोगमें नही गिर  
 जना, अरु मलमें स्थित होना हे, विद्या जल्प गिर  
 होता हे, तज निसर्गे तत्त्वमान होना, तज त ज्ञानमें नि  
 श्चय होना हे विद्यामें स्थित उपसम होता हे, अरु  
 स्थितके उपसममें मज दृश्य नारा होता हे

इति श्री योगवासिष्ठे भुमुस्तु प्रकृत्यु विद्या निरूपण  
 नाम सप्तदशोः सर्गः १४

वशिष्ठोवाच. हे अविद्या राहुने लागे कथां रामछा ।  
 विद्या पुत्रां गतो। राव जवा हे सो परम आनन्ति  
 दुवा हे अरु विनोकीज अथर्वे इरागें वृन्की नाई प्रक  
 जासता हे, हे रामछा! ज्ञान आनन्द अभूतपान विषे  
 नही जाता हे और ज्ञान विनोकीके मज्ज नही  
 होना, तेसा आनन्द मनोपानों होता हे हे रामछा!  
 -धृतिशरूपी गती हे अरु सो लक्ष्मी कमतों मङ्गलाय  
 रती हे और जल्प मनोपक्षी मूर्ति जल्प होता हे, तज  
 धृतिशरूपी गतीका अमान हो जना हे जेसों जीर  
 समुद्र उज्वलता करे माहता हे तेमें मनोपानकी  
 धृति भुगोनिज होती हे हे रामछा! विनोकीका राजकी  
 धृति निहत न जई, तज सो इन्द्रि हे अरु जो नि  
 र्वेन हे और सो मनोपान हे सो मज्जका धृति हे,  
 मनोपान निशकाल नाम हे अनज कही जे अप्राप्त वस्तुकी  
 धृति न करे, अरु प्राप्त होई धृति अनिष्टमें राग जे

न धरे, छिसका नाम संतोष है; संतोष मोक्ष परमपद है; संतोषवान् पुरुष सदा आनंदरूप है; अर्थात् आत्मस्थितिमें तृप्त हुआ है, निराशा और छिन्ना कुछ नहीं रखती। अर्थात् सन्तुष्टता कर तिसका हृद्य प्रयुक्ति हुआ है, जैसे मूर्खके हृद्य रूपे मूर्खमुष्णी कम प्रयुक्ति होता है, तैसे संतोषवान् प्रयुक्ति हो जाता है, जो अप्राप्त जरतु है तिनकी छिन्ना नहीं करता; अर्थात् जो अनिश्चित प्राप्त नहीं है, तिसको पयाराअ कम करके भूलन करता है, तिसका नाम संतोषवान् है, जैसे पूर्णमासिका अंशमा अमृतकर पूरन होता है, तैसे संतोषवानका हृद्य संतुष्टता करके पूर्ण होता है; अर्थात् जो संतोषवान् रहित है, तिसके हृद्यरूपी मनमें सदा दुःख अर्थात् अंतिमरूपी कूल कूल उत्पन्न होते हैं, हे रामछ! जोका अिच संतोषवान् रहित है, तिसको नाना प्रकारकी छिन्ना जैसे समुद्रमें नाना प्रकारके तरंग होते हैं, तैसे उपलब्धी है; सन्तुष्टात्मा परम आनंदित है, तिसको अगतके पदारथमें उन्नोपार्थ अदि नहीं होत, हे रामछ! जैसा आनंद संतोषवानको होता है, तैसा आनंद अष्टसिद्धिके अर्थमें करकेभी नहीं होता; अर्थात् अमृतके पान अिबनेभी नहीं होता, संतोषवान् सदा शांतिरूप है, और महा निर्मल रहता है, छिन्नारूपी - पूर सर्वदा उडतीथी सो संतोषरूपी अरणा कर शांत हो गई है; तिस कारणते संतोषवान् निर्मल है, हे रामछ! संतोषवान् पुरुष सबको प्यारा लगता है, जैसे आंजना परिपक्व कूल सुंदर होता है, अर्थात् सबको प्यारा लगता है, तैसा संतोषवान् पुरुष सबको प्यारा लगता है; अर्थात्

भूति करने लोग है; निम्न पुरुषों सतोष प्राप्त नया है, तिस्रों पद्म लाभ नया है. हे रामछा। महा संतोष है, तदा छद्म नहीं रहती है. अरु सतोषवान लोगमें धन होय नहीं रहता; वह विद्यारात्मा है; सर्वदा आनन्द तृप्त रहता है; जेमें अध पवनके आयेते नष्ट हो जाता है, तेमें मनोके आयेते छद्म नष्ट हो जाती है; अरु जे मनोवान पुरुष है; तिसको ईशता, ऋषीश्वर, सत्य नमस्कार करते है, अरु धन्य धन्य कहते है. हे रामछा। त्वय धर्म मनोको धरेगा, तव्य पद्म राज्या पायेगा.

छतिश्री योगवासिष्ठ मुमुक्षु प्रकृत्यु सतोष निरूपत्यु नाम  
पंचदशः सर्गः १५

वशिष्टोवाच. हे रामछा। अवर जेते कुछ धान वीर्यां किं साधन है, तिनकर आत्मपत्नी प्राप्ति नहीं होती, माध सगकर आत्मपत्नी प्राप्ति होती है, साधमगदूषी अकष्ट है, तिमरा कूल आत्मज्ञान है. तिस पुरुषने कृपणी छिटा करी है, जो अनुभवदूषी इपको पावता है. हे रामछा। जे पुरु। आत्मानन्द रहित है, सो मनमगकर आत्मानन्दो धुरन होते है. अरु अज्ञान करे जे मृत्युको पावता है जो मने सगने ज्ञान पावकर अमर होता है, अरु जे आपदा करे दुष्पी है, जो मने सगकर सपत्नीको पावता है; आपदादूषी कमनका नारा उग्रहारा सत्तमग दूषी अरुकी अरया है; सतसगसो वर आत्म शुद्धि प्राप्त होती है, तिसकर मृत्युने रहित होता है, और सत्य दु जने रहित होता है; अरु परमानन्द प्राप्त होता है. हे रामछा।

मन्त्री मन्त्रीकर धर्मके लक्ष्यमें लानरूपी दीपक जलता है, तिमकर अज्ञानरूपी तम नष्ट हो जाता है; अरु अरु अर्थकों प्राप्त होता है, अहुरी द्विती जोग पदारथकी छवि नहीं रहती, अरु जोधवान होता है; रागते उत्तम पदमें भिगलता है, तेसे कल्य वृत्तके निकट गयेने कछित कलकी प्राप्ति होतो है, तेसे संसार समुद्रके पार उतारनहारे सतजन है; तेमें धीवर नौका करके पार लगता है, तेसे मंतजन शुक्ति करके संसार समुद्रते पार करते है, अरु मोहइती भयका नारा मतका भग पवन है; जिनको देहादिक अनात्मसो स्नेह नष्ट जया है, अरु शुद्ध आत्मविषे लकी स्थिति है, तिसकर तम जये है, अहुरी संसारके छष्ट अनिष्टते लकी मलापमान छुद्धि नहीं होनी, मदा समता जावमें स्थित रहे ते अमे संसार समुद्रके पार उतारनेमें पूर्व तेसे, अरु आपदाइपी बेधीनो बड समित नारा करनहारे है गमछा! मंत जन प्रकाररूप है; तिनके संगते पदारथकी प्राप्ति होती है, अरु ते अपने पुत्रपार्थइपी नेत्रते छिन हुवे है, छिसको पदारथकी प्राप्ति नहीं होनी, जिन पुरपने सत्संगका त्याग दिया है, सो नरकइपी अग्नीमें लकडीकी नाश करेगे; अरु जिन पुरपने सत्संग दिया है, तिनको नरकइपी अग्नीका नारा करनहारा सत्संगइपी भय है; ते गमछा सत्संगइपी संगे है; वने सत्संगइपी गमाका स्नान दिया, ताको अहुरी तप, दान, आदि साधनका प्रयोजन नाही; वह गत्संग करके परम भितिको प्राप्त होनेका है; ताते अरु मज उपाय त्यागकर सत्संगको योजना, तेसे निर्वन भितामन आदिक धनको योजता है, तेसे

सुमुग्धु सत्संगों ज्ञानता है; अध्यात्ममहि तीन तापसों  
 बनना है, तिसकों शीतल उग्नेहाग सत्संग है. जेमें  
 तनी दुष्ट धृष्टी भेषक शीतल होनी है, तेमें सत्संगकर हृद्य  
 शीतल होता है; हे रामछा मोहक्षी वृत्तज नारा करन  
 हाग सत्संगरूप कृदाज है; सत्संग कडे यह पुरुष अ  
 विदानी परकों प्राप्त होता है, जिस परके पापेन ओर पापने-  
 की धृष्टा नही रहनी; ऐसा गजते उत्तम भक्तग है.  
 जेमें सज्ज अपज्जगनने लक्ष्मी उत्तम है, तेमें सत्संग कर्षा  
 सुपने उत्तम है; ताते अपने कृपानके निमित्त सत्संग कर्षना  
 गुमनों योग्य है. हे रामछा ' यह जे यागें मोक्षके द्वारपाल  
 है, मो गुमनों उडे, न पुरुषने धनके साथ प्रीति करी है,  
 मो शीघ्र आत्मपरकों प्राप्त होहिगे, ओर जे धनकी  
 सेवा नही करते मो मोरुनों प्राप्त नही होते. हे रामछा  
 धन यागेंमें अकेहु बहा आता है, तहा तीनो ओरहु  
 आप जते है; बहा समुद्र रहता है, तहा सज्ज नही आप  
 जाती है; तेसे बहा सम आता है तहा मनोप, पित्याग,  
 अर सत्संग ये तीनो आप जते है बहा माधु सगम  
 होता है, तहा मनोप, पित्याग, अर सज्ज ये तीनो आप जते  
 है; बहा वृषभुग्ध रहता है तहा सज्ज पदारथ आप  
 स्थित होते है; अर बहा मनोप आता है, तहा सम  
 पित्याग, सत्संग, ये तीनो आप जते है. जेसे पूर्णमा  
 भोके अद्रमामें गुन ज्वा सज्ज धृष्टी हो जाती है, तेमें  
 बहा मनोप आता है, तहा ओर तीनो आप जते है;  
 अर बहा पित्याग आता है, तहा मनोप, उपसम, अर  
 सत्संग, ये आप रहते है. जेसे अष्ट मन्नीसों कर राज्य

लक्ष्मी आप स्थित होती है, तबसे जहां विचार होता है, वहां ओरभी तीनों आते हैं; ताते हैं रामछा! जहां जागे धक्के होत है, वहां परम बैठ जननो; ताते हैं रामछा! आरो न होही, तो अंकका तो अपश्य आशय करना; जण अक आपेगा, तण आरो आप स्थित होवेगे. मोक्षकी प्राप्ति होनेके यह आर परम साधन है; ओर उपायसो मुक्ति होनेकी नांही. .

### ३श्लोक.

संतोषः परमो लाभः । सत्संगः परमधनं ॥

विचारः परमज्ञानं । शमंच परममुखं ॥ २ ॥

हे रामछा! यह परम कथान कर्ता, सो धन आरो करी संपन है, निसकी अस्वादि स्तुति करते हैं; ताते दंतकों दंत लगाय धनका आशय करके मनकों जशी कर ले. हे रामछा! मनरपी हंसित विचाररपी अंकुरा करके जरा होता है, अर मनरपी जनमें वाचनारपी नही चलती है, तिमके शुभ अशुभ दो किनारे हैं; अर पुरपार्थ करना यह है जो अशुभकी ओरते रोके शुभकी ओर अलाचना; जण अंतर्मुख आत्माके सम्मुख वृत्तिका प्रवाह होवेगा, तण तुं परम पदको प्राप्त होवेगा. हे रामछा! प्रथम तो पुरपार्थ करना मही है जो अविचार रपी धमाधको दूर करना; जण अविचाररपी बैठ दूर होवेगा, तण आपही प्रवाह अवेगा. हे रामछा! दृश्यकी ओर जो प्रवाह चलता है, सो अंधनका कारण है

एव आत्माकी ओर अंतर्मुख प्रवाह होवे, तब मोक्षका कारण होवे स्वयं; आगे जो तेरी धृष्टता होवे सो कर.

धृतिश्री योग वासिष्ठे मुमुक्षु प्रकेशे साध्वसंग निरूपयन्  
नाम षोडशः सर्गः १२

वासिष्ठोवाच- हे रामछा' यह मेरे ज्यन हे सो परम पावन हे; जो भित्तिरवान शुद्ध अधीकागी हे, तिसको यह ज्यन परम जोधिकार कारण हे; जो पुरुष शुद्ध पाव हे, सो यह ज्यनको पावके सोहत हे; ओर ज्यनहू उनको पावके सोभा पावने हे, जेमे जेधके अभावने रारछातमे अंधमा, अर आकारा मोहते हे, तेमे शुद्ध पावमे यह ज्यन सोभने हे; अर नितासु निर्मल ज्यनका महिमा शुनके प्रसंग होना हे, हे रामछा' तूम परम पाव हो, अर मेरे ज्यन परम उचम हे, यह महा गंभावन मोक्षोपावके शास्त्र हे, सो आत्म जोधिकार परम कारण हे; अर परम पावन वाङ्मयी सिद्धता हे; अर सुद्विग पुङ्गाय वाङ्मय हे; अर नाना प्रकारके दर्शित कहे हे; जिनके अद्भुत जन्मके पुन्य आय धिके होने हे, तिनको कल्पवृक्ष मिलना हे, सो इल कर लुके पडता हे; तब तिसको यह शास्त्र अवन होता हे; अर नीत्यको धनका अवन प्राप्त नही होता हे, उसकी वृत्ति धनके अवनमे नही आती हे; जेमे धर्मात्मा राजकी धृष्टता न्याय शास्त्रके अवनमे होवी हे, अर जो पापात्मा राज है, तिसकी धृष्टता नही होवी; हे रामछा' तेसे पुन्य वानकी धृष्टता धिसके अवनमे होवी हे; अर अधमकी धृष्टता नही होवी; जो जोई मोक्षोपावके यह गंभावनका अध्ययन

करेगा, अथवा निष्काम संतके मुझमें अदायुक्त अवन  
 करेगा, अरु आदिते लेकर अंत पर्यंत अेकत्र भाव होकर  
 भिन्नारैगा, तब तिसका संसार ब्रम निवृत्त हो जनेगा.  
 त्से त्से वरीके जननेते सर्पका ब्रम दूर हो जाता है,  
 त्से अद्वैतात्मा तत्के जननेते तिसका संसार ब्रम नष्ट  
 हो जनेगा. सो धंस मोक्षोपायक शास्त्रका अचिस सहस्र  
 श्लोक है, अरु अष्ट प्रकरण है; प्रथम वैराग्य प्रकरण है,  
 मो वैराग्यका परम कारण है. है रामः। मर्यादमें बृत्त  
 नहीं होता, परंतु अदी वर्षा होवे तब तहां बृत्त होता है;  
 त्से अस्तानीका हृद्य मर्यादकी नांछ है, तिनमें वैराग्यभी  
 वृत्त नहीं होता, परंतु यह शास्त्ररूपी जे अदी वर्षा होवे,  
 तिसकर वैराग्यभी बृत्त उत्पन्न होता है; तिनके अेक  
 सहस्र पायमो श्लोक है; तिनके अतंतर सुशुद्ध व्यवहार  
 प्रकरण है तिसमें परम निर्मल अमन है तिसकरके मलीन  
 मणी दुर्ध ताका मार्जन द्विषे उल्लस हो आती है त्से  
 यह अमनते रानीका हृद्य निर्मल होता है; अरु  
 भिन्नारके अथने आत्मपदे पावनेके समर्थ होता है. तिसका  
 अेक सहस्र श्लोक है; तिसके अनंतर उत्पत्ति प्रकरण है;  
 तिसके पंच सहस्र श्लोक है; तिसमें अदी सुंदर कथा  
 दृष्टांत सहित कही है, जिया भिन्नारने जगतका सत्यता  
 भाव मनने असाधमान रहता है; अर्थ यह जे जगतका  
 अत्यंत अभाव जन परता है. है रामः। यह जग-  
 तमें जे मनुष्य, देवता, दैत्य, पर्यंत, नदी, आदि स्वर्गलोक  
 पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, आदि रथावर जगंम  
 जाराता है, सो अस्तान करके है; अरु धंसकी उत्पत्ति



हेमें बाध है; जेमें जेवरीमें मर्ष होता है, अरु छीपमें  
 रूपा होता है, अरु मुँहें छिरनमें बन्ध दिखता है,  
 आङ्गामें तडका दिखता है, और जेमें दुग्ग अद्रमा  
 दिखता है; जेमें अंजन नग्न जाभते है, मनो गज्जकी  
 मृष्टि जाभती है; अरु नःक्षयपुत्र होता है अरु सुभ्र-  
 नमें जूझन होता है समुद्रमें तडग होता है, आङ्गामें  
 नीलता दिखती है; जेमें नौनमें पीते छितारके जूझ  
 पंन अर्धते दृष्ट आते है, अरु आरुके अर्धे अद्रमा  
 धारता दिखता है, और यजमें पूगरी जाभती है, जपिअत  
 नमुने आदि सेकर अमल्य पदाग्र्य जेमें मल्य जासते है,  
 तेमें सभ्य बग्न आङ्गामरूप है; अतान इडे अर्थाङ्ग  
 जासता है; सो अतान इडे उत्पनि दिखती है, अरु  
 छान इडे लीन हो स्वता है, जेमें निद्रामें गुपन मृष्टिकी  
 उत्पत्ति होती है, अरु जमेते निद्रा हो जाती है, तेमें  
 अनिद्या इडे बग्नकी उत्पत्ति होती है; अरु सग्नक,  
 खान इडे निद्रा हो स्वता है, सो अनिद्या इष्टु  
 वन्तुद नाही, सरे अथ्य विदाङ्गाराङ्ग है, सो गुह है,  
 अतन है; परमानद रररूप है, निगमें न बग्न  
 उपजता है, न लीन होता है, ज्योकी त्यो आत्मसत्ता  
 आपने आप सिरे स्थाव है, तिसमें बग्न अस्था है  
 जेसें जीनमें थिन होता है; जेमें पगने पूगिया होती  
 है, अरु इडे थिना जाभती है; तेमें पह मृष्टि मनमें र  
 की है, वास्तवते इष्टु जनी नाही, सभ्य आङ्गाराङ्ग है;  
 सभ्य मित्त अवेदन छिस पररूप होता है, तथ नाना प्रकार  
 ररर बग्न होयें जासता है; अरु सभ्य निधपद होता है

तप्य जगत मिष्ट ज्ञता है; धसि प्रकार जगतकी उत्पत्ति कही  
 है. तिसके अनंतर स्थिति प्रकरण है; तिसमें जगतकी स्थिति  
 कही है; जैसे इंद्रका धनुष आकारारूप है, और अवि-  
 चार करके रग सहित भासता है; जैसे सूर्यकी क्षीरतमें लल  
 भासता है; जैसे ज्वरीमें सर्प भासता है, सो सप्य स-  
 म्यगृष्टि करके निवृत्त होता है; तैसे अज्ञान करके जगतकी  
 प्रतीति होती है, सो मनोराज करके जगत रच लेता है,  
 सो कुछ उत्पन्न हुवा नहीं है; तैसे यह जगत संकल्प मात्र  
 है; जप्य जगती मनोराज है, तप्य जगती उह नगर होता है;  
 जप्य मनोराजका अभाव हुवा. तप्य नगरका अभाव हो  
 जाता है. जप्यजग अज्ञान होता है, तप्यजग जगतकी  
 उत्पत्ति होती है; जप्य संकल्पका लय हुवा, तप्य जगतका  
 अभाव हो जाता है; जैसे इंद्र, अक्षाके पुत्रहुकी इस  
 सृष्टि संकल्प करके स्थित लक्ष, तैसे यह जगतभी है; डोड  
 पदारथ अर्थरूप नांही. हे रामछा ! इस प्रकार स्थिति  
 प्रकरण कथा है; तिसके तीन सहस्र श्लोक है; तिसके वि-  
 चार करके जगतकी सत्यता ज्ञत रहती है; तिसके अनं-  
 तर उपमम प्रकरण है; तिसके पंच सहस्र श्लोक है; तिसके  
 विचारिते अहंततादिक वासना लीन हो जाती है; जैसे  
 सुपनेमें जगते वासना ज्ञत रहती है, तैसे विचार किये-  
 ते अहंतादिक वासना लीन होती जाती है; कहिते जे उसके  
 निश्चयमें जगत नहीं रहता; जैसे एक पुरुष सोया है, ति-  
 सके सुपनेमें जगत भासता है, और उसके निकट जे ज-  
 गत् पुरुष है; तिसके सुपनका जगत आकारारूप है; जप्य  
 आकारारूप हुवा तप्य वासना केसे रहे; जप्य वासना नष्ट

जगत्, वन मनका उपमम हो जाता है, तब देखने मात्र  
 उसकी सग्न येशा होती है, और इसके मनमें अर्थरूप  
 धर्मता नहीं होती; जैसे अजिंजी मूर्ति देखने मात्र होती  
 है, अर्थोकार नहीं होती; तब उसकी येशा होती है, है  
 गमछा! वन मनमें धर्मता नष्ट होती है, तब मनपी  
 निर्वाण हो जाता है, जैसे वेवने रहित धीपके निर्वाण होना  
 है, तैसे धर्मता रहित मन निर्वाण होता है; धर्म प्रकार  
 उपमम प्रकृत है, तिसके अनंतर निर्वाण प्रकृत है; जे  
 शेष है तिसमें परम निर्वाण अर्थन इहे है; अमान  
 इहे अर्थ अर्थ अर्थ सग्न है; सो जियार जिते निर्वाण  
 हो जाता है, जैसे शरद अक्षमें नधके अभावमें शुद्ध  
 आकार होता है, तैसे पुरुष जियार इहे निर्वाण होता है,  
 है गमछा! अकाररूपी पिराय है, सो जियार इहे  
 नष्ट होता है; जेती इहे धर्मता सूची है, सो निर्वाण  
 हो जाती है, जैसे पथरकी शिवा दुरनेते रहित होती है  
 तैसे सानवान धर्मता रहित होता है; तब जेती इहे  
 जगतकी जगता है, सो धर्मको होय सुकती है; जे इहे  
 करना है सो कर सुकता है, है रामछा! शरीर होत ही  
 उह पुरुष अशरीरी हो जाता है, अर्थ नाना प्रकारका  
 जगत उसको नहीं जासता, जगतको जतके वह रहता  
 है, अहं तत्पारिक तमरूप जगत तिसको नहीं जासता है;  
 जैसे मूर्तिके अर्थकार दृष्ट नहीं आनता, तैसे उमको जगत  
 दृष्टिमें नहीं आता, अर्थ जैसे अडे पदको प्राप्त होता है,  
 जैसे सुनेर पंतेके किसी डौनमें इयल होता है, तिसके पर  
 जेरा स्थित रहते है, तैसे अहंके किसी डौनमें जगत है.

अर् अक्षरूपी लैरि तिसपर स्थित हे; उह पुरुष अमित्य  
 चिन्मात्र हे, रूप, अवलोकन, मन, तिमका आकाररूप  
 हो जाता हे, तिस पदकों यह प्राप्त होता हे, तिस पदकी  
 विपत्ता योग्य अह्मा, विष्णु, इद्र समर्थ नाही; ऐसे  
 अनुपमताके सदृश कौडि नाही हे.

धृतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे पद प्रकरणे विव-  
 रणुं नाम सप्तदशः सर्गः १७

परिशोवाय. यह परम उत्तम वाक्य हे, उमकों नि-  
 चारनहारा उत्तम पदकों प्राप्त होता हे; ऐसे उत्तम जे-  
 तमें उत्तम जीव जोपेते उत्तम कृष्णकी उत्पत्ति होती हे,  
 तेसे धृतिकों निचारनहारा उत्तम पदकों प्राप्त होता हे; यह  
 वाक्य डेसे हे जे शुद्धितपूर्वक वाक्य. और शुद्धिते रहित  
 वाक्य आर्षणी होली, तो तिनका त्याग करिये; और शु-  
 द्धितपूर्वक वाक्यका अंगीकार करिये, हे रामछ! जे अह्माके  
 अमन शुद्धिते रहित होली, तन् तिनकोंनी सूजे तृणकी  
 नाथ त्याग करिये; अर् आनकके अमन शुद्धित पूर्वक होली,  
 तो तिनका अंगीकार करिये; और पिताके रूपका आरा नल  
 होवे, तो उसका त्याग करिये, और निकट मिष्ट नलका रूप  
 होवे, तन् तिनका पान करिये; तेसे जडे अर् छोटेका नि-  
 चारे न करिये; शुद्धित पूर्वक अमनका अंगीकार करना. हे  
 रामछ! जे अमन सन् शुद्धित पूर्वक हे, अर् जोपके प-  
 रम भग्न हे; जे पुरुष अक्षय होपके इस शास्त्रकों आ-  
 दिते अंत परंत पदे अथवा पंडितसों अवन करके नि-  
 चारे तन् तिसकी अहि संस्कारित होवे; प्रथम जैराग

प्रसरणके नियारैगा, तब जैगग उपलैगा; जेते  
 कु बुगलके रमनीय जोग पदार्थ है, तिसके जियस  
 बनैगा, अरु डिमी पदायकी पाज न करैगा, जण जो  
 मने वैगग होता है, तब सातिरूप आत्मतत्वमें प्रतीति  
 होती है, जण जियार उके अरुद्धि ससभगित होयेगी, तब  
 साखडा सिद्धात अरुद्धिमें आप स्थित होयेगा; और ससारके  
 विडा गृहिन अरुद्धि निर्मल होयेगी. जेमें सगद कानमें  
 जाके अभाव दुवेने आडारा सण औरते मरुता होता है,  
 तेमें अरुद्धि निर्मल होयेगी; अरुद्धी आधिसाधिसी पीडा उ  
 सेम न होयेगी. हे रामछ! ज्यों ज्यों जियार दृढ  
 होयेगा, त्यों त्यों सातात्मा होयेगा, ताते जेते अरुद्धि अमा  
 गे बनत है, तिनका त्याग उर धंस साखडे पागवार  
 जियारिते येतन्य सजा छिद्य होयेगी, त्यों त्यों जोग मोहा  
 रित विडाअरी सजा नष्ट होयेगी, ज्यों ज्यों सुख छिद्य होवे  
 है, त्यों त्यों अंधकार नष्ट होता है; तेमें जियार नष्ट  
 होयेगा तब तिस पक्षी प्राप्ति होयेगी, जिसके पावे म  
 सारके क्षोभ मिट जनये, जेमें सगदकानमें जेध नष्ट  
 हो जनत है, तेमें ससारके क्षोभ मिट जनते है. हे  
 रामछ! जानवान पुइपके ससारके गग होर जेधी  
 नाही सकते, जेमें जिस पुरपने कणय पेख्या होम, ति  
 सजों ज्ञान जेध नही सकते; जेसजों जोगकी धरुता नही  
 रहती, जण जियारजोग विद्यमान आप रहे, तब जिनको  
 जियारजुत जनके अरुद्धि गृहिन नही कृती अर्थे जनकर  
 जाहिर नही निकलती, अरर आत्मामेध स्थित रहती है,  
 जेमें पतिव्रता स्त्री अपने आप पुरने जाहिर नही नि

इसती, तेसें ताकी बुद्धि अंतरते आहिर नही निकसती।  
 हे रामछा ! आहिरते तो उहपी प्रकृति जन्मकी नांछे दृष्ट  
 आते हे, जे कछु अनिच्छित प्राप्त होते हे, तिसको सु-  
 गतता हुवा दृष्टिमें आता हे; और अंतरते उसको राग  
 दोष नही डरता। हे रामछा ! जेता कछु जगतकी उ-  
 त्पत्ति प्रलयका क्षोभ हे, सो जानवानको नष्ट नही कर रा-  
 कता; जेसे मित्रकी जेलीको अंधी अणाय नही राकती,  
 तेसें उसको जगतका दुःख अणाय नही राकता; अरु सं-  
 सारकी ओरते नड हो जाता हे। वृश्चकी नांछे गंभीर  
 हो जाता हे, अरु पर्वतकी नांछे स्थिर हो जाता हे,  
 अरु चंद्रमाकी नांछे शीतल हो जाता हे। हे रामछा !  
 सो आत्मज्ञान करके जेसें पदों प्राप्त होता हे, तिसके  
 पायेते और कछु पावने जोग नही रहता; आत्मज्ञानका  
 कारन यह मोक्षोपाय साध्य हे, जमें नाना प्रकारके दृष्टांत  
 कहे हे। जे वस्तु परिछिन होवे, अरु देखनेमें न आछ  
 होछ, तिसका न्याय देखनेमें होवे; तिसको दृष्टांतकर विवि  
 पूर्वक समुदाये उसका नाम दृष्टांत हे। हे रामछा !  
 यह जगत कार्य कारणरूप हे; अरु आत्मा जगतकी ऐकता केमें  
 होवे; ताते जे में दृष्टांत कहोंगा, तिसका ऐक अंश अंगीकार क-  
 रना; सभ देशकर अंगीकार नही करना। हे रामछा ! कार्यकारनकी  
 कल्पना भूर्जन करी हे, तिसको निषधने निमित्त में सुपन दृष्टांत  
 कहे हो, सो समुजनेते तेरा मनका सराय नष्ट हो जावेगा।  
 द्रग अरु दृश्यका निद मूरजकों भासता हे; तिसके दूर  
 करनेके अर्थ सुपन दृष्टांत कहोंगा, तिसके विचारने करी  
 मिथ्या विभाग कल्पनाका अभाव होता हे। हे रामछा !

येभी ३ पनाडा नारा उर्षा यह नग भोक्षु उपाय शास्त्र हे जे  
 पुरन आत्ति अत परंत निम्नारेगा मो असकारी होयेगा,  
 जे यह पतायेके वननहाग होये, अरु इसके वारपात्र नि  
 यारे, तम तिसके दृश्य जम नारा पाये, छम शास्त्रके नि  
 यार भिरे अवर तिसी तीर्थ, तम रात आत्तिकी अपेक्षा  
 नहीं ब्रह्म स्थान होये तहा भेदे, जेगा भोगन ग्रह  
 भिषे होये तेमा उरे, अरु वाग्दार इसका निम्नार के  
 तम अस्तान नट हो जये, अरु आत्मपदकी प्राप्ति होये  
 हे रामछ। यह शास्त्र प्रकाररूप हे, जेमें अधकार भिषे  
 पताये नहीं लिखता, अरु दीपके प्रकारे कयी अक्षु सहित  
 देयता हे तेमें शास्त्ररूपी दीपक निम्नाररूपी नेत्र सहित  
 होये, तम आत्मपदकी प्राप्ति होये हे रामछ। आत्म  
 ज्ञान निम्नार भीता वर आप कयी प्राप्त नहीं होता जन्म  
 निम्नार कयी हर अग्र्यास किये तम ज्ञान होता हे ताते  
 भोक्षु उपाय जे परम पावन शास्त्र निम्नके निम्नारते न  
 भत जम नट हो जयेगा जगतके देयते देयते जगत  
 जाव मि जयेगा जेसे सर्पकी भूर्नि लिपी होती हे  
 अरु अविन्मार करके निम्नते जम पाता हे जन्म निम्नार  
 कयी हे भीषे तम सर्प जम मिट वता हे सा सर्पका आ  
 का दृष्ट आनता हे परतु इसका जम मिट वता हे  
 तेसे यह जगत जम निम्नार किये नट हो वता हे अरु  
 जम भरनका जम नहीं रहता हे रामछ। जम भर  
 नका जवनी जाडा दु ज हे परतु इस शास्त्रके निम्नारते  
 नट हो वता हे जिनहनने इसका निम्नार लाग्या हे सो  
 भातके जम विषे क्रीट होयेगे, अरु कहेते नहीं दूरेगे अरु

पियारमान पुत्र्य आत्मपदों प्राप्त होवेगा; अरे जो अष्ट सा-  
 नो अनंत है तिसके अपना रूप भासता है, कोडि पदार्थ आत्मार्थ  
 भिन नहीं भासता; जैसे जिसके जलका ज्ञान हुआ है ति-  
 सके लहरी आवर्त सभ जलरूपही भासता है तेसे ज्ञानवा-  
 नके सभ आत्मरूप भासता है, अरे इंद्रियकुंडे धृष्ट अनिष्टकी  
 प्राप्तिमें धृष्टा होय नहीं करता, सदा अके रस भनके संकल्पते  
 रहत सांनरूप होता है, जैसे मंदरायल पर्वतके निकसेते  
 क्षीर समुद्र सांतिके प्राप्त भया, तेसे संकल्प विकल्प रहित  
 यह पुत्र्य सांतिरूप होता है, हे रामछा! अवर जो तेज  
 होता है, सो दाहाक होता है; परंतु ज्ञानरूपी तेज जिस  
 घट विरे उदय होता है, सो शीतल सांतिरूप होता है,  
 अहुरी तिम जिये संसारका विकार कोडि नहीं रहता,  
 जैसे कजियुग विषे शिआवारा तारा उदय होता है, सो  
 कजियुगके अभाव हुवे नहीं उदय होता; तेसे ज्ञानवानके  
 अिचमें विकार उत्पन्न नहीं होता, हे रामछा! संभार  
 लभ आत्माके प्रमाद करी उत्पन्न होता है, सो आत्मसा-  
 नके प्राप्त भये मन भिना सांत हो जाता है, कूल पत्र  
 काउल्लेतेभी कछु जतन होता है, परंतु आत्माके पावनेमें  
 कछु जतन नहीं होता; अहिनो जो ओधरूपी ओधही करके  
 जनता है, हे रामछा! जो जनने मात्र ज्ञान स्वरूप  
 है, तिममें स्थित होनेका क्या जतन है; आत्मा शुद्ध  
 अद्वैतरूप है; अरे जगत लभ मात्र है, जो पूर्व अवर  
 पियार जिये जिसकी सत्यता न पाधिये तिसके लभ मात्र  
 अनिये, अरे पूर्व अवर पियार जियेते सत्य होये तिसका  
 रूप अनिये; सो धस जगतका सत्यता आदि अंत विषे



नांही है, ताने सुपनवन है; जेमें सुपन आदि अंतमें  
 छु है नही, तेमें लक्षणभी आदि अंतमें नही है ;  
 ताने लक्षण सुपन दोनो वृत्त है, हे रामछ । यह पाषां  
 नामकी वनता है; जे आदि अंतमें लिमकी सत्यता  
 न पाछि, सो सुपनवन है; जे आदिभी न होत अर  
 अंतभी न रहे, तिमकों मध्यमेंभी अमल वनिषे; तिम  
 षिषे यह दृष्टांत कहे है:— मंडल्य पुरीवन, ध्यान नगरकी  
 नांछ, सुपन पुरीकी नांछ, वर भाष करे जे उपलता है  
 तिमकी नांछ, ओषधीते उपलकी नांछ; छसि पदारथकी  
 सत्यता न आदि होती है, न अंतर होती है; अर  
 मध्यमें जे जासता है मोभी अम भाष है तेसे यह लक्षण  
 अकारन है; अर कार्य कारन जाव मंमंथमें जासता है,  
 तो कार्य कारन लक्षण जाव, अर आत्म सत्ता अकारन है;  
 लक्षण भाकार है, अर आत्मा निगाकार है, छग लगतका  
 दृष्टांत जे आत्मा षिषे देआंगा तिसका वृत्त अेक अंश गहन  
 करना, जेमें सुपनकी मृष्टि होती है, तिसका पूर्व अपर जाव  
 आत्मगत षिषे मिश्रता है, कहेंते जे अकारन है, अर  
 मध्य जावका दृष्टांत नही मिश्रता, कहेंते जे उपमेव  
 अकारन है; तो तिसका छस समान दृष्टांत उमें होवे ?  
 ताते अपने बोधके अर्थ दृष्टांतका अेक अस गृहन करना,  
 हे रामछ । जे नियारणान पुरूप है, सो अर अर  
 शास्त्रके अवन करे सुप्नबोधके अर्थ दृष्टांतका अेक अंश  
 गृहन करते है, हे रामछ । तिमकों आत्मगतकी प्राप्ति  
 होती है, कहेंते जे सार साहक होते है; अर जे अपने  
 बोधके अर्थ दृष्टांतका अेक अस गृहन नही करते, अर

वाह करते है, तिसकों आत्मनत्वकी प्राप्ति नहीं होती; ताँते  
 दृष्टांतका अेक अंस गृहन करना, सर्व भाव करके दृष्टांतकों  
 नहीं मित्रावना अरु पृथक्कों देखी करी तर्क नहीं करना.  
 अेक अंस दृष्टांतका आत्मबोधके निमित्त सारभूत ग्रहन  
 करना. जैसे अंधकारमें पधार्य पख्या होवे, सो दीपके  
 प्रकाससो देख लेना, जे दीपके साथ प्रयोजन है; अोर  
 अेसो नहीं कहना जे दीपक किसका है, अरु तेल जाती केसा  
 है, अरु किस स्थानका है; दीपकका प्रकासही अंगीकार क-  
 रना; तेसो अेक अंस दृष्टांतका आत्मबोधके निमित्त अं-  
 गीकार करना. हे रामछ ! जिस करी वाह् अर्थ सिद्धि  
 होवे, तिसका त्याग करना; जे अयन अनुभवको प्रगट करे  
 तिसका अंगीकार करना. जे पुरुष अपने बोधके निमित्तै  
 अयनकों गृहन करता है, सोई अष्ट है; अरु जे वाहके  
 निमित्त ग्रहन करता है सो योगसुंय है; उह अर्थकों  
 सिद्ध नहीं करता; जे कोउ अभिमानकों से करी कहता है,  
 सो हस्तिकी नाँह सिरपर भाँठी डारता है, तिसका अर्थ  
 सिद्ध नहीं होता; अरु जे अपने बोधके निमित्त अयन-  
 कों गृहन करता है, अरु जियार करी तिसका अभ्यास क-  
 रता है, तय उह आत्मा शानिकों पावता है, हे रामछोँ  
 आत्मपद पावने निमित्त अपरयमेव अभ्यास रहिता है;  
 जय राम, जियार, संतोष, अरु संत समागम करी बो-  
 धकी प्राप्ति होवे, तय परम पदकों पावता है, हे रामछ !  
 जिसका दृष्टांत कहता है, सो अेक हेरा से करी कहता है,  
 सर्व मुष ग्रहने करी अण्डताका अभाव होय जाता है; अरु  
 जे सर्व मुष दृष्टांत मुषकों जनिवे, सो सत्यरूप होता है, अ-

ते तो नहीं, आत्मा मय रूप है धर्मकारने रहित शुद्ध में प  
 है निरुद्धे निष्कारने निमित्त रूप मग्न बगलका दृष्टात के लें  
 शक्ति, यह बगलका लें दृष्टात रहता है जो एक असा  
 र्क कहता है, अरु बुद्धिमानभी दृष्टाते एक असा  
 र्क कहते है जो अट पुरा है जो अपने जोधके नि  
 मित्त भाग्ये गृहन करते है अरु निःसाक्षुधेभी वही  
 रहिता है, जो अपने जोधके निमित्त सारे गृहन करे,  
 अरु पवन करे, जैसे सुधादिनि आवतपाक आप रात  
 होनहीं, ता जोवन करनेका अर्थवत है, अरु उसकी  
 उत्पत्ति अरु स्थिति। वाक करनेका अर्थ है है रामछा  
 वन में है जो अनुभवके अर्थ करे अरु जो अनु  
 भवके अर्थ न करे निःसाका त्याग करना जो अंका वाक्य  
 होये अरु अत्मअनुभवके अर्थ करे निःसाका गृहण करना  
 अरु अन्तुष्ट के अर्थ जोके अर्थ अनुभवके अर्थ न  
 करे निःसाका त्याग करना अल्पवग विद्यामें नदी पाया,  
 तमनग विद्या अल्प है विद्यामका नाम रूप है  
 अल्प विद्यामकी प्रति अर्थ तम अल्प राति होती है,  
 है रामछा जो रूप अल्प पुरा है निःसाका सुति  
 श्रुति अरु अल्प करने करी अयोग्य सिद्धि कछु नही  
 होता अरु न करने करी कछु प्रतिपाय नदी होता अर्थ  
 होये जाये अर्थ होये अरु होये जाये विद्या होये निःसा  
 कर्षण कछु नही अर्थ पुरा ससार अन्तुष्टे पायी हुवा  
 है है रामछा। उपभोगों उपमा करी बनना है, जो  
 एक असा र्क गृहन करी बनता है तम जोधकी राति  
 होती है, अरु जो जोधके रहित है, जो सुक्तिों प्राप्त

वाह करते है, तिसकों आत्मतत्वकी प्राप्ति नही होती; ताते  
 दृष्टांतका अेक अंस गृहन करना, सर्वे जाच करके दृष्टांतकों  
 नही भिन्नायना अरु पृथक्कों देखी करी तर्क नही करना.  
 अेक अंस दृष्टांतका आत्मबोधके निमित्त सारबूत ग्रहन  
 करना. जैसे अंधकारमें पदार्थ पख्या होवे, सो दीपके  
 प्रकाससों देख लेना, जे दीपके साथ प्रयोजन है; अरु  
 जैसे नही कहना जे दीपक किसका है, अरु तेय जाती केसा  
 है, अरु किस स्थानका है; दीपका प्रकासही अंगीकार क-  
 रना; तेसे अेक अंस दृष्टांतका आत्मबोधके निमित्त अं-  
 गीकार करना. हे रामछ ! जिस करी वाक् अर्थ सिद्धि  
 होवे, तिसका त्याग करना; जे अमन अनुभवकों प्रगट करे  
 तिसका अंगीकार करना. जे पुरुष अपने बोधके निमित्तै  
 अमनकों गृहन करता है, सोई अेष्ट है; अरु जे वाहके  
 निमित्त ग्रहन करता है सो योगसुंय है; उह अर्थकों  
 सिद्ध नही करता; जे कोउ अभिमानकों ले करी कहता है,  
 सो हरितकी नाई सिरपर नांठी डारता है, तिसका अर्थ  
 सिद्ध नही-होता; अरु जे अपने बोधके निमित्त अमन-  
 कों गृहन करता है, अरु जियार करी तिसका अभ्यास क-  
 रता है, तय उह आत्मा रातिकों पावता है. हे रामछ !  
 आत्मपद पावने निमित्त अपश्यमेव अभ्यास अहिता, है;  
 जय सम, जियार, संतोष, अरु संत समागम करी बो-  
 धकी प्राप्ति होवे, तय परम पदकों पावता है. हे रामछ !  
 जिसका दृष्टांत कहता है, सो अेक दश ले करी कहता है,  
 सर्वे सुख कहने करी अअंडताका अभाव होय जता है; अरु  
 जे सर्वे सुख दृष्टांत सुख्यों जनिवे, सो सत्यरूप होता है, अ-

नेगे नहीं; आत्मा मन्त्ररूप है; काँकारने रहित शुद्ध चैतन्य  
 है; जिसके निष्पावने निमित्त शरीर का मज्जा ब्रह्मलोक दर्शन के  
 लिये; वह ब्रह्मलोक को दृष्टाव इहवा है सो ओं अंश  
 ही इहवा है; अरु बुद्धिमानभी दर्शनेके ओं अंशों  
 मूल करने है, जो ओं पुराण है सो अपने जोषके नि  
 मित्त शरीरों मूल करने है, अरु जित्तानुकोभी वही  
 रहित है, जो अपने जोषके निमित्त शरीरों मूल करे,  
 अरु पाद न करे, तेमे क्षुधापके आनन्दपाद प्राप्त  
 होवही, तब जोषन करनेका प्रयोग है; अरु जोषी  
 उपरि अरु स्थितिका पाद करना पर्य है, है रामछाँ  
 पाव मोक्ष है जो अनुभवके प्रगट करे; अरु जो अनु  
 भवके प्रगट न करे तिसका त्याग करना, जो ओंका वाच्य  
 होये अरु आत्ममनुभवके प्रत्यक्ष करे तिसका मूल करना,  
 अरु परमेश्वर वेद पाद होये ओं अनुभवके प्रगट न  
 करे तिसका त्याग करना, ब्रह्मलोक विश्रामके नहीं पाव,  
 तमब्रह्म विश्राम करेय है, विश्रामका नाम तूर्णपद है;  
 तन्म विश्रामकी प्राप्ति जोष तब अक्षय साति होती है,  
 है रामछाँ जो तूर्णपद सफल पुराण है, तिसका मुक्ति  
 स्मृति, उक्त कर्मदुके करने करी प्रयोगन सिद्धि कछु नहीं  
 होता, अरु न करने करी कछु प्रतिपाद नहीं होता, सर्वह  
 होय जाये विरह होये, अस्त होये जाये विरह होये, तिसका  
 करेय कछु नहीं, उह पुराण संसार ममुद्रते प्राप्ति दुवा  
 है, है रामछाँ उपरि ओंका उपमा करी बनना है; सो  
 ओं अंशों मूल करी बनना है, तब जोषकी प्राप्ति  
 होती है; अरु जो जोषते रहित है, सो मुक्तिके श्रेष्ठ

नहीं होता, वह अर्थ वाद करता है. हे रामछा! शुद्ध स्वरूप  
 आत्म सत्ता जिसके अविषे विराजमान है, तिसको त्याग  
 करी अवर विक्षय उदावता है सो योगयंत्र है अरु  
 मूरख है. हे रामछा! जो अर्थ प्रत्यक्ष है, सो प्रमान  
 मानने योग है; अवर जो अनुमान, अर्थापत्ति; आदि  
 प्रमान सो तिसकी सत्ता प्रत्यक्ष करी होती है. जैसे सप  
 नदीका अधिष्ठान समुद्र है, तैसे सप प्रमानहुका अधि-  
 स्थान प्रत्यक्ष प्रमान है; सो प्रत्यक्ष क्या है, सो अवन करहु.  
 हे रामछा! यक्षरूपी ज्ञान संमत संवेदन है, तिस अक्ष करके  
 विद्यमान होता है, तिसका नाम प्रत्यक्ष प्रमान है; तिन  
 प्रमानहुको विषय करनेद्वारा ज्ञप हैं; अपने वारतवस्वरूपके  
 अज्ञान करी अनात्माइपी दृग्प जनी है; तिसविषे अहं-  
 कृति करके अभिमान जया है. अभिमान सप दृग्प है,  
 ताते हेयोपादेय ज्ञदि जर्ध है; अरु राग दोष करके पंग्या  
 जलता है; आपकों कर्ता मानी करी जहार मुष्पी परधा  
 जरकता है. हे रामछा! जप विचार करके संवेदन अंतर्मु-  
 षी होवे, तप आत्मपद प्रत्यक्ष होता है, अरु निज जा-  
 वकों प्राप्त होता है, प्रधन जाव नहीं रहता; शुद्ध रातिकों  
 प्राप्त नहीं होता. जैसे सुपनेते जगते सुपनका शरीर अरु  
 दृश्य जम नष्ट हो जाता है; तैसे आत्माके प्रत्यक्ष हुवेते  
 सप जम मिट जाता है; अरु शुद्ध आत्मसत्ता जासती है.  
 हे रामछा! यह जो दृश्य अरु दृष्टा है, सो मिथ्या है; जो  
 दृष्टा है सो दृग्प होता है, अरु जो दृश्य है सो दृष्टा होता है,  
 सो यह जम मिथ्या आकारा रूप है. जैसे पवनमें स्पंद  
 शक्ति रहती है, तैसे आत्मामें संवेदन रहती है, जप

भवेत्तु संदर्शय होगी है, तब दृश्य रूप होकर स्थित होगी है. जैसे सुपनेमें अनुभव मत्ता दृश्यरूप होकर स्थित होती है, तैमें यह दृश्य है: तब मय आत्म सत्ता है, जैसे विद्या की आत्मपदों प्राप्त होतु. अरु जे जैसे विचार करके आत्मपदों प्राप्त हो सके, तब अहंकार के विषय पुरना है तिसका अभाव कगे; पाठि जे शिव रहेगा सो शुद्ध बोध आत्म सत्ता है, ज्य शुद्ध बोधों तुम प्राप्त होतुगे, तब जैसे भेदा पडी होगिगी. जेमें कस्कीकी पूतरी संवेदन बिना भेदा कगी है, तैमें देहपों पूतरीका फालतहाग मतर्षी भवेदन है, तिस बिना पडी भोगी; परंतु अहंकारका अभाव होवेगा; तबे कस्तन कृ: तिस पर पापने। अगारा कगे, जे नित्य शुद्ध साधक है. है रामछ। अरु जैव गन्दको लाग करी अपना पुरपार्थ कगे, अरु आत्मपदों प्राप्त हेतु. केके पुरपार्थमें मुग्धा है मो आत्म पदों प्राप्त होता है, अरु जे नीच पुरपार्थका आश्रय करेता है मो नभा समुद्रमें डुगता है.

इति श्री योगवासिष्ठि मुमुक्षु प्रकण्ठे दृष्टान्त प्रभाष्यु  
नाम अष्टादशः सर्गः १८।

वशिष्टोवाच. हे रामछ। ज्य सतमय करके यह पुरप  
शुद्ध बुद्धि करे तब आत्मपद पापनेगे समर्थ होने; प्रथम  
सत्मेय यह है — जिनाकी भेदा सास्त्रदुके अनुसार होवे  
तिसका भंग करे; तिसके अलङ्कारो ह्य निषे धरे; अङ्गी  
महा पुरपदुके मम, सोप आदिके अलङ्कार आश्रय करे; सम  
सतोषादिके की खाने उपजता है. जैसे भेदक करी अंत

उपजता है; अरु अंन करी जगत होते है; अरु जगतहुतें  
 भेध होता है; तेसैं सम संतोषणी है; रामादिक गुन अरु  
 आत्मज्ञान परस्पर होता है; रामादिक गुन करी ज्ञान  
 उपजता है, अरु आत्मज्ञान करी रामादिक गुन आपसियत  
 होते, है. तेसैं जडे ताल करी भेध पुष्ट होता है, अरु  
 भेधकरी ताल पुष्ट होता है; तेसैं रामादिक गुन करी आत्म  
 ज्ञान होता है, अरु आत्मज्ञानतें रामादिक गुन पुष्ट होते है;  
 जेमें पियारे करेसैं सम संतोषादिक गुनोका अभ्यास करहु,  
 तब शीघ्रही आत्मतत्वको प्राप्त होवेगा. है रामछ ! ज्ञानवान  
 पुरुषको रामादिक गुन स्वाभाविक आप प्राप्त होते है; अरु  
 जिमारीको अभ्यास करेसैं प्राप्त होते है: अरु जेमें धान्यकी  
 पाजन स्त्री करती है, उंवे राध करती है, जिस करी पंछी-  
 हुको उडावती है; जण हंस प्रकार पाजना करवी है, तब  
 इलको पावती है; तिमकरी पुष्ट होवी है; तेसैं सम संतो-  
 षादिकके पाजने करी आत्मतत्वकी प्राप्ति होती है. है रामछ!  
 हंस मोक्ष उपाय शास्त्रको आदितें ले करी अंतर्पर्यंत पियारे,  
 तब ध्याति निवृत्त होवे. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सर्व पुरु-  
 षार्थ कर सिद्ध होते है; परंतु यह मोक्ष उपाय शास्त्रका परम  
 कारण है, जे शुद्ध बुद्धिमान पुरुष हंसको पियारेगा, तिसको  
 शीघ्रही आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी, तातें हंस मोक्ष उपाय  
 शास्त्रका जसी प्रकार अभ्यास करे.

धृतिश्री योगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरले आत्मप्राप्ति वर्णनं  
 नाम अष्टोत्तराशितमः सर्गः १६.

सुमोक्षयं योगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणं.